A Daily News Magazine
भोपाल
शुक्रवार, 19 दिसंबर, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 109, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

देशहित में नए गठबंधन गढ़ने की रणनीति

नीरज कुमार दुबे

देखा जाये तो पश्चिम एशिया इस समय उबाल पर है। गाज़ा संकट, ईरान-सऊदी समीकरणों में उतार-चढ़ाव, अमेरिका की प्राथमिकताओं में बदलाव और सऊदी अरब-पाकिस्तान और अमेरिका के नए रक्षा समीकरण का उभरना भारी उथल-पुथल की तरह है।

युद्ध के धुएँ और वैश्विक अनिश्चितताओं के इस दौर में भारत की विदेश नीति अगर किसी एक शब्द में परिभाषित होती है, तो वह है रणनीतिक स्पष्टता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जॉर्डन, इथियोपिया और ओमान की यात्रा इसी स्पष्टता का ठोस प्रदर्शन है। यह यात्रा बदलती वैश्विक ध्रुवीयता में भारत के हितों को सुरक्षित करने की एक सधी हुई चाल है। यह एक ऐसा रणनीतिक कदम है जो आने वाले वर्षों में भारत की ऊर्जा, खाद्य, समुद्री और भू-राजनीतिक सुरक्षा की रीढ़ बनेगा।

देखा जाये तो पश्चिम एशिया इस समय उबाल पर है। गाज़ा संकट, ईरान-सऊदी समीकरणों में उतार-चढ़ाव, अमेरिका की प्राथमिकताओं में बदलाव और सऊदी अरब-पाकिस्तान और अमेरिका के नए रक्षा समीकरण का उभरना भारी उथलपुथल की तरह है। ऐसे में भारत का जॉर्डन और ओमान की ओर बढ़ना बताता है कि नई दिल्ली अब प्रतिक्रियावादी नहीं, बल्कि एजेंडा-सेटर है। मोदी सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि भारत किसी एक धुरी पर निर्भर नहीं रहेगा, वह अपने विकल्प खुद गढ़ेगा।

मोदी के तीन देशों के दौरे में जॉर्डन पहला पड़ाव था और यह चयन ही बहुत कुछ कह देता है। हम आपको बता दें कि पश्चिम एशिया में जॉर्डन एक संतुलनकारी शक्ति है। वह कट्टरपंथ के विरुद्ध ढाल और संवाद का सेतु है। भारत के लिए जॉर्डन केवल कूटनीतिक मित्र नहीं, बल्कि खाद्य सुरक्षा का रणनीतिक स्तंभ भी है। फॉस्फेट और पोटाश जैसे उर्वरकों के बिना भारत की कृषि का आगे बढ़ना मुश्किल है। जॉर्डन इंडिया फर्टिलाइज़र कंपनी (JIFCO) जैसे उपक्रम इस बात का प्रमाण हैं कि मोदी सरकार संसाधन सुरक्षा को भाषण नहीं, संस्थागत रणनीति मानती है। दोनों देशों के बीच $ 2.75 अरब का द्विपक्षीय व्यापार और 2030 तक $ 5 अरब का लक्ष्य दिखाता है कि यह साझेदारी अब प्रतीकात्मक नहीं रही। मोदी की जॉर्डन यात्रा के दौरान हुए करार और आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई को वहां की सरकार का मिला जोरदार समर्थन तथा क्राउन प्रिंस का खुद मोदी को अपनी कार में लेकर जाना दर्शाता है कि मोदी की यात्रा कितनी सफल रही।

वहीं मोदी की इथियोपिया यात्रा को देखें तो यह रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत निर्णायक है। अफ्रीकी संघ का मुख्यालय, ब्रिक्स का सदस्य और ग्लोबल साउथ की धड़कन, इथियोपिया में 2011 के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की यह पहली यात्रा है। देखा जाये तो यह देरी नहीं, बल्कि सही समय पर किया गया दांव है। दोनों देशों के बीच $550 मिलियन का व्यापार, भारतीय फार्मा की मजबूत मौजूदगी और क्षमता निर्माण में भारत की भूमिका दिखाती है कि नई दिल्ली अफ्रीका को बड़ा साझेदार मानती है। यह चीन के ऋण-जाल मॉडल के ठीक उलट सम्मान, प्रशिक्षण और साझा विकास का रास्ता है।

साथ ही मोदी की ओमान यात्रा भारत की समुद्री रणनीति का निर्णायक स्तंभ है। दुक्म (Duqm) बंदरगाह में भारत की बढ़ती मौजूदगी, होरमुज़ जलडमरूमध्य से बाहर एक वैकल्पिक लॉजिस्टिक हब, यह सब भारत की इंडो-लिटरल स्ट्रैटेजी का हिस्सा है। भारत-ओमान CEPA का प्रस्तावित हस्ताक्षर इस यात्रा का सबसे ठोस आर्थिक परिणाम होगा। देखा जाये तो 95 प्रतिशत टैरिफ लाइनों पर शुल्क-मुक्त पहुँच और 98 प्रतिशत तक भारतीय वस्तुओं को राहत, एक रणनीतिक व्यापार की तरह है। ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन, उर्वरक, तकनीक और खाद्य सुरक्षा, हर मोर्चे पर भारत अपनी शर्तों पर आगे बढ़ रहा है। दोनों देशों के बीच $10.61 अरब का व्यापार जल्द ही $20 अरब की ओर बढ़े, यह केवल आंकड़ा नहीं, भरोसे की मुद्रा है।

हम आपको यह भी बता दें कि इस पूरी यात्रा की बेहद शक्तिशाली धुरी हैं भारतीय प्रवासी। ओमान में 6.75 लाख से अधिक भारतीय, जॉर्डन में परिधान उद्योग की रीढ़ बने 17 हजार श्रमिक और इथियोपिया में शिक्षा जगत को दिशा देने वाले भारतीय प्रोफेसर, ये लोग भारत की 'सॉफ्ट पावर' नहीं, बल्कि लिविंग स्ट्रैटेजिक एसेट्स हैं। मोदी सरकार ने पहली बार प्रवासियों को भावनात्मक प्रतीक से निकालकर नीति के केंद्र में रखा है, चाहे वह बिज़नेस कार्ड वीज़ा हो या श्रम सुरक्षा के समझौते।

बहरहाल, आलोचक कह सकते हैं कि यह यात्रा चुनौतियों से मुक्त नहीं है क्योंकि पश्चिम एशिया की अस्थिरता,अफ्रीका में प्रतिस्पर्धा और वैश्विक आर्थिक सुस्ती बनी हुई है। लेकिन यहीं मोदी सरकार की विदेश नीति अलग दिखती है। यह जोखिम से भागती नहीं, उसे मैनेज करती है। मोदी सरकार जानती है कि बहुध्रुवीय विश्व में निष्क्रियता सबसे बड़ा खतरा है। इसलिए निष्कर्ष स्पष्ट है। मोदी की यह यात्रा भारत के आत्मविश्वास का बयान है कि भारत अब केवल संतुलन साधने वाला देश नहीं, बल्कि अपने हितों के लिए गठबंधन गढ़ने वाला राष्ट्र है। मोदी की यह पश्चिम एशिया-अफ्रीका कूटनीति लेन-देन से आगे जाकर रणनीतिक हेजिंग की परिपक्व मिसाल है। आने वाले वर्षों में जब ऊर्जा, खाद्य और समुद्री मार्गों पर संघर्ष तेज होगा, तब यह यात्रा एक दूरदर्शी कदम के रूप में याद की जाएगी, जिसने भारत को न केवल सुरक्षित किया, बल्कि निर्णायक भी बनाया।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

हम ऐसे ऐतिहासिक निर्णय ले रहे जिसकी गूंज दशकों तक सुनाई देगी

- *ओमान में गरजे पीएम मोदी, भारतीय समुदाय और छात्रों के साथ की बात*

कहा-21वीं सदी का भारत साहसिक और त्वरित निर्णय लेता है

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ओमान दौरे पर हैं। इस दौरान उन्होंने कहा कि 21वीं सदी का भारत बड़े और त्वरित फैसले लेता है, बड़े लक्ष्य तय करके आगे बढ़ता है और समयबद्ध तरीके से परिणाम देता है। पीएम मोदी ओमान की राजधानी मस्कट में भारतीय समुदाय को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि हमारा रिश्ता ट्रस्ट की नींव पर बना है। दोस्ती की ताकत से आगे बढ़ा और समय के साथ गहराता चला गया। आज हमारे डिप्लोमैटिक रिश्ते भी 70 वर्ष के हो गए हैं। ये सिर्फ 70 वर्ष का उत्सव नहीं है, ये वो पड़ाव है, जहां से हमें अपनी सदियों की विरासत को एक समृद्ध भविष्य की ओर ले जाना है। ओमान में भारतीय समुदाय के लोगों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज हम एक परिवार की तरह एकत्रित हुए हैं। आज हम अपने देश को, अपनी टीम इंडिया को सेलीब्रेट कर रहे हैं। भारत में हमारी विविधता हमारी संस्कृति का एक मजबूत आधार है। हमारे लिए हर दिन एक नया रंग लेकर आता है, हर मौसम एक नया उत्सव बन जाता है, हर परंपरा एक नई सोच के साथ आती है।

अब हमारा 'दीया' पूरे विश्व को रोशन करेगा

प्रधानमंत्री ने कहा कि अब हमारा 'दीया' केवल हमारे घरों को ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व को रोशन करेगा। यह सभी भारतीयों के लिए गर्व का विषय है और दीवाली को मिली यह वैश्विक मान्यता उस प्रकाश की पहचान है, जो आशा, सौहार्द्र और मानवता का संदेश फैलाता है। 'मैत्री पर्व' कार्यक्रम में भारतीय छात्रों और समुदाय को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि भारत और ओमान न केवल भौगोलिक रूप से बल्कि पीढ़ियों से एक-दूसरे से जुड़े हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत और ओमान के बीच जो रिश्ता व्यापार से शुरू हुआ था आज उसे शिक्षा सशक्त कर रही है। मुझे बताया गया है कि यहां के भारतीय स्कूलों में करीब 46,000 छात्र पढ़ाई कर रहे हैं, इसमें ओमान में रहने वाले अन्य समुदायों के भी हजारों बच्चे शामिल हैं। ओमान में भारतीय शिक्षा के 50 वर्ष पूरे हो रहे हैं। ये हम दोनों देशों के संबंधों का एक बहुत बड़ा पड़ाव है। पीएम ने कहा कि हमारी विविधता हमारी संस्कृति की मजबूत नींव है। हर परंपरा अपने साथ नया विचार लेकर आती है, हम भारतीय जहां भी जाते हैं,छाप छोड़ते हैं।

पीएम बोले-ओमान में मैं मिनी इंडिया देख रहा हूं

पीएम मोदी ने आगे कहा कि यही कारण है कि हम भारतीय कहीं भी जाएं, कहीं भी रहें, हम विविधता का सम्मान करते हैं। हम वहां की संस्कृति, वहां के नियम-कायदों के साथ घुल-मिल जाते हैं। ओमान में भी मैं आज यही होते हुए अपनी आंखों के सामने देख रहा हूं। आज मैं मेरे सामने एक मिनी इंडिया देख रहा हूं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि 21वीं सदी का भारत साहसिक और त्वरित फैसले लेता है, बड़े लक्ष्यों के साथ आगे बढ़ता है और तय समयसीमा के भीतर परिणाम देता है। प्रधानमंत्री ने हाल ही में यूनेस्को की ओर से 'दीपावली' पर्व को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किए जाने के फैसले की सराहना की।

पीएम मोदी को मिला ऑर्डर ऑफ ओमान सम्मान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ओमान का दूसरा सर्वोच्च सम्मान मिला है। उन्हें सुल्तान हैथम बिन तारिक ने ऑर्डर ऑफ ओमान से सम्मानित किया है। इससे पहले दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय बैठक की। इस दौरान भारत और ओमान के बीच व्यापार समझौते पर साइन हुए। समझौते से भारत के टेक्सटाइल, फुटवियर, ऑटोमोबाइल, जेम्स एंड ज्वैलरी, रिन्युएबल एनर्जी और ऑटो कंपोनेंट्स जैसे सेक्टर्स को सीधा फायदा होगा। इस पर नवंबर 2023 में बातचीत शुरू हुई थी।

रिटायरमेंट से पहले जजों का ताबड़तोड़ फैसले सुनाना दुर्भाग्यपूर्ण

- एससी बोला-लगता है लास्ट ओवर में छक्के मार रहे,जिला जज ने सस्पेंशन को चुनौती दी थी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को न्यायपालिका में भ्रष्ट आचरण को लेकर अप्रत्यक्ष रूप से अहम टिप्पणी की। कोर्ट ने भ्रष्टाचार का जिक्र किए बिना कहा कि रिटायरमेंट से ठीक पहले जजों का बाहरी कारणों से प्रभावित होकर ताबड़तोड़ फैसला सुनाना दुर्भाग्यपूर्ण है। भारत के चीफ जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस विपुल एम पंचोली की बेंच ने कहा- कुछ जजों में रिटायरमेंट से चंद दिनों पहले बहुत ज्यादा आदेश पारित करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वे आदेश ऐसे सुनाते हैं, जैसे मैच के अंतिम ओवर में छक्के मार रहे हों। सुप्रीम कोर्ट ने यह टिप्पणी मध्य प्रदेश के एक प्रिंसिपल डिस्ट्रिक्ट जज की याचिका पर सुनवाई के दौरान की। जज ने हाईकोर्ट के उस फैसले को चुनौती दी है, जिसके तहत रिटायरमेंट से 10 दिन पहले उन्हें सस्पेंड कर दिया गया था। आरोप है कि जज ने कुछ संदिग्ध आदेश पारित किए थे। याचिकाकर्ता जज का रिटायरमेंट 30 नवंबर को होना था। उन्हें 19 नवंबर को दो न्यायिक आदेशों के आधार पर निलंबित किया गया। उनकी ओर से पेश सीनियर एडवोकेट विपिन सांघी ने कहा कि जज का करियर बेदाग रहा है।

शरद की सुबह

आधा चाँद एक नाव है
जो रात की नदी में तैरता रहता है
रात की नदी गहरी काली है
चाँद उसमें दूध का ठेला लगाता है
ठेला एक घुमावदार सड़क पर लुढ़कता है
एक बच्चा उसके पीछे भागता है
ठेले पर एक बुढ़िया
सूत कातने से ऊबकर
दूध फेंट रही है
बच्चा पिता से चाँद के ठेले से दूध माँगता है
पिता हार जाता है
चाँद से
ठेले से
बुढ़िया से
फेंटे जा रहे दूध से
जहाँ घुमावदार सड़क खत्म होती है
चाँद पानी पर फिर से नाव की तरह तैरता है
पिता
पानी से
नाव से भी हार जाता है
पिता पीछे रह गए अपने बच्चे को
स्कूल में ढूँढ़ता है
उसे अपना बच्चा वहाँ बेजान मिलता है
पिता अपना सब कुछ हार जाता है।

-बहादुर पटेल

एअर इंडिया एक्सप्रेस फ्लाइट के टायर फटे

कोच्चि (एजेंसी)। जेद्दा से कोझिकोड जा रही एअर इंडिया एक्सप्रेस की फ्लाइट की गुरुवार को कोचीन इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी। प्लेन में 160 यात्री सवार थे। कोचीन इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड ने एक बयान में कहा कि फ्लाइट एआईई 398 को राइट मेन लैंडिंग गियर और टायर फेल होने के कारण कोच्चि डायवर्ट किया गया था। फ्लाइट को सुबह 9.07 बजे पूरी इमरजेंसी के साथ लैंड करवाया गया। प्रवक्ता ने बयान में कहा,सभी इमरजेंसी सेवाओं को पहले ही एक्टिवेट कर दिया गया था। यात्रियों या क्रू मेंबर्स में किसी के घायल होने की कोई खबर नहीं है।

'अफसर खून से नहलाने आए' केस में आजम खान हुए बरी

अभी रामपुर जेल में ही रहेंगे,सबूतों के अभाव में कोर्ट से राहत

रामपुर (एजेंसी)। जेल में बंद सपा नेता आजम खान को भड़काऊ भाषण मामले में बरी हो गए हैं। एमपी-एमएलए मजिस्ट्रेट कोर्ट ने गुरुवार को उन्हें सबूतों के अभाव में दोषमुक्त कर दिया। फैसले के दौरान आजम वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए पेश हुए। फैसले के बाद कोर्ट को शुक्रिया कहा। चूंकि, आजम दूसरे मामले में सजा काट रहे हैं। इसलिए उन्हें फिलहाल जेल में ही रहना होगा। दरअसल, आप के प्रदेश प्रवक्ता फैसल खान लाला ने शहर कोतवाली में 2 अप्रैल 2019 को एक मुकदमा दर्ज कराया था। आरोप था कि आजम ने 29 मार्च 2019 को सपा प्रत्याशी के तौर पर सपा कार्यालय से भड़काऊ भाषण दिया। इसके जरिए तत्कालीन जिलाधिकारी, अपर जिलाधिकारी, एसडीएम सदर और सिटी मजिस्ट्रेट के खिलाफ लोगों को भड़काया गया। आजम पर यह कहने का आरोप था कि चार अधिकारी ने गलत किया है।

मुख्यमंत्री ने पुलिस महानिदेशक - महानिरीक्षक सम्मेलन में कहा

पुलिस के बारे में जनसामान्य की धारणा बदलने और पुलिस के जनता से बेहतर संवाद के लिए विशेष पहल की आवश्यकता

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश की धरती से नक्सलवाद को उखाड़ फेंकने के लिए पुलिस फोर्स को बधाई और शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस मोर्चे पर अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि 17 दिसंबर के विधानसभा के विशेष सत्र में भी पुलिस फोर्स की सराहना हुई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नक्सलवाद से प्रभावित रहे क्षेत्रों में विकास और जनकल्याण की गतिविधियां इस प्रकार संचालित की जाएं, ताकि नक्सलवाद पुनः अंकुरित ना हो। मुख्यमंत्री डॉ. यादव पुलिस मुख्यालय में पुलिस महानिदेशक-महा निरीक्षक सम्मेलन वर्ष 2025 को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वरिष्ठ पुलिस अधिकारी अपने प्रभार के क्षेत्रों में आकस्मिक निरीक्षण जैसी गतिविधियां तत्काल आरंभ करें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के पुलिस मुख्यालय आगमन पर उन्हें गार्ड आफ ऑनर दिया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सलामी गारद का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का पुलिस महानिदेशक श्री कैलाश मकवाना तथा वरिष्ठ अधिकारियों ने स्वागत किया। बैठक में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव गृह श्री शिवशेखर शुक्ला, तथा वरिष्ठ पुलिस अधिकारी उपस्थित थे।

- **वरिष्ठ अधिकारी आकस्मिक निरीक्षण जैसी गतिविधियां तत्काल आरंभ करें**
- **पुलिस अपनी उपलब्धियों और सकारात्मक गतिविधियों के बारे में भी जनता से जानकारियां साझा करे**

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में आरंभ हुई कान्फ्रेंस में पुलिस महानिदेशक श्री कैलाश मकवाना ने बताया कि यह कान्फ्रेंस, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में विकसित भारतः सुरक्षा आयाम विषय पर रायपुर में हुऐ पुलिस महानिदेशक-महानिरीक्षकों के अखिल भारतीय सम्मेलन के निर्देश और क्रियात्मक बिंदुओं के प्रदेश में क्रियान्वयन की समीक्षा के लिए आयोजित की गई है। उन्होंने बताया कि अखिल भारतीय सम्मेलन में आंतरिक सुरक्षा और कानून व्यवस्था, पुलिस आधुनिकीकरण, महिला सुरक्षा, पुलिस थाना परिसरों के पुनर्विकास, सिंहस्थ-2028 और साइबर इनीशिएटिव्स, पुलिसिंग में तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग, नवीन कानूनों के प्रचार-प्रसार, कम्युनिटी पुलिसिंग, आपदा प्रबंधन में पुलिस की भूमिका, नशा-मुक्ति के लिए किए जा रहे प्रयासों, टूरिस्ट पुलिसिंग, फॉरेंसिक साइंस, साइबर अपराधों की रोकथाम और सड़क सुरक्षा आदि विषयों पर राज्य शासन से अपेक्षाओं के संबंध में विचार-विमर्श हुआ।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वर्तमान युग में सोशल मीडिया अत्यंत शक्तिशाली साधन होने के साथ-साथ गंभीर चुनौती बनकर उभरा है। इसके दुरुपयोग से अफवाह, अपराध और भ्रम फैलाने की संभवनाएं भी बढ़ी हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम सोशल मीडिया की शक्ति का सकारात्मक और रचनात्मक सामग्री के उपयोग करें। किसी भी भ्रामक या उकसाऊ सामग्री को समय रहते पहनाकर उस पर त्वरित और प्रभावी कार्रवाई करना आज की आवश्यकता है। इसके साथ ही सोशल मीडिया के युग में पुलिस से त्वरित सहायता की अपेक्षा भी जनसामान्य में बढ़ी है। इन अपेक्षाओं और भावनाओं के अनुरूप पीड़ित को तत्काल सहायता उपलब्ध कराने के लिए पुलिस बल को तकनीकी रूप से दक्ष और साधन संपन्न होना होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पुलिस के बारे में जनसामान्य की धारणा बदलने और पुलिस के जनता से बेहतर संवाद के लिए विशेष पहल करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि पुलिस अपनी उपलब्धियों और सकारात्मक गतिविधियों के संबंध में जनप्रतिनिधियों और जनसामन्य से जानकारियां साझा करें। पुलिस अधिकारी बेहतर संवाद के लिए मीडिया के माध्यम से सक्रिय रहें।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 27 °c | न्यूनतम 23°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 19 दिसंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

दिल्ली से मुंबई तक भारत अपनी हार नहीं भूलेगा

- शहबाज शरीफ बोले-मोदी सरकार को सबक सिखाया

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तानी पीएम शहबाज शरीफ ने बुधवार को कहा कि उनकी सेना ने भारत को कभी न भूलने वाला सबक दिया है। उन्होंने कहा कि दिल्ली से मुंबई तक भारत इस हार का दर्द कभी नहीं भूलेगा। शहबाज ने कहा कि पाकिस्तानी सेना ने देश की जनता की दुआओं से यह जीत हासिल की। उन्होंने ने यह बयान खैबर पख्तूनख्वा (केपी) में हरिपुर यूनिवर्सिटी में दिया। शहबाज ने दावा किया कि 87 घंटे तक चले इस संघर्ष में

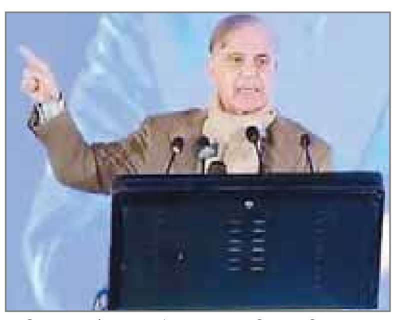

पाकिस्तान ने भारत के 6 लड़ाकू विमान गिराए, जिनमें तीन राफेल शामिल थे। साथ ही कई ड्रोन भी मार गिराए। पाकिस्तानी पीएम ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हमला होने के इसके बाद भारत ने पाकिस्तान पर आरोप लगाते हुए सैन्य कार्रवाई की। पहलगाम में 22 अप्रैल को टूरिस्टों पर आतंकवादी हमला हुआ, जिसमें 26 लोग मारे गए थे। ये आतंकी पाकिस्तान से जुड़े थे। शहबाज इससे पहले भी ऐसी बयानबाजी कर चुके हैं। हालांकि इससे पहले उन्होंने सितंबर में भारत के 7 विमान गिराने का दावा किया था।

राजशाही में असिस्टेंट हाई कमीशन की तरफ बढ़ा मार्च

- बड़ा खतरा! बांग्लादेश में निशाने पर है भारतीय मिशन

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में भारतीय मिशन के खिलाफ खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। गुरुवार को बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारियों ने राजशाही में भारतीय अस्टिटेंट हाई कमीशन की ओर मार्च करने की कोशिश की। इस दौरान भारत विरोधी नारे लगाए। सुरक्षा स्थित को देखते हुए भारतीय मिशन ने राजशाही और खुलना में भारतीय वीजा एप्लीकेशन सेंटर को बंद कर दिया है। बांग्लादेशी

मीडिया रिपोर्ट्स में बताया गया है कि सुरक्षा बलों ने प्रदर्शनकारियों को रोकने के लिए सड़क को बैरिकेड्स लगाकर ब्लॉक कर दिया है। इसके पहले बुधवार को ऐसी ही घटना में प्रदर्शनकारियों ने ढाका स्थित भारतीय उच्चायोग को घेरने की कोशिश की थी। बुधवार को सैकड़ों प्रदर्शनकारियों ने ढाका में भारतीय उच्चायोग के लिए मार्च निकाला था। दोपहर करीब 3 बजे यह मार्च शुरू होने के बाद आगे बढ़ा तो इसे पुलिस के ब्लॉकेड का सामना पड़ा। इस दौरान प्रदर्शनकारी पुलिस से भिड़ गए थे और पहला बैरिकेड तोड़ दिया था। इसके बाद दूसरे बैरिकेड पर उनका सामना भारी पुलिस बल से हुआ था, जहां वे सड़क पर ही बैठ गए और प्रदर्शन शुरू कर दिया। ये विरोध प्रदर्शन बांग्लादेश में बढ़ती चिंताओं के बीच हुए हैं।

मुख्यमंत्री का रतलामवासियों ने अभूतपूर्व सौगात के लिए किया अभिनंदन

रतलाम की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर है विशिष्ट पहचान: मुख्यमंत्री

रतलाम का सौभाग्य, बगैर मांगे मिली मेट्रोपोलिटिन रीजन में शामिल होने की सौगात : मंत्री श्री काश्यप

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सेंव, सोना और साड़ी के लिए रतलाम की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति है। इनसे रतलाम की अपनी विशिष्ट पहचान बनी है। रतलाम स्वाभिमानी और पुरूषार्थी लोगों की नगरी है। यहां के लोग काम के आधार पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाते हैं। इसका सबसे अच्छा उदाहरण सूक्ष्म,लघु, एवं मध्यम, उद्यम मंत्री श्री चैतन्य काश्यप हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रतलाम को इंदौर मेट्रोपोलिटिन रीजन में शामिल करने के लिए रतलाम वासियों के द्वारा संवाद भवन (मुख्यमंत्री निवास) में आयोजित अभिनंदन समारोह को संबोधित कर रहे थे। समारोह को संबोधित करते हुए एमएसएमई मंत्री श्री काश्यप ने कहा कि बगैर मांग के रतलाम को मेट्रोपोलिटिन रीजन में शामिल किया जाना रतलाम वासियों के लिए सौगात की बात है। रतलाम के प्रभारी मंत्री डॉ. विजय शाह ने कहा कि हमारे मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सपने को साकार करने वाले मुख्यमंत्री हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि रतलाम में औद्योगिक विकास की सभी संभावनाएं पहले से ही असीमित हैं। इन संभावनाओं को साकार करने के लिए रतलाम को मेट्रोपोलिटिन क्षेत्र में शामिल किया गया है। नागदा और खाचरौद पहले ही शामिल कर लिए गए, ऐसी स्थिति में

असीमित संभावनाओं से परिपूर्ण रतलाम को भी शामिल करना ही था। अब इंदौर, उज्जैन के साथ रतलाम के शामिल हो जाने से मेट्रोपोलिटिन रीजन का विकास ट्रिपल इंजन की समन्वित शक्ति से होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रतलाम वासियों का अभिनंदन के लिए आभार मानते हुए कहा कि मुख्यमंत्री निवास प्रदेश की जनता का ही घर है।

एमएसएमई मंत्री श्री काश्यप ने कहा कि मध्यप्रदेश का विगत दो वर्षों में अभूतपूर्व विकास हुआ है। मेट्रोपॉलिटिन रीजन का विजन मुख्यमंत्री की विकास के प्रति अद्वितीय ललक की परिणीति है। वर्ष 2025 में भोपाल में आयोजत ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट, विभिन्न संभागों में आयोजित रीजनल इन्डस्ट्रीयल कॉन्क्लेव और मेट्रोपोलिटिन रीजन मुख्यमंत्री डॉ. यादव के मध्यप्रदेश के विकास के प्रति व्यापक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करते हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का संवाद भवन में रतलाम के संयुक्त व्यापारी संघ, सराफा एसोसिएशन, खेल संगठन, ग्रेन मर्चेंट संघ, बार एसोसिएशन, मेडिकल एसोसिएशन सहित विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने अभिनंदन किया। समारोह में जिला अध्यक्ष श्री प्रदीप उपाध्याय, महापौर रतलाम नगर निगम श्री प्रह्लाद पटेल, नगर निगम अध्यक्ष श्रीमती मनीषा शर्मा सहित अन्य प्रतिनिधि मौजूद रहे।

प्रमुख बिंदु

- रतलाम स्वाभिमानी और पुरूषार्थी लोगों की नगरी है।
- यहां के लोग काम के आधार पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाते हैं।
- बगैर मांग के रतलाम को मेट्रोपोलिटिन रीजन में शामिल किया जाना रतलाम वासियों के लिए सौगात की बात है।
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सपने को साकार करने वाले मुख्यमंत्री हैं।
- रतलाम में औद्योगिक विकास की संभावनाएं असीमित हैं।
- इंदौर, उज्जैन के साथ रतलाम के शामिल हो जाने से मेट्रोपोलिटिन रीजन का विकास ट्रिपल इंजन की समन्वित शक्ति से होगा।
- मुख्यमंत्री निवास प्रदेश की जनता का ही घर है।
- मेट्रोपॉलिटिन रीजन का विजन मुख्यमंत्री की विकास के प्रति अद्वितीय ललक की परिणीति है।

स्नूकर क्लब पर बेकरी संचालक पर जानलेवा हमला

पंच से सिर और चेहरे पर किए सात वार, आरोपी बोला- बड़े भाई की बेइज्जती का बदला लिया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के लालघाटी इलाके में डेविड स्नूकर क्लब पर गेम खेल रहे बेकरी संचालक पर एक युवक ने जानलेवा हमला कर दिया। वह हाथ में पंच पहने था। आरोपी ने फरियादी पर एकाएक करीब सात वार किए। लहूलुहान युवक बेसुध होकर जमीन पर गिर गया। इसके बाद आरोपी मौके से फरार हो गया।

आरोपी और फरियादी के बड़े भाई के बीच 10 दिन पहले विवाद हुआ था। इसी का बदला लेने की नीयत से वारदात को अंजाम दिया गया। घटना बुधवार रात की है जिसका सीसीटीवी फुटेज, अब सामने आया है। आरोपी और फरियादी के बड़े भाई के बीच 10 दिन पहले विवाद हुआ था।

टीआई केजी शुक्ला के मुताबिक फरियादी फरीद खान कोतवाली इलाके में रहते हैं और वहीं बेकरी का संचालन करते हैं। डेविड पुल पर गेम खेलते समय, फरीद पर हाथ में पंच पहन कर अचानक हमला किया। जिससे उसे छोटे आई हैं, उसकी सूचना पर एफआईआर दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। आरोपी की गिरफ्तारी फिलहाल नहीं की जा सकी है।

आरोपी ने कहा था भाई से बदतमीजी की तो जिंदा नहीं रहोगे- फरियादी फरीद खान के मुताबिक आरोपी अमन के बड़े भाई जिब्रान भी डेविड पुल पर बैठता है। उम्र में उससे काफी बड़ा है लेकिन आए दिन गेम खेलने के दौरान गाली गलौज से बात करता था। अपने छोटे-मोटे खर्च उठाने का दबाव बनाता था। जब मैं उसकी हरकतों का विरोध करना शुरू किया तो आरोपी ने करीब 10 दिन पहले जान से मारने की धमकी दी। तब डेबिट के पुल पर ही हम दोनों के बीच बहस हुई, हालांकि लोगों ने समझा बूझकर बहस को शांत कर दिया।

इसी दौरान जिब्रान ने मेरी हत्या करने की धमकी दी थी। अमन ने भी हमला करने के बाद मुझे धमकी दी कि आइंदा बड़े भाई से बदतमीजी की तो जान से मार दूंगा और फरार हो गया।

सरकार बोली, नेहरू के दस्तावेज सोनिया लौटा नहीं रहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने साफ किया कि देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से जुड़े निजी कागजात (पेपर्स) प्रधानमंत्री संग्रहालय और पुस्तकालय से गायब नहीं हैं, बल्कि उनका हमें पता है। सरकार ने कहा कि नेहरू के 51 कार्टन पेपर्स सोनिया गांधी के पास हैं। 2008 में गांधी परिवार के अनुरोध पर ये पेपर्स आधिकारिक तौर पर सौंपे गए थे। अब वे लौटा नहीं रही हैं। वे उनकी निजी संपत्ति नहीं, बल्कि देश की धरोहर हैं।

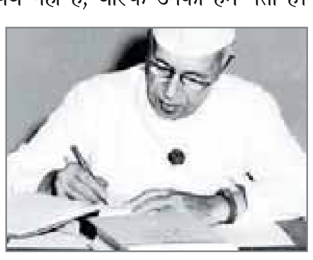

सरकार ने सोनिया से पेपर्स वापस करने की मांग की है, ताकि नेहरू के समय के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक रिकॉर्ड तक पहुंच आसान हो सके क्योंकि ये दस्तावेज पब्लिक आर्काइव में होने चाहिए, बंद दरवाजों के पीछे नहीं।

- **प्रधानमंत्री संग्रहालय में रखे जाने हैं दस्तावेज-** सोसाइटी के अध्यक्ष प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उपाध्यक्ष रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह हैं। संस्कृति मंत्रालय की एक्स पर की गई पोस्ट में लिखा है- जेएन पेपर्स पर 29.04.2008 के लेटर के मुताबिक सोनिया गांधी के प्रतिनिधि एमवी राजन ने रिक्वेस्ट की थी कि गांधी पूर्व पीएम जवाहर लाल नेहरू के सभी प्राइवेट पारिवारिक लेटर और नोट्स वापस लेना चाहती हैं।

दिल्ली में सख्ती, जगह-जगह गाड़ियों की चेकिंग

- सिर्फ बीएस-6 इंजन गाड़ियों को मिल पाएगी एंट्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में प्रदूषण से निपटने के लिए बुधवार-गुरुवार रात 12 बजे से ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान का चौथा फेज लागू हो गया है। इसके तहत कई सख्त नियम लगाए गए है। दिल्ली में आज से सिर्फ बीएस-6 इंजन वाली गाड़ियों को एंट्री मिल रही है। इससे कम मानक वाले, दिल्ली के बाहर की गाड़ियों को शहर में आने नहीं दिया जा रहा है। इस फैसले से दिल्ली में बाहर से रोजाना आने-जाने वाली 12 लाख गाडियों पर असर पड़ा है। नोएडा से 4 लाख से ज्यादा, गुरुग्राम से 2 लाख और गाजियाबाद से 5.5 लाख वाहनों को दिल्ली में आने से बैन कर दिया गया है। दिल्ली में नो पीयूसी, नो फ्यूल नियम भी लागू हो गया है। पॉल्युशन अंडर कंट्रोल सर्टिफिकेट के बिना गाड़ियों को पेट्रोल,

डीजल या सीएनजी नहीं दिया जा रहा है। बिना पीयूसी सर्टिफिकेट वाली गाड़ियों की पहचान के लिए पेट्रोल पंपों पर ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रीडर कैमरे लगाए गए हैं। शहर के अंदर और बॉर्डर पर जगह-जगह गाड़ियों की चेकिंग की जा रही है। पीयूसी जांच में फेल होने पर गाड़ियों को बिना फ्यूल दिए पेट्रोल पंप से लौटाया जा रहा है। वहीं, नॉन बीएस-6 इंजन वाली गाड़ियां बॉर्डर से यू-टर्न ले रही हैं। दिल्ली परिवहन विभाग के अधिकारी दीपक ने बताया कि दिल्ली के बाहर रजिस्टर्ड गैर-बीएस 6 कॉमर्शियल और निजी वाहनों की सख्ती से जांच की जा रही है। नियमों का उल्लंघन करने पर 20 हजार रुपए का चालान किया जा रहा है या वाहन को यू-टर्न करवाया जा रहा है। जिन वाहनों के पास वैध और अपडेटेड पॉल्यूशन अंडर कंट्रोल सर्टिफिकेट नहीं है, उन पर 10 हजार रुपए जुर्माना लगाया जा रहा है। मोटर वाहन अधिनियम के तहत, बार-बार नियम तोड़ने पर वाहन को जब्त करने का प्रावधान है। दिल्ली में ग्रैप-4 के तहत निर्माण सामग्री ले जाने वाले वाहनों पर पूरी तरह बैन है। सीएनजी, इलेक्ट्रिक वाहन, पब्लिक ट्रांसपोर्ट और जरूरी सेवाओं को छूट दी गई है।

हंगामे के बीच लोकसभा में पास हुआ 'जी राम जी' बिल

विपक्ष ने किया विरोध,सदन में फाड़ी गई विधेयक की कॉपी

नई दिल्ली (एजेंसी)। विपक्षी विरोध के बावजूद लोकसभा से गुरुवार को 'विकसित भारत-जी राम जी विधेयक, 2025' पारित हो गया। ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कांग्रेस ने बापू के आदर्शों को मार दिया, जबकि मोदी सरकार ने उन्हें जिंदा रखा है। मनरेगा योजना की जगह नया विधेयक लाने और उसमें से महात्मा गांधी का नाम हटाने को लेकर विपक्ष के आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए शिवराज सिंह चौहान ने विपक्ष को जमकर सुनाया। उन्होंने कहा कि 'विकसित भारत-जी राम जी विधेयक, 2025' के माध्यम से मोदी सरकार महात्मा गांधी के आदर्शों को लागू करने और विकसित गांव की बुनियाद पर विकसित

भारत बनाने के लक्ष्य की दिशा में काम कर रही है। इससे पहले बुधवार को सदन में उक्त विधेयक पर देर रात तक चर्चा हुई और विपक्ष के अधिकतर सदस्यों ने इसे विभाग संबंधी संसदीय स्थायी समिति को विचार-विमर्श के लिए भेजने की मांग की। कांग्रेस नेता केसी वेणुगोपाल ने गुरुवार को केंद्रीय मंत्री के जवाब से पहले यह मांग फिर से उठाई।

वोट के कारण कांग्रेस को बापू याद आए

उन्होंने कहा कि मनरेगा के नाम में पहले महात्मा गांधी का नाम नहीं था और इसका नाम नरेगा था, लेकिन 2009 के लोकसभा चुनाव से पहले वोटों के कारण कांग्रेस को बापू याद आ गए और उनका नाम जोड़ा गया। चौहान ने आरोप लगाया कि कांग्रेस नीत सरकार ने मनरेगा को भी ताकत के साथ लागू नहीं किया और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे सही से क्रियानवित किया। उन्होंने संप्रग और राजग सरकार के समय इस योजना के क्रियान्वयन की तुलना करते हुए कहा कि कांग्रेस के समय जहां 1660 करोड़ श्रम दिवस सृजित हुए थे।

कांग्रेस ने किया गांधी का नाम चुराने का पाप

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने तो गांधी का नाम चुराने का पाप किया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा ने सदन में कहा कि यह सरकार 'सनक' में नाम बदल रही है। शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि हम सनक में नाम नहीं बदल रहे, अपने परिवार के लोगों पर नाम रखने की सनक तो कांग्रेस की है। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस की सरकारों के समय सैकड़ों योजनाओं, इमारतों, उत्सवों, संस्थानों आदि के नाम गांधी परिवार के सदस्यों- जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के नाम पर रखे गए थे।

नए साल से पहले बड़ा तोहफा दे सकती है सरकार!

- कम हो सकते हैं गैस सिलेंडर के दाम, चल रही है तैयारी
- सीएनजी और पीएनजी के बाद एलपीजी की शुरू हुई चर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। नए साल पर करोड़ों लोगों को महंगाई से राहत मिल सकती है। सरकार ने 1 जनवरी 2026 से सीएनजी और पीएनजी की कीमतों में 2 से 3 रुपये प्रति यूनिट की कटौती करने की घोषणा की है। अब एलपीजी सिलेंडर भी खुशखबरी मिल सकती है। सरकारी तेल कंपनियां हर महीने की पहली तारीख को एलपीजी सिलेंडर की कीमत की समीक्षा करती है। कमर्शियल सिलेंडर की कीमत में इस साल काफी कटौती हुई है लेकिन घरों में यूज होने वाले 14.2 किलोग्राम के सिलेंडर की कीमत 9 मार्च, 2024 से नहीं बदली है। दिल्ली में बिना सब्सिडी वाले घरेलू एलपीजी सिलेंडर की कीमत 803 रुपये है। उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों को सालाना 9 सिलेंडर तक 300 रुपये की सब्सिडी मिलती है। यानी उनके लिए इसकी कीमत 503 रुपये है। कोलकाता में बिना सब्सिडी वाला सिलेंडर 879 रुपये, मुंबई में 852.50 रुपये और चेन्नई में 868.50 रुपये है।

इसी तरह दिल्ली में 19 किलो वाले कमर्शियल सिलेंडर की कीमत 1580.50 रुपये, कोलकाता में 1684 रुपये, मुंबई में 1531.50 रुपये और चेन्नई में 1739.50 रुपये है। कच्चे तेल की कीमत में हाल में काफी गिरावट आई है। यह 60 डॉलर प्रति बैरल के आसपास है जो 2021 के बाद इसका सबसे निचला स्तर है। ब्रेंट क्रूड अभी 60.22 डॉलर प्रति बैरल पर ट्रेड कर रहा है। सप्लाई बढ़ने और डिमांड फ्लैट होने से क्रूड की कीमत में गिरावट आई है। पिछले सत्र में यह 60 डॉलर प्रति बैरल से भी नीचे चला गया था जो इसका 5 साल का न्यूनतम स्तर है। क्रूड की कीमत में इस साल 21 फीसदी गिरावट आई है और यह 2020 के बाद उसका सबसे खराब प्रदर्शन है। क्रूड से पेट्रोल, डीजल और एलपीजी समेत कई उत्पाद बनते हैं। जब कच्चे तेल को रिफाइन किया जाता है तो इसे अलग-अलग घटकों में तोड़ा जाता है जिन्हें हाइड्रोकार्बन कहा जाता है। इसके पहले चरण में पेट्रोलियम गैस जैसी अन्य प्राकृतिक गैसें निकलती है और इसी पेट्रोलियम गैस को एलपीजी सिलेंडर में भरा जाता है। कच्चा तेल सस्ता होने से रिफाइनरीज का मार्जिन बेहतर हुआ है।

राज्यपाल ने चौथे इंटरनेशनल स्कूल ऑन रेडिएशन रिसर्च का किया शुभारंभ

चिकित्सक, पीड़ित मानवता के सच्चे सेवक : राज्यपाल

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि दीन-दुखियों की सेवा ईश्वर की सेवा है। पीड़ित मानवता की सेवा का अवसर बिरले और सौभाग्यशाली लोगों को प्राप्त होता है। चिकित्सक, पीड़ित मानवता के सच्चे सेवक हैं। रोगियों के लिए चिकित्सक भगवान का अवतार होते हैं। उन्होंने कहा कि उपचार के दौरान चिकित्सक का मरीजों के साथ व्यवहार बहुत मायने रखता है। चिकित्सक की आत्मीयता, सरलता और सहजता मरीज के मनोविज्ञान और उपचार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए चिकित्सक हमेशा मरीजों से आत्मीय व्यवहार करें। उनकी पीड़ा को धैर्य के साथ सुनकर उनका इलाज करें।

राज्यपाल श्री पटेल गुरूवार को भोपाल स्मारक अस्पताल एवं अनुसंधान केन्द्र (बी.एम.एच.आर.सी.) में आयोजित चौथे इंटरनेशनल स्कूल ऑन रेडिएशन रिसर्च के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि यह आयोजन केवल वैज्ञानिक विमर्श का मंच नहीं है, बल्कि मानवता के भविष्य को अधिक सुरक्षित, स्वस्थ और आशावान बनाने की दिशा में सराहनीय पहल है। उन्होंने मानवता की सेवा के लिए ज्ञान विज्ञान के प्रसार के लिये किये जा रहे इस आयोजन की समस्त सहयोगी संस्थाओं को बधाई दी। उन्होंने बी.एम.एच.आर.सी. की साइटोजेनेटिक प्रयोगशाला को 'इंडियन बायोडोसिमीट्री नेटवर्क' की छह प्रयोगशालाओं में चयनित होने की उपलब्धि के लिए शुभकामनाएं दी।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि विज्ञान जब करुणा, उत्तरदायित्व और मानव कल्याण के उद्देश्य से जुड़ता है, तब केवल उपचार नहीं देता, बल्कि जीवन की गुणवत्ता और मानवता के विकास को नई ऊँचाइयों तक ले जाता है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सम्मेलन के दौरान होने वाले विचार-विमर्श, वैज्ञानिक चर्चाएँ, शोध पत्र, पोस्टर तथा तकनीकी, अनुसंधानात्मक प्रस्तुतियाँ चिकित्सा क्षेत्र में सहयोग की नई संभावनाओं के द्वार खोलेगी। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवता की सेवा के लिए वैज्ञानिक सहयोग, ज्ञान-साझेदारी तथा दीर्घकालिक अनुसंधान भागीदारी को प्रोत्साहन मिलेगा। राज्यपाल श्री पटेल ने युवा वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं से अपील की है कि नवीनतम वैज्ञानिक उपलब्धियों से जुड़ें। अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ खुलकर ज्ञान का आदान-प्रदान करें। अनुसंधान को सीमाओं से परे ले जाकर मानवता की सेवा करें।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि डीएनए रिपेयर तंत्र, आनुवंशिक परिवर्तनों और नवीन रेडिएशन-आधारित उपचार विधियों पर केंद्रित इस चर्चा का उद्देश्य मानव शरीर की जटिलताओं को गहराई से समझने और रोग उपचार को अधिक प्रभावी बनाना होना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह वैज्ञानिक विमर्श, सिकल सेल एनीमिया जैसे वंशानुगत रोगों से मानवता को मुक्त करने की दिशा में आशा और विश्वास की नई किरण है। राज्यपाल श्री पटेल ने रेडिएशन के जैविक प्रभावों की पहचान, बायोमार्कर्स के वैज्ञानिक उपयोग तथा रेडियोथेरेपी की उन्नत तकनीकों जैसे विषयों पर गहन विचार-विमर्श चिकित्सा विज्ञान को अधिक सटीक, सुरक्षित और सुलभ बनाने में सहयोगी होना चाहिए।

इस अवसर पर सोसायटी ऑफ रेडियशन रिसर्च के संस्थापक अध्यक्ष और विभिन्न प्रख्यात संस्थाओं के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. के.पी. मिश्रा ने न्यूक्लियर साइंस, टेक्नोलॉजी और भाभा एटोमिक रिसर्च सेंटर के डॉ. अमित कुमार ने विकिरण विज्ञान और रेडियोलॉजी का मानव स्वास्थ्य के क्षेत्र में नवीनतम विकास, संभावना और चुनौतियों पर विचार व्यक्त किए।

राज्यपाल श्री पटेल ने कैलेन्डर और पुस्तिका का लोकार्पण भी किया। कार्यक्रम में बी.एम.एच.आर.सी. की प्रभारी निदेशक डॉ. मनीषा श्रीवास्तव ने आयोजन की विस्तार से जानकारी दी। देश-विदेश से जुड़े वैज्ञानिकों, विषय विशेषज्ञों के बारे में बताया। कार्यक्रम में प्रभारी चिकित्सक डॉ. अनुराग यादव, देश-विदेश के वैज्ञानिक, चिकित्सक, शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित थे।

21 दिसम्बर को नि :शुल्क विपश्यना ध्यान सत्र

भोपाल। विश्व मेडिटेशन डे के अवसर पर 21 दिसंबर को राजधानी भोपाल के स्वर्ण जयंती पार्क के योग केंद्र पर निःशुल्क विपश्यना ध्यान सत्र का आयोजन किया जाएगा। योग धर्म साधना केंद्र के वरिष्ठ योगाचार्य राजेश श्रीवास्तव ने बताया कि यह सत्र ध्यान की प्राचीन परंपरा विपश्यना अर्थात 'जैसा है वैसा ही देखना' पर आधारित है और मानसिक शांति के साथ तनाव व चिंता को जड़ से समाप्त करने में सहायक है।

उन्होंने कहा कि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में यह

सभी घरेलू और कामकाजी स्त्री-पुरुषों के लिए एक अनिवार्य जरूरत की तरह हो गया है। उन्होंने कहा कि इससे लोगों का मानसिक स्वास्थ्य मजबूत होगा, उन्हें अपनी भावनाओं पर नियंत्रण करने में मदद मिलेगी, रक्तचाप बेहतर होगा तथा वे भावनात्मक रूप से कहीं अधिक मजबूत बन सकेंगे।

योगाचार्य ने बताया कि यह न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक शक्तियों को मजबूती प्रदान करने का काम करता है। विपश्यना सत्र रविवार को स्वर्ण जयंती पार्क में बने योग चबूतरे पर प्रातः 6.30 बजे से 8.30 बजे तक आयोजित किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने पद्म विभूषण से सम्मानित महान मूर्तिकार राम वी. सुतार के निधन पर किया शोक व्यक्त

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 'पद्म विभूषण' से सम्मानित महान मूर्तिकार श्री राम वी. सुतार के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि श्री सुतार के निधन से कला-शिल्प जगत ने बहुमूल्य रत्न खो दिया है। महान मूर्तिकार श्री सुतार द्वारा गुजरात में विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा 'स्टैच्यु ऑफ यूनिटी' के रूप में निर्मित 'लौह पुरुष' सरदार वल्लभ भाई पटेल की भव्य प्रतिमा न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया को एकता और अखंडता का संदेश दे रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ईश्वर से पुण्यात्मा को शांति तथा शोकाकुल परिजनों को इस असीम दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

स्वर्गीय राम वी. सुतार जी का संपूर्ण जीवन भारतीय कला परंपरा को समर्पित रहा : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने सुप्रसिद्ध मूर्तिकार श्री राम वी. सुतार के निधन पर गहन शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के सृजनकर्ता, सुप्रसिद्ध मूर्तिकार एवं 'पद्म विभूषण' से अलंकृत श्री राम वी. सुतार के निधन का समाचार अत्यंत दुःखद एवं पीड़ादायक है। उनके देहावसान से भारतीय कला, शिल्प एवं सांस्कृतिक जगत ने अपनी एक अमूल्य धरोहर खो दी है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि गुजरात में निर्मित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के माध्यम से लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल जी की भव्य प्रतिमा का सृजन, श्री सुतार जी के अद्वितीय शिल्प कौशल, सृजनात्मक दृष्टि और राष्टभक्ति का जीवंत प्रतीक है। यह प्रतिमा न केवल भारत, बल्कि संपूर्ण विश्व को एकता, अखंडता और राष्ट्रीय आत्मगौरव का संदेश देती रहेगी। उन्होंने कहा कि श्री राम वी. सुतार जी का संपूर्ण जीवन भारतीय कला परंपरा को समर्पित रहा। उनकी कृतियाँ आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करती रहेंगी। ईश्वर दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें तथा शोकसंतप्त परिजनों, अनुयायियों एवं शुभचिंतकों को इस अपार दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

मुख्यमंत्री ने संत शिरोमणि गुरु घासीदास की जयंती पर किया उनका स्मरण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने संत शिरोमणि गुरु घासीदास की जयंती पर उनका पुण्य स्मरण किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि गुरु घासीदास ने अज्ञानता, आडंबर, भेदभाव से पीड़ित समाज का श्रद्धा, प्रेम और बंधुत्व के माध्यम से कल्याण कर मानवता का मार्ग दिखाया। समरसता, जीवदया और सेवा के लिए समर्पित गुरु घासीदास के विचार सदैव समाज को नई दिशा प्रदान करते रहेंगे।

राजा हत्याकांड में सोनम का दावा–'मैं शादी से खुश थी'

इंदौर (नप्र)। इंदौर के बहुचर्चित राजा रघुवंशी हत्याकांड में एक बार फिर हलचल तेज हो गई है। मामले की मुख्य आरोपी और राजा की पत्नी सोनम की जमानत याचिका शिलॉन्ग कोर्ट में दायर किए जाने की पुष्टि हुई है। इसकी जानकारी सोनम के भाई गोविंद ने दी है।

जमानत याचिका में सोनम ने खुद को निर्दोष बताते हुए कहा है कि वह शादी से खुश थी। उसने राज कुशवाह के साथ अपने संबंधों को भाई-बहन जैसा बताया है।

सोनम के भाई गोविंद के मुताबिक, उन्हें जमानत याचिका दायर होने की सूचना तो मिली है, लेकिन याचिका की शर्तों और कोर्ट की कार्यवाही की विस्तृत जानकारी नहीं है। उन्होंने वहां के वकील से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन बात नहीं हो सकी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव से बिहार की खेल मंत्री सुश्री श्रेयसी सिंह ने की सौजन्य भेंट

प्रदेश की खेल प्रोत्साहन गतिविधियों के अध्ययन के लिए बिहार का दल मध्यप्रदेश भ्रमण पर

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से बिहार की खेल मंत्री सुश्री श्रेयसी सिंह तथा बिहार के खेल महानिदेशक श्री रविंद्रन शंकरन ने समत्व भवन (मुख्यमंत्री निवास) में सौजन्य भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पुष्प गुच्छ, अंग वस्त्रम तथा स्मृति चिन्ह के रूप में धातु शिल्प के श्री राम दरबार भेंट कर बिहार की खेल मंत्री सुश्री श्रेयसी सिंह का अभिवादन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को सुश्री सिंह ने बोधि वृक्ष की प्रतिकृति तथा अंगवस्त्रम भेंट किया। इस अवसर पर प्रदेश के खेल संचालक श्री राकेश गुप्ता विशेष रूप से उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भेंट के दौरान मध्यप्रदेश में खेलों के प्रोत्साहन के लिए संचालित गतिविधियों की जानकारी दी। मध्यप्रदेश में खेल गतिविधियों के विस्तार और खिलाड़ियों की क्षमता - प्रतिभा निखारने तथा राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के दृष्टिगत उनके सघन प्रशिक्षण के लिए संचालित गतिविधियों के अध्ययन के

लिए बिहार की खेल मंत्री सुश्री श्रेयसी सिंह के नेतृत्व में बिहार का 5 सदस्यीय दल प्रदेश के दौरे पर है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव से भेंट के पहले बिहार के दल ने शूटिंग अकादमी, घुड़सवारी अकादमी, वॉटर स्पोर्ट्स सेंटर, टी.टी. नगर स्टेडियम, स्पोर्ट्स साइंस सेंटर आदि का भ्रमण किया। दल ने प्रदेश में ग्राम पंचायत, विकासखंड और जिला स्तर पर संचालित खेल प्रोत्साहन गतिविधियों के संबंध में भी जानकारी प्राप्त की।

लोक निर्माण विभाग की प्रेस–वार्ता में विभागीय उपलब्धियां, नवाचार एवं आगामी कार्य योजना पर दी जानकारी

गुणवत्तापूर्ण निर्माण, समयबद्धता और अत्याधुनिक तकनीक लोक निर्माण विभाग का संकल्प : मंत्री श्री सिंह

भोपाल (नप्र)। लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह ने कुशाभाऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर में आयोजित प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि दिसंबर 2023 में प्रदेश में सरकार के गठन के साथ ही 'विकसित मध्य प्रदेश' के निर्माण हेतु एक स्पष्ट, ठोस और दूरदर्शी रोडमैप तैयार किया गया। आज लोक निर्माण विभाग पूरे गौरव और आत्मविश्वास के साथ विभाग की उपलब्धियों तथा भविष्य की उस व्यापक और सशक्त रूपरेखा को प्रस्तुत कर रहा है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत-2047 के विज़न के अनुरूप मध्य प्रदेश का लोक निर्माण विभाग सड़क एवं अवसंरचना विकास के क्षेत्र में तीव्र गति से कार्य कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा इन योजनाओं की नियमित समीक्षा तथा समय-समय पर दिए जा रहे मार्गदर्शन के परिणामस्वरूप विभाग की कार्यप्रणाली, क्रियान्वयन क्षमता और निर्माण गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

मंत्री श्री राकेश सिंह ने कहा कि विगत दो वर्षों में लोक निर्माण से लोक कल्याण की भावना को केंद्र में रखकर प्रदेश में अवसंरचना विकास को नई दिशा मिली है। इन प्रयासों से न केवल प्रदेश की सड़क और परिवहन कनेक्टिविटी सुदृढ़ हुई है, बल्कि इससे मध्य प्रदेश के समग्र आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति और जनजीवन को भी मजबूती मिली है।उन्होंने कहा कि आने वाले 3 वर्षों में मध्य प्रदेश का दृश्य पूरी तरह बदल चुका होगा। हम एक ऐसे प्रदेश का निर्माणकर रहे हैं जहाँ एक सुदूर गांव का किसान भी एक्सप्रेस-वे के माध्यम से दुनिया के बाजारों से जुड़ सकेगा।

विगत दो वर्षों की उपलब्धियां

विगत दो वर्षों में हमने तीव्र गति से कार्य किया है। वर्ष 2024-25 में ही 17,284 करोड़ रुपये की लागत सेलगभग 10,000 किलोमीटर सड़कों का निर्माण पूर्ण किया गया है। साथ ही 6,627 करोड़ से 739 भवनों कानिर्माण कार्य पूर्ण किया है।

मंत्री श्री सिंह ने प्रेस वार्ता में जानकारी देते हुए कहा कि मध्य प्रदेश में आज लगभग 4.2 लाख किमी का रोड नेटवर्क है 7 लोक निर्माण विभाग के अंतर्गत वर्तमान मेंकुल 77,268 किलोमीटर सड़कों का नेटवर्क है। यहनेटवर्क न केवल प्रदेश के प्रमुख शहरों को जोड़ता है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मुख्यधारा में लाता है।

सड़क नेटवर्क का वर्गीकरण

- राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच)- 9,278 किलोमीटर।
- राज्य राजमार्ग (एसएच)- 10,465 किलोमीटर।
- मुख्य जिला मार्ग (एमडीआर)- 22,517 किलोमीटर।
- अन्य जिला एवं ग्रामीण मार्गः 35,000 किलोमीटर।

गुणवत्ता और क्षमता

- फोरलेन मार्गः लगभग 6,000 किलोमीटर।
- डबल लेन मार्गः लगभग 13,000 किलोमीटर।
- सिंगल/इंटरमीडिएट लेनः शेष मार्ग, जिन्हें भविष्य की आवश्यकताओं के अनुसार अपग्रेड किया जा रहा है।

हमारा सौभाग्य है कि मध्य प्रदेश भारत के केंद्र में है। हमारी सीमाओं से होकर ही उत्तर भारत का दक्षिण से औरपूर्व का पश्चिम से संपर्क होता है। हमारी लोकेशन ऐडवानटेज की महत्ता को समझते हुए, माननीय मुख्यमंत्रीजी के नेतृत्व में विभाग ने यह किया है कि मध्य प्रदेशकेवल सड़कों का जाल नहीं बिछाएगा, बल्कि वह देश कासबसे आधुनिक 'लॉजिस्टिक और ट्रांसपोर्ट हब' बनकर उभरेगा।

10 दिसंबर 2025 को मुख्यमंत्री जी के साथ हुई उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक में लोक निर्माण विभाग ने केंद्र सरकार के साथ समन्वय कर राष्ट्रीय राजमार्गों के नेटवर्क को अभूतपूर्व विस्तार देने का मार्ग प्रशस्त किया है।

भोपाल की वोटर लिस्ट से हटेंगे 4.40 लाख मतदाता

ये मृत, एब्सेंट, शिफ्टेड–डबल वोटर ; 'नो मैपिंग' वाले 1.21 लाख वोटर्स को मिलेंगे नोटिस

भोपाल (नप्र)। भोपाल की वोटर्स लिस्ट से 4 लाख 40 हजार से ज्यादा वोटर्स हटेंगे। बुधवार को ये तस्वीर साफ हो गई। स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) में ये वोटर्स या तो अपने पत्ते पर नहीं मिले, या फिर और कहीं शिफ्ट हो गए हैं।

इनमें से 33 हजार से ज्यादा मतदाता मृत भी हो चुके हैं। दूसरी ओर, 'नो मैपिंग' वाले 1 लाख 21 हजार वोटर्स को नोटिस दिए जाएंगे। उन्हें 50 दिन के अंदर जरूरी सभी दस्तावेज पेश करने का मौका दिया जाएगा। बता दें कि भोपाल में एसआईआर के डिजिटलाइजेशन का काम पूरा हो चुका है। कुल 16 लाख 83 हजार 414 वोटर्स के फॉर्म डिजिटलाइज किए गए। दूसरी ओर, 1 लाख 21 हजार 21 वोटर्स ऐसे मिले हैं, जिनका 2003 की वोटर्स लिस्ट के अनुसार डेटा नहीं मिला। कुल 5.69 प्रतिशत वोटर्स को 'नो मेपिंग' के दायरे में रखा गया है। इनका रिकॉर्ड 50 दिन के अंदर जिला प्रशासन ढूंढेंगा। यदि रिकॉर्ड नहीं मिलता है तो नाम भी काटे जाएंगे।

दो दिन तक कलेक्टर से लेकर प्राचार्य तक ने क्रॉस चेक किया- एएसडीआर यानी, मृत, एबसेंट, शिफ्टेड, डबल और अन्य कैटेगरी के वोटर्स को

कलेक्टर से लेकर प्राचार्य तक ने क्रॉस चेक किया। दो दिन तक यह काम चला। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने खुद 92 वोटर्स के वेरिफिकेशन का जिम्मा लिया था।

जानकारी के अनुसार, अनकलेक्टेबल कैटेगिरी में शामिल मतदाताओं की जांच के लिए कुल 551 अधिकारी, बीएलओ और सुपरवाइजर की जिम्मेदारी तय की गई थी। हर अधिकारी और कर्मचारी को बूथ का जिम्मा सौंपा गया। वे 15-16 दिसंबर को वोटर्स के घरों में पहुंचे और जांच की। इसके बाद बुधवार को आंकड़े सामने आए। 15 और 16 दिसंबर को कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह समेत कुल 551 अधिकारी, बीएलओ और सुपरवाइजरों ने वोटर्स को क्रॉस चेक किया था।

7 विधानसभा- चारों कैटेगिरी में गोविंदपुरा आगे, बैरसिया में सबसे कम- नरेला विधानसभा में 6099 ऐसे वोटर मिले, जो मृत हो चुके हैं। 66 हजार 196 अन्य जगह शिफ्ट हो चुके हैं। 6329 अबसेंट तो 539 के नाम पहले से वोटर लिस्ट में जुड़े हुए मिले।

गोविंदपुरा विधानसभा में शिफ्टिंग वाले मतदाताओं की संख्या 61 हजार 404 है। 26 हजार 809 गायब मिले, जबकि 6304 मृत मतदाता पाए गए हैं। 831 मतदाताओं के नाम पहले से वोटर लिस्ट में जुड़े मिले हैं।

भोपाल में मांस के पैकेट से भरा ट्रक पकड़ाया

हिंदू संगठन के सदस्यों ने की जमकर नारेबाजी और तोड़फोड़, कहा- यहां से भेजा जाता है विदेश

भोपाल (नप्र)। भोपाल में बुधवार रात करीब 12 बजे मध्य प्रदेश पुलिस मुख्यालय के सामने एक ट्रक हिंदू संगठन के लोगों पकड़ा है। ट्रक की तलाशी में भारी संख्या में मांस के पैकेट मिले हैं। संगठन के सदस्यों ने आरोप लगाया है कि पैकेटों में गौ मांस है।

तस्करों के पकड़े जाने की सूचना के बाद मौके पर भारी भीड़ एकत्र हो गई। जमकर नारेबाजी की गई। इस दौरान गुस्साए लोगों ने ट्रक में भी जमकर तोड़फोड़ कर दी। मौके पर पहुंची जहांगीराबाद पुलिस ने भीड़ को समझाइश दी है। इसके बाद मांस के सैंपल पशु चिकित्सालय में सुरक्षित रखवाए गए हैं।

कार्यकर्ताओं ने घेराबंदी कर ट्रक को रोका

हिंदू उत्सव समिति के अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी ने बताया कि कार्यकर्ताओं को बीते कई दिनों से सूचना मिल रही थी की एक स्लाटर हाउस में संदिग्ध मांस को काटकर पैकेट में पैक कर हैदराबाद और मुंबई के रास्ते विदेश में भेजने का काम किया जाता है।

उन्होंने बताया कि सूचना मिलने के बाद कार्यकर्ताओं ने घेराबंदी के बाद ट्रक को रोक लिया और उसकी तलाशी ली। मौके से एक संदिग्ध भाग निकला। जबकि एक को पकड़कर पुलिस के हवाले किया है।

शीतलहर से बचाव के लिए आवश्यक तैयारियों एवं जनजागरूकता के लिए एडवाइजरी जारी

गर्म कपड़े पहनें, कई परतों में वस्त्र धारण करें, अनावश्यक यात्रा से बचें

भोपाल(नप्र)। आयुक्त लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री तरुण राठी ने शीतलहर से बचाव के लिए समस्त चिकित्सा महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी और सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक द्वारा मैदानी कर्मियों एवं आम नागरिकों को शीतलहर के लक्षण, बचाव उपाय तथा डू और डन के संबंध में जागरूक करने और आवश्यक तैयरियां रखने के निर्देश दिए गए हैं।

उल्लेखनीय है कि प्रदेश में माह दिसंबर एवं जनवरी के दौरान शीतलहर का प्रकोप प्रायः देखने को मिलता है। इस अवधि में कई क्षेत्रों में न्यूनतम तापमान 5-7 डिग्री सेल्सियस अथवा उससे कम दर्ज किया जाता है, जिससे जन-मानस के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका रहती है। अत्यधिक ठंड के कारण हाइपोथर्मिया, फॉस्टबाइट जैसी शीतजनित बीमारियाँ तथा विषम परिस्थितियों में मृत्यु की संभावना भी हो सकती है। शीतलहर के दौरान विशेष रूप से 65 वर्ष से अधिक आयु के वृद्धजन, 5 वर्ष से कम आयु के बच्चे, हृदय एवं श्वसन रोग से पीड़ित व्यक्ति, बेघर लोग, खुले स्थानों व निर्माण स्थलों पर कार्यरत श्रमिक, सड़क किनारे रहने वाले व्यक्ति एवं छोटे व्यवसायी अत्यधिक संवेदनशील होते हैं।

शीतलहर क्या है- शीतलहर एक मौसम संबंधी घटना है जिसमें न्यूनतम तापमान में अचानक गिरावट आती है, ठंडी हवाएँ चलती हैं तथा पाला या बर्फ जमने जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

शीतलहर के दौरान क्या करें - स्थानीय रेडियो, टीवी एवं समाचार पत्रों के माध्यम से मौसम की जानकारी नियमित रूप से लेते रहें। पर्याप्त मात्रा में गर्म कपड़े पहनें तथा कई परतों में वस्त्र धारण करें। सिर, गर्दन, हाथ एवं पैरों को अच्छी तरह ढकें; टोपी, मफलर एवं मोज़े का प्रयोग करें। वॉटरप्रूफ जूतों का उपयोग करें। गर्म एवं तरल पेय पदार्थ (चाय, सूप आदि) लेते रहें तथा संतुलित आहार व विटामिन-सी युक्त फल-सब्जियों का सेवन करें। ठंडी हवा से बचें, यथासंभव घर के अंदर रहें एवं अनावश्यक यात्रा से बचें। बच्चों, बुजुर्गों, अकेले रहने वाले एवं असहाय व्यक्तियों का विशेष ध्यान रखें। आवश्यक दवाइयों, ईंधन, पेयजल एवं अन्य आवश्यक सामग्रियों का पूर्व भंडारण रखें। ठंड से प्रभावित होने पर तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें और निकटस्थ अस्पताल से संपर्क करें।

क्या न करें

अत्यधिक ठंड में खुले स्थानों पर अनावश्यक समय तक न रहें। गीले कपड़े पहनकर न रहें, तुरंत सूखे कपड़े पहनें। हाइपोथर्मिया से पीड़ित व्यक्ति को मादक पेय पदार्थ न दें। गंभीर ठंड के लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।

हाइपोथर्मिया एवं फ्रॉस्टबाइट के लक्षण

तेज कंपकंपी, अत्यधिक थकान, भ्रम की स्थिति, बोलने में कठिनाई, नींद आना। हाथ-पैर की उंगलियों, कानों या नाक में सुन्नता, सफेद या पीला पड़ना। शिशुओं में ठंडी, लाल त्वचा एवं ऊर्जा की कमी। हाइपोथर्मिया एक चिकित्सकीय आपात स्थिति है। ऐसे में व्यक्ति को तुरंत गर्म स्थान पर ले जाकर सूखे कंबल से ढकें और शीघ्र अस्पताल पहुँचाएँ।

संपादकीय

हिजाब खींचने पर उठे सवाल

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा राज्य में डॉक्टरों को नियुक्तिपत्र देने के कार्यक्रम में एक मुस्लिम महिला डॉक्टर का हिजाब खींचने का मामला अब राजनीतिक और सामाजिक तूल पकड़ता जा रहा है। यह वीडियो पूरी दुनिया में वायरल हो चुका है। विपक्ष और मुस्लिम संगठनों ने इसके लिए नीतीश को यह कहकर घेरना शुरू कर दिया है कि इस घटना से उनका असली चेहरा सामने आ गया है। यह एक महिला की गरिमा पर हमला है। जबकि सत्तारूढ़ जद यू और भाजपा नीतीश का बचाव करने में लगे हैं। समाजवादी पार्टी केक नेता ने इस मामले में पुलिस में रिपोर्ट कराई है। इस घटना से घबराई और व्यथित मुस्लिम महिला डॉक्टर ने बिहार में सरकारी नौकरी ज्वाइन करने से इंकार कर दिया है और कोलकाता जाने का फैसला किया है। उसके परिवार का कहना है कि इस घटना के लिए नीतीश कुमार ही जिम्मेदार हैं। इस घटना की तीव्र प्रतिक्रिया पाकिस्तान और अन्य मुस्लिम देशों में हुई है। यूपी में सपा नेत्री सुमैया राणा ने नीतीश कुमार के खिलाफ शिकायत दर्ज कर मांग की है कि नीतीश कुमार पर महिला की गरिमा भंग करने के लिए धारा 354 और निषाद पर धार्मिक भावनाएं भड़काने के लिए धारा 153 के तहत एफआईआर दर्ज की जाए। बीते 15 दिसंबर को जब पटना में आयुष डॉक्टरों को नियुक्ति पत्र बांटे किए जा रहे थे, तभी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एक महिला डॉ. नुसरत परवीन से हिजाब हटाने का इशारा करते हैं और फिर खुद इसे नीचे खींच देते हैं, जिससे उनका चेहरा सामने आ जाता है। इस पर मौके पर मौजूद कुछ लोग हंसते दिखे, जबकि डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने उन्हें रोकने की कोशिश भी की। इससे भी हैरान करने वाला बयान यूपी के कैबिनेट मंत्री संजय निषाद का था। उन्होंने एक न्यूज चैनल से कहा कि नकाब छू दिया तो इतना हल्ला... कहीं और छू देते तो क्या हो जाता? हालांकि बाद में उन्होंने इस पर सफाई भी दी। यहां सवाल है कि नीतीश कुमार ने यह सब जानबूझकर किया अथवा यह उनके बिगड़ते मानसिक स्वास्थ्य का एक और उदाहरण है। यानी वो करना कुछ चाहते हैं, कर कुछ जाते हैं। उधर बीजेपी सांसद अपराजिता सारंगी ने नीतीश कुमार का बचाव करते हुए कहा कि यह 'निर्दोष' हरकत थी और इसमें कोई दुर्भावना नहीं थी। यह पिता जैसा स्नेह था, ताकि शिक्षित महिला का चेहरा दुनिया देख सके। इससे किसी को नुकसान नहीं पहुंचा। नीतीश कुमार का यह व्यवहार भारत के मीडिया तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि अंतरराष्ट्रीय मीडिया और खास कर मुस्लिम बहुल देशों में भी चर्चा का विषय बन गया है। तुर्की से लेकर कतर के मीडिया में नीतीश कुमार के इस व्यवहार की आलोचना हुई। पाकिस्तान में भी लोग कहने लगे कि भारत में मुसलमान होना आसान नहीं है। अहम बात यह है कि यह घटना तब हुई जब प्रधानमंत्री तीन मुस्लिम देशों के दौरे पर थे। यह घटना किसी और ने की होती तो शायद उस पर अलग तरह से हंगामा होता या फिर उसे अनदेखा कर दिया जाता। लेकिन नीतीश कुमार राज्य के बीस वर्षों से मुख्यमंत्री हैं। अखबार 'अल जज़ीरा' ने लिखा कि इस घटना ने भारत में मुसलमानों के खिलाफ व्याप्त नस्लवाद की बहस को फिर से सामने ला दिया है। हालांकि जो घटना घटी है, वह निश्चित रूप से दुर्भाग्यपूर्ण है। भारत में मुस्लिम महिलाओं को हिजाब पहनना अनिवार्य नहीं है। प्रगतिशील मुस्लिम महिलाएं भी नहीं इसे नहीं पहनती। लेकिन यह व्यक्तिगत और धार्मिक आस्था से जुड़ा सवाल है। अगर डॉ. परवीन हिजाब पहनने में ही अपनी धार्मिक आस्था की सुरक्षा देखती है तो उसका सम्मान होना चाहिए। कम से कम एक मुख्यसमंत्री को तो ऐसी हरकत से बचना चाहिए।

'टच-स्क्रीन' से टूटते बच्चे

नजरिया

अमरपाल सिंह वर्मा
स्वतंत्र लेखक

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में नौवीं कक्षा की एक लड़की ने मोबाइल चलाने से रोके जाने पर नदी में कूदकर जान दे दी। थाणे में मोबाइल छीनने पर 16 वर्षीय लड़के ने आत्महत्या कर ली। यूपी के आजमगढ़ के एक गांव में 14 साल का किशोर मात्र इस वजह से फंदे पर झूल गया कि उसे गेम खेलने के लिए फोन नहीं मिला। पिछले साल जयपुर में एक महिला ने बेटी का मोबाइल छिपा दिया। इस बात पर मां-बेटी का झगड़ा हो गया। इसी दौरान मां ने रॉड उठाकर दे मारी, जिससे बेटी की जान चली गई। मोबाइल फोन की वजह से ऐसे मामले अब हर महीने, हर जिले और हर शहर में सामने आ रहे हैं। स्मार्टफोन अब एक उपकरण मात्र नहीं रहा, बल्कि वह बच्चों के दिमाग का मालिक बनकर उनके दिमागों को बदल रहा है। इसकी वजह से बच्चों में शारीरिक समस्याएं भी बढ़ रही हैं।

राजस्थान के धौलपुर जिले के कुरेंदा गांव में 13 साल के विष्णु ने पिता की मामूली डांट के बाद आत्महत्या कर ली। वजह सिर्फ इतनी थी कि वह मोबाइल गेम खेल रहा था और पिता ने टोक दिया। गुस्से में वह अपने कमरे में चला गया और इहलीला समाप्त कर ली। इस घटना ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि भारत के घरों में मोबाइल केवल एक उपकरण नहीं रहा है, बल्कि यह रिश्तों के बीच खड़ी एक खाई बनता जा रहा है।

धौलपुर की यह घटना अपनी तरह की अकेली नहीं है। हाल ही में उत्तरप्रदेश के झांसी में एक महिला ने अपने आठवीं में पढ़ने वाले बेटे की मोबाइल गेम की लत से परेशान होकर आत्महत्या कर ली। मोबाइल में उलझा बच्चा पढ़ाई नहीं करता था, जिससे उसकी मां अवसाद में थी। उसने पति से भी कहा था मगर उन्होंने अनसुना कर दिया। नतीजा, महिला की खुदकुशी के रूप में सामने आया।

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में नौवीं कक्षा की एक लड़की ने मोबाइल चलाने से रोके जाने पर नदी में कूदकर जान दे दी। थाणे में मोबाइल छीनने पर 16 वर्षीय लड़के ने आत्महत्या कर ली। यूपी के आजमगढ़ के एक गांव में 14 साल का किशोर मात्र इस वजह से फंदे पर झूल गया कि उसे गेम खेलने के लिए फोन नहीं मिला। पिछले साल जयपुर में एक महिला ने बेटी का मोबाइल छिपा दिया। इस बात पर मां-बेटी का झगड़ा हो गया। इसी दौरान मां ने रॉड उठाकर दे मारी, जिससे बेटी की जान चली गई।

मोबाइल फोन की वजह से ऐसे मामले अब हर महीने, हर जिले और हर शहर में सामने आ रहे हैं। स्मार्टफोन अब एक उपकरण मात्र नहीं रहा, बल्कि वह बच्चों के दिमाग का मालिक बनकर उनके दिमागों को बदल रहा है। इसकी वजह से बच्चों में शारीरिक समस्याएं भी बढ़ रही हैं।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान रायपुर के एक अध्ययन के मुताबिक भारत में पांच साल से कम उम्र के बच्चे औसतन 2.22 घंटे रोज 'स्क्रीन' पर बिताते हैं। ये समय 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' और 'इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स' के सुझाए समय से दोगुना है। यह भी चिंताजनक है कि दो साल से कम उम्र के बच्चे भी 'स्क्रीन' पर रोज 1.23 घंटे बिता रहे हैं, जबकि इस उम्र के बच्चों के लिए डॉक्टर पूरी तरह 'नो स्क्रीन' के पक्ष में हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि पांच साल से कम उम्र के बच्चों में रोज 1-1.5 घंटे से ज्यादा 'स्क्रीन टाइम' उनके दिमाग के विकास को धीमा कर देता है। इससे भाषा सीखने की गति कम होती है, ध्यान और समझने

की क्षमता घटती है, सामाजिक कौशल कमजोर पड़ते हैं और मोटापा और नींद आने की दिक्कतें बढ़ती हैं।

'भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद' (आईसीएमआर) के सहयोग से दिल्ली के दो प्राइवेट स्कूलों के छात्रों पर दो वर्ष तक किए गए अध्ययन की ताजा रिपोर्ट के अनुसार बच्चे और किशोर झुककर घंटों मोबाइल या टैबलेट चला रहे हैं। क्लास रूम में भी छह से सात घंटे बैठने और शारीरिक व्यायाम न के बराबर होने से 'पॉस्चर' (मुद्रा), मांसपेशियों और हड्डियों की समस्याएं आ रही हैं।

मोबाइल-जनित समस्याएं किस कदर बढ़ रही हैं, इसे लखनऊ में 'उत्तरप्रदेश महिला आयोग' की जन-सुनवाई के उदाहरण से समझा जा सकता है। इस सुनवाई में अब किशोरवय बेटियों की मोबाइल लत से परेशान माएं मदद के लिए पहुंच रही हैं। आयोग की हर सुनवाई में 3-4 मामले ऐसे आते हैं जिनमें महिलाओं का कहना है कि उनकी किशोरवय बेटियां फोन का अत्यधिक इस्तेमाल करती हैं और रोकने पर उनसे झगड़ा, बदसलूकी या हिंसक व्यवहार करती हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार स्मार्टफोन के कारण केवल पढ़ाई नहीं बिगड़ रही। व्यवहार में आक्रामकता, एकाकीपन, देर रात तक जागना, ऑनलाइन चैटिंग और वर्चुअल दुनिया में जीना अब 'सामान्य' बनता जा रहा है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मोबाइल दिमाग में वही प्रतिक्रिया पैदा करता है जो नशे में होता है। बार-बार 'डोपामाइन रिलीज' होने से बच्चा वास्तविक दुनिया से कटने लगता है। इस लत का पहला लक्षण मां-बाप से चिड़चिड़ापन होता है। दूसरा लक्षण फोन छीने जाने पर हिंसक प्रतिक्रिया या खुद को नुकसान पहुंचाने की धमकी है। तीसरे लक्षण में पढ़ाई, दोस्ती, परिवार, नींद सबमें कमी होने लगती है।

दरअसल, मानसिक रूप से अपरिपक्व होने के कारण बच्चे इतनी छोटी उम्र में खुद को संभाल नहीं पाते। वे सोचते हैं कि फोन ही उनकी आजादी है। इसलिए जैसे ही ये छिनता है, वे नियंत्रण खो देते हैं। इस मामले में माता-पिता गलती कर रहे हैं। पहले तो माता-पिता ही बच्चे को फोन पकड़ा देते हैं, ताकि वह चुप रहे। बाद में जब बच्चे इसी में उलझे रहते हैं तो वे अचानक सख्ती करते हैं, पर तब तक स्थिति हाथ से निकल चुकी होती है।

बच्चों के फोन इस्तेमाल को नियंत्रित करने के लिए जल्दीबाजी से नहीं, योजनाबद्ध तरीके से काम करने की जरूरत है। सबसे जरूरी है कि परिवार मिलकर स्पष्ट नियम तय करे कि कितने घंटे 'स्क्रीन टाइम' हो, कौन-कौन से ऐप चलें और रात में फोन कहां रखा जाए। ये नियम बच्चों के साथ बातचीत करके बनाए जाएं, न कि उन पर थोपे जाएं।

फोन चलाने की पाबंदी मात्र से समस्या का समाधान नहीं हो सकता। इसके बजाय बच्चों को खेल, आर्ट, दोस्तों के साथ समय बिताने और घर के छोटे-मोटे काम जैसे विकल्प दिए जा सकते हैं। माता-पिता को खुद को बदलना होगा क्योंकि अगर वे लगातार मोबाइल में व्यस्त रहेंगे तो बच्चा स्वाभाविक रूप से उसी रास्ते पर जाएगा।

इसके साथ-साथ बच्चों की भावनाओं को समझना भी जरूरी है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार कई बार बच्चे सामाजिक दबाव, अकेलेपन से बचने के लिए 'स्क्रीन' की दुनिया में शरण लेते हैं। फोन को एकदम से छीन लेने की जगह उपयोग को धीरे-धीरे कम करना बेहतर होगा, ताकि बच्चा मानसिक झटका महसूस न करे। यह केवल मोबाइल की लत का मामला नहीं है बल्कि एक सामाजिक संकट है जो नई पीढ़ी के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। यह पीढ़ी देश का भविष्य बनने के बजाय मोबाइल फोन के 'स्क्रीन' के भविष्य में उलझती जा रही है।

धौलपुर के बच्चे विष्णु, जान देने वाली झांसी की महिला, बिलासपुर की लड़की और थाणे व आजमगढ़ के किशोर भौगोलिक रूप से भले ही अलग-अलग हैं, मगर इनसे समाज को साझा चेतावनी मिल रही है। अगर इस चेतावनी को अनसुना किया जाता रहा, तो आने वाले समय में यह समस्या और भी भयावह हो जाएगी। ऐसे में आज से ही घरों में एक नया अनुशासन शुरू करने की आवश्यकता है।

(सप्रेस)

स्वतंत्रता आंदोलन का अग्निधर्मी क्रांतिकारी

अशफाक उल्ला खां शहीद दिवस

प्रमोद दीक्षित मलय
लेखक शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं।

कुछ आरज़ू नहीं है, है आरज़ू तो यह है।
रख दे कोई जरा सी, ख़ाके वतन कफ़न में।।

ये पंक्तियां हैं काकोरी में सरकारी खजाना लूट घटना के महानायक मां भारती के सच्चे साधक क्रांतिकारी अशफाक उल्ला खां की जो उन्होंने फांसी दिए जाने के कुछ समय पूर्व लिखी थीं। लौकिक जीवन यात्रा के अंतिम समय में भी वह भारत माता की पग धूलि माथे सजाना चाहते थे। उनके जीवन का पल-पल देश की सेवा साधना को ही समर्पित था। कोई वैयक्तिक इच्छा-आकांक्षा न थी। वह न केवल हिंदू मुस्लिम एकता के एक सशक्त सेतु थे बल्कि एक ऐसे संवेदनशील शायर भी थे जिनके लेखन में ओज, देश प्रेम, शौर्य एवं पराक्रम तथा राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के स्वर गुंजित होते हैं। ऐसे वीर नर-नाहर को 27 वर्ष की उम्र में फांसी सजा हुई थी। वह सभी क्रान्तिकारियों में प्रिय थे, उनको सभी स्नेह से 'कुंवर जी' कहा करते थे। अशफाक उल्ला खां स्वतंत्रता आंदोलन में अपना जीवन समर्पित करने वाले ओजस्वी क्रांतिकारी थे।

अशफाक का जन्म 22 अक्टूबर, 1900 को उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में एक जमींदार परिवार में हुआ था। पिता मोहम्मद शफीक उल्ला खां और माता मजहूरुन्निशा बेगम शिशु के जन्म पर फूले न समाये थे। अशफाक अपने भाई बहनों में सबसे छोटे थे। इन्हें घर में सभी प्यार से 'अच्छू' बुलाते थे। बचपन से ही खेलने-कूदने, तैरने, घुड़सवारी करने, बंदूक से निशाना साधने और शिकार करने का शौक था। मजबूत ऊंची कद-काठी और बड़ी आंखों वाले सुन्दर गौरवर्णी आकर्षक व्यक्तित्व के धनी अशफाक रामप्रसाद बिस्मिल की ही भांति उर्दू के अच्छे शायर भी थे। साथ ही हिन्दी और अंग्रेजी में भी कविताएं और लेख लिखते थे। अशफाक का परिवार बहुत पढ़ा लिखा नहीं था जबकि ननिहाल पक्ष के लोग उच्च शिक्षित और महत्वपूर्ण नौकरियों में थे। कहा जाता है कि ननिहाल के लोगों ने 1857 के प्रथम स्वातंत्र्य समर में भारतीय सेनानियों का साथ नहीं दिया था तो लोगों ने गुस्से में उनकी कोठी में आग लगा दी थी जो आज भी 'जली कोठी' नाम से क्षेत्र में प्रसिद्ध है। वर्ष 1920 में अपने बड़े भाई रियासत उल्ला खां के सहपाठी मित्र रामप्रसाद बिस्मिल के सम्पर्क में आने के बाद अशफाक के मन में भी अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना भर गई और वह अंग्रेजों को देश से भगाने के लिए युवाओं को जोड़ने लगे थे। इसी बीच बंगाल के क्रान्तिकारियों से भी सम्पर्क बना और एक संगठन बनाने का निर्णय लिया गया। विदेश में रह रहे लाला हरदयाल भी बिस्मिल से सम्पर्क साधे हुए थे और संगठन बनाकर उसका संविधान लिखने का निर्देश दे रहे थे। इसी बीच अशफाक कांग्रेस दल में अपने लोगों की सहभागिता चाहते थे। इसलिए 1920 के अहमदाबाद अधिवेशन में बिस्मिल और अन्य साथियों के साथ अशफाक शामिल हुए। लौटकर भी सम्पर्क बना रहा और 1922 के गया अधिवेशन में भी जाना हुआ। लेकिन गांधी जी द्वारा बिना किसी से पूछे असहयोग आंदोलन वापस लेने से युवाओं का मन खराब हुआ और वहां से लौटने के बाद अपना एक दल बनाने की बात हुई। और तब 1924 में बंगाल से आये क्रान्तिकारियों के सहयोग से 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' अस्तित्व में आई। 1 जनवरी, 1925 को 'दि रिवोल्यूशनरी' नाम से अंग्रेजी में चार पन्ने का एक विचार पत्रक निकाला गया जो एक प्रकार से दल का घोषणा पत्र ही था। जिसमें प्रत्येक पन्ने पर ऊपर लिखा हुआ था, ''चाहे छोटा हो या बड़ा, गरीब हो या अमीर, प्रत्येक को मुफ्त न्याय और समान अधिकार मिलेगा।'' इस पत्रक को पूरे देश के प्रमुख शहरों और सार्वजनिक स्थानों पर चिपकाया गया, ताकि अधिक से अधिक जनता पढ़ सके। दल के काम को बढ़ाने के लिए धन की आवश्यकता थी लेकिन दल को कोई भी सेठ-साहूकार चन्दा नहीं दे रहा था। संयोग से इसी बीच योगेश चन्द्र बनर्जी और शचीन्द्रनाथ सान्याल पर्चों के साथ बंगाल जाते समय पकड़ लिए गये। अब दल की पूरी जिम्मेदारी बिस्मिल और अशफाक पर आ गई। धन प्राप्ति के लिए अमीरों के यहां दो डकैती भी डाली गईं लेकिन पर्याप्त धन नहीं मिल सका और दो आम लोगों की न चाहते हुए हत्या भी हो गई। इससे बिस्मिल का मन बहुत क्षुब्ध हुआ और आईन्दा ऐसी डकैती न डालने का निश्चय कर अब सरकारी खजाना लूटने की योजना बनी। एक बैठक में बिस्मिल ने प्रस्ताव रखा कि काकोरी से ट्रेन द्वारा जाने वाले खजाने को लूटा जाये। बैठक में उपस्थित सभी साथी सहमत थे लेकिन अशफाक ने यह कहते हुए इस प्रस्ताव का जोरदार विरोध किया कि अभी हमारी ताकत अंग्रेज सरकार से सीधे लड़ने की नहीं है और खजाना लुटने के बाद पुलिस हमारे पीछे पड़ जायेगी और दल बिखर जायेगा। इस पर अशफाक को कायर और मृत्यु से डरने वाला कहा गया। अन्ततः अशफाक ने सहमति देते हुए कहा कि वह मौत से नहीं डरते और यह समय ही तय करेगा। तो योजना अनुसार 9 अगस्त की शाम को '8 डाउन लखनऊ-सहारनपुर पैसेन्जर ट्रेन'' में 10 क्रान्तिकारी सवार हुए। जैसे ही काकोरी से खजाना लादकर ट्रेन आगे बढ़ी तो राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी ने जंजीर खींच दी। अशफाक ने लपक कर ड्राईवर की कनपटी में माउजर धर दिया। गार्ड ने मुकाबला करने की कोशिश की लेकिन बिस्मिल ने उसे जमीन पर औंधे मुंह गिरा कर काबू में कर लिया। खजाने की तिजोरी उतारी गई लेकिन तमाम कोशिशों के बावजूद भी ताले नहीं खुले। समय जाता देख अशफाक ने अपनी माउजर मन्मथनाथ गुप्त को पकड़ा कर घन से तिजोरी तोड़ने को पिल पड़े। अशफाक के जोरदार प्रहारों से तिजोरी में एक बड़ा छेद हो गया। चांदी के सिक्के और रुपया, जो लगभग चार हजार रुपये था, चादरों में समेटा गया और निकल गये। लेकिन जल्दबाजी में एक चादर छूट गई जो बाद में पुलिस की खोजबीन में क्रान्तिकारियों को पकड़ने का अहम जरिया बनी। इस घटना से अंग्रेज सरकार की बहुत किरकिरी हुई और क्रान्तिकारियों को पकड़ने के लिए ईनाम घोषित किये गये। पुलिस की जांच एवं खुफिया खोजबीन से पूरे देश में एक साथ 26 सितम्बर, 1925 को क्रान्तिकारियों के कई ठिकानों पर छापा मारकर 40 क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार किया गया। लेकिन पुलिस तब भी अशफाक और चन्द्रशेखर आजाद को पकड़ने में नाकाम रही। अशफाक पुलिस को चकमा देकर नेपाल चले गये। वहां से कानपुर आकर गणेश शंकर विद्यार्थी के प्रेस में भी रहे फिर बनारस, राजस्थान, बिहार, भोपाल होते हुए दिल्ली पहुंचे।

उनकी योजना पासपोर्ट बनवाकर देश से बाहर जाने की थी। लेकिन दिल्ली में जिस मित्र के घर ठहरे थे, उसके विश्वासघात के कारण खुफिया पुलिस अधिकारी इकरामुल हक द्वारा पकड़े गये। हालांकि अदालत द्वारा काकोरी काण्ड का फैसला 6 अप्रैल, 1926 को दिया जा चुका था। लेकिन अशफाक और शचीन्द्रनाथ बख्शी के विरुद्ध फिर से पूरक केस दायर किया गया। जिसका फैसला 13 जुलाई को आया जिसमें रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी और ठाकुर रोशन सिंह को फांसी एवं 16 अन्य को चार वर्ष से लेकर काले पानी तक की सजाएं दी गईं। अदालत के आदेश का पालन करते हुए 19 दिसम्बर, 1927, सोमवार को फैजाबाद जेल में अशफाक को फांसी दे दी गई। उनके अंतिम शब्द थे -

'उरूजे कामयाबी पर कभी हिंदोस्तां होगा।
रिहा सैय्याद के हाथों से अपना आशियां होगा।
कभी वह दिन भी आएगा जब अपना राज देखेंगे,
जब अपनी ही जमीं होगी और अपना आसमां होगा।'

वीर शिरोमणि अशफाक उल्ला खां हमारे दिलों में हमेशा जीवित रहेंगे।

'गोवा क्रांति' राष्ट्रवादी विचारों का था संकल्प

गोवा मुक्ति दिवस

डॉ. रमेश ठाकुर
लेखक राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान के सदस्य हैं।

'गोवा' को आजाद हुए आज 64 वर्ष पूरे हो गए। इस दिन को 'गोवा मुक्ति दिवस' के रूप में सालाना 19 दिसंबर को मनाया जाता है। दरअसल, 'मुक्ति दिवस' एक ऐसा राष्ट्रवादी विचारों वाला एहसास है जो प्रत्येक भारतीयों के भीतर अपने हक-हुकूक और अधिकारों से लड़ने को न सिर्फ प्रेरित करता है, बल्कि सहासिक संबल भी प्रदान करता है। 15 अगस्त 1947 में जब पूरा मुल्क स्वतंत्रता का उत्सव मना रहा था, तब गोवा पुर्तगाली शासन की जंजीरों में जकड़ा था। गोवा मुक्ति दिवस इसी ऐतिहासिक अन्याय के अंत और गोवा की वास्तविक आजादी का जुनून है। गोवा भारत की आजादी के 14 वर्ष बाद मुक्ति हुआ था। उसी मुक्ति को 'गोवा क्रांति' भी कहते हैं जिसका आज 64 वां संस्करण समूचे भारत में मनाया जा रहा है। दिसंबर की 19 तारीख गोवा की आजादी के लिए सैन्य बल और क्रांतिकारियों ने मिलकर मुकर्रर थी। ये तारीख पुर्तगाली औपनिवेशिक शासन के अंत और हिंदुस्तानी सशस्त्र बलों के साहसिक बल का प्रतीक है।

गौरतलब है कि 16वीं शताब्दी से पुर्तगालियों ने गोवा पर कब्जा करना आरंभ कर दिया था। साल-1498 में 'वास्को डी गामा' समुद्री मार्ग से भारत पहुंचकर पुर्तगालियों को धीरे-धीरे भारत के तटीय क्षेत्रों में बसाना शुरू कर दिया था। उसके बाद उन्होंने अपने व्यापारिक और राजनीतिक किले बनाने आरंभ किए। धीरे-धीरे उन्होंने अपना मजबूत वर्चस्व स्थापित कर लिया। लेकिन उनके साम्राज्य का 1961 में अंत कर दिया गया। गोवा को आजाद कराने के लिए भारतीय सैन्य अभियान इतना तेज शुरू हुआ कि उसके सामने पुर्तगाली सेना महज कुछ ही घंटे टिक सकी। अभियान के बीच में ही पुर्तगाल के करीब 10 हजार सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर अपने हथियार जमीन पर डाल दिए थे। वर्ष-1961 में भारतीय सेना ने अपने अदम शौर्य से 'ऑपरेशन विजय' के तहत गोवा को करीब 450 साल के पुर्तगाली शासन से मुक्त कराया। भारतीय सेना ने लगभग 36 से 40 घंटे बिना रुके सैन्य अभियान चलाकर गोवा, दमन और दीव को पुर्तगालियों के चुंगल से छुड़वाने में अप्रत्याशित सफलता अर्जित की थी।

मुक्ति के उपरांत 1987 में गोवा को भारत का 25वां राज्य घोषित किया गया। गोवा सन् 1510 से लेकर 1961 तक पुर्तगालियों के कब्जे में रहा। पुर्तगाली किसी भी सूरत में गोवा को नहीं छोड़ना चाहते थे। गोवा की प्राकृतिक सुंदरता और कुदरती संपदा उन्हें जकड़ी हुई थी। अंग्रेजी हुकूमत से भारत को आजादी बेशक 1947 में मिल गई लेकिन गोवा तब भी पुर्तगालियों का गुलाम रहा। इसलिए उस वक्त हम भारत को पूर्ण आजाद नहीं मानते थे, क्योंकि हमारा एक महत्वपूर्ण हिस्सा हमसे तब भी दूर था। भारत की आजादी के लिए स्वतंत्रता संग्राम 1940 के दशक में शुरू हुआ था जिसमें डॉ. राम मनोहर लोहिया ने 1946 में लोगों को पुर्तगालियों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया। लोगों ने उनके आहवान को स्वीकारा। गोवा मुक्ति की लड़ाई राष्ट्रवादी विचारों से प्रभावित लोगों ने सामुहिक रूप से लड़ी, जिसका नजीता ये निकला कि गोवा मुक्त हुआ।

गोवा को मुक्त करवाने के लिए क्रांतिकारियों ने सबसे पहले अहिंसा, शांति पाठ और कूटनीतिक रास्ता अपनाया। लेकिन उनकी उदारता का पुर्तगाल सेना ने नाजायज फायदा उठाकर अपना दमन जारी रखा। हारकर फिर आंदोलनकारियों ने अपने हाथों में हथियार उठाए। 1947 के बाद गोवा में स्वतंत्रता की भावना और तेज हुई। गोवा मुक्ति को लेकर आंदोलन न सिर्फ गोवा में हुए बल्कि पूरे देश में तेज हुए। डॉ. राम मनोहर लोहिया जैसे राष्ट्रीय नेताओं ने गोवा आकर आंदोलन की दिशा को और धार दी। कई गुमनाम क्रांतिकारी भी कूदे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने भी मोर्चा संभाला। सत्याग्रह, विरोध प्रदर्शन और जनसभाओं के जरिए पुर्तगाली शासन के खिलाफ आवाज उठाई। पुर्तगाली सरकार ने आंदोलन को कठोरता से दबाने का प्रयास किया, कई स्वतंत्रता सेनानियों को जेल में डालकर उनपर अनैतिक अत्याचार और जुल्म भी किए। उसके बाद भारत सरकार ने सेना को लगाया। सेना ने 'ऑपरेशन विजय' चलाकर पुर्तगालियों की कमर तोड़कर उनके सभी नापाक मंसूबों को चकनाचूर कर दिया।

गोवा की आजादी के लिए 'ऑपरेशन विजय' बहुत निर्णायक साबित हुआ था। 17 दिसंबर 1961 को ऑपरेशन आरंभ किया गया था। ऑपरेशन में भारतीय थल सेना, नौसेना और वायु सेना के लगभग 30,000 सैनिक शामिल थे। भारतीय सेना ने रणनीति के तहत पुर्तगालियों के मुख्य मार्गों पर सबसे पहले नियंत्रण किया। ऐसी तस्वीरें देखकर गोवा में प्रवेश करने वाले मुख्य मार्ग को पुर्तगालियों ने धमाके से उड़ा दिया था, ताकि वह घुस न पाएं, लेकिन भारतीय सैनिक फिर भी नहीं रूके, आगे बढ़ते गए। उसके बाद भारतीय वायु सेना ने भी पुर्तगालियों के ठिकानों पर जमकर बमबारी की और थल सेना ने चारों ओर से मोर्चा संभाला। उसके बाद पुर्तगालियों ने महसूस किया कि अब वो टिक नहीं पाएंगे। तभी पुर्तगाली गवर्नर 'मेन्यू वासलो डे सिल्वा' ने औपचारिक रूप से घुटने टेककर समर्पण पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए और अपने बोरी बिस्तरा बांधकर वापस जाने शुरू हुए। गोवा मुक्ति दिवस की यादें हर भारतीयों को सदैव देशभक्ति और एकता का पाठ पढ़ाती रहेंगी।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

बदहाल साल: गुजरते 2025 की व्यंग्य पड़ताल

व्यंग्य

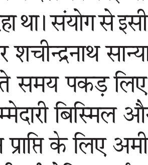

विनोद कुमार विक्की
लेखक व्यंग्यकार हैं।

वर्ष 2025 भारतीय इतिहास में उस ब्लॉकबस्टर फिल्म की तरह दर्ज हुआ, जिसमें निर्देशक बदलते रहे, पटकथा रोज़ लिखी गई, कलाकार खुद ही डायलॉग बोलते रहे और दर्शक बेचारे टिकट लेकर भी हॉल से बाहर नहीं निकल पाए। इसमें कहानी थी, सस्पेंस था, रोमांस था, एक्शन था, थ्रिलर था—और सबसे बड़ी बात, ना इंटरवल था और ना चैनल बदलने का विकल्प, क्योंकि पूरा देश ही सिनेमा हॉल और देशवासी दर्शक बना हुआ था।

फिल्म की ओपनिंग भव्य रही। प्रयागराज महाकुंभ में लगभग पैंसठ करोड़ श्रद्धालुओं ने पाप-विमोचन के लिए आस्था की डुबकी लगाई। कुछ श्रद्धालु ऐसे भी थे जिन्होंने मनका विक्रेता मोनालिसा की आँखों में डुबकी लगाकर वैतरणी पार करने का शॉर्टकट खोज लिया। भक्ति, भावुकता और व्यूअरशिप–तीनों का त्रिवेणी संगम हुआ। कैमरे भी श्रद्धा में लीन थे, बस लाइक-शेयर बाकी रह गया था। लेकिन जैसे हर मसाला फिल्म में होता है, शांत भक्ति के बाद एक्शन सीन ज़रूरी था। महाकुंभ, दिल्ली स्टेशन, रथ यात्रा की भगदड़, एयर इंडिया प्लेन क्रैश, पहलगाम आतंकी हमला, यूपी, एमपी व बंगाल की हिंसा और दिल्ली ब्लास्ट ने वर्ष को 'धमाकेदार' बना दिया। इन घटनाओं से देश थोड़ी देर के लिए जरूर थमा लेकिन माननीय का चुनावी दौरा और विदेश यात्रा बदस्तूर जारी रहा। दर्शक कन्फ्यूज़ हो गए कि यह ब्रेकिंग न्यूज़ है या अगली वेब सीरीज़ का ट्रेलर।

डायलॉगबाज़ी भी दमदार रही। पिछले साल के 'बंटोगे तो कटोगे' के बाद इस वर्ष 'आई लव मोहम्मद' और 'आई लव महादेव' जैसे नारे राष्ट्रीय स्तर पर रिलीज़ हुए। SIR, शरबत जिहाद, टैरिफ, जीएसटी और जेन-जी जैसे शब्द चर्चा में रहे, तो बाबाजी और नेताओं का बड़बोलापन भी सुर्खियों में रहा। इधर मोस्ट बैचलर राहुल गांधी और सलमान खान को इस वर्ष भी दुल्हन नहीं मिल पाई, उधर वक्फ संशोधन विधेयक और एसआईआर प्रक्रिया–सबने मिलकर गॉसिप चैनलों की टीआरपी को दुल्हन बना दिया। कपिल शर्मा के शो में हँसी की बौछार कम और उसके कैफे पर गोलियों की बौछार ज्यादा चर्चा में रही।

इंटरनेशनल फ्रेम में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प 'ग्लोबल फ़ूफ़ा' की भूमिका निभाते हुए नोबेल की तलाश में भटकते रहे, लेकिन भारतीय कूटनीति और नार्वेजियन नोबेल कमेटी ने मोगेंबो को 'खुश' होने का मौका ही नहीं दिया। टैरिफ की आड़ में ट्रंप भारत के पीछे ऐसे लगा जैसे कुत्तों के पीछे दिल्ली कोर्ट। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान और एशिया कप मैच के दौरान हमने पाकिस्तान को जम कर कूटा। दूसरे शब्दों में कहें तो कूटनीति का यह मल्टी-स्टारर सीन था।

रोमांस और थ्रिलर ने भी दर्शकों को निराश नहीं किया। समधी-समधन, चाची-भतीजा और सास-दामाद की प्रेमकथाएँ ट्रेंड में रहीं, जबकि शादीशुदा पुरुषों के जीवन में राहु-केतु साथ-साथ गोचर करते दिखे। 'वो' के चक्कर में नीला ड्रम और हॉरर हनीमून जैसी घटनाएँ सस्पेंस को चरम पर ले गईं। हसीन दिलरुबा का कातिलाना अंदाज ने नवविवाहिता को दुल्हन कम, संदिग्ध पात्र ज्यादा बना दिया।

मीडिया ने हमेशा की तरह 'सबसे तेज' बनने की होड़ में वीरू पाजी को वास्तविक देहांत से लगभग एक माह पहले ही श्रद्धांजलि दे डाली। औरंगज़ेब और डकैत रहमान की भूमिकाओं से प्रभावित अक्षय खन्ना बिना ट्रायल कुछ वर्गों के लिए अंतरराष्ट्रीय खलनायक बन गए, जबकि पाँच पतियों के चक्कर में फंसा कपिल शर्मा अगले साल तक यही सोचता रहेगा कि किस-किस को प्यार करूं! खेल और राजनीति भी स्पोर्टिंग रोल में पीछे नहीं रहे। आईपीएल में बंगलुरु की जीत के जश्न में फैंस ने कुर्बानी दे डाली। बिहार चुनाव में दो हज़ार पच्चीस से दो हजार तीस फिर से नीतीश की रीबूकिंग हुई, हालांकि चुनाव के दौरान मछली पालन नौटंकी, टिकट कटवा ड्रामा और गाली-गलौज का फुल पैकेज मिला। गाने की कमी को बिहार के क्षेत्रीय गायकों ने पूरा करने का भरसक प्रयास किया। यह और बात है कि इनके गीत का केंद्र ढोंढी (नाभि), होठ की बजाय राजनीतिक पार्टी और जाति विशेष रहा। पटना पुस्तक मेला में पंद्रह करोड़ की पुस्तक 'आई' स्टडी की बजाय सेल्फी के कारण चर्चा में आई। अंतिम सीन में हवाई चप्पल पहनने वाले की हवाई यात्रा भले संदिग्ध रही हो, लेकिन इंडिगो फ्लाइट्स ने दिसंबर माह में टाई पहनने वालों को भी हलकान कर दिया। इंडिगो ने यात्रियों के 'गो' पर इंड लगाने का प्रयास किया। इस वर्ष विभिन्न प्रदेशों में चुनाव, बाढ़ एवं अपराध का सीजन सस्पेंस देखने को मिला। बहरहाल दिवालिया वर्ष में दिवाली को यूनेस्को की विश्व धरोहर में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ। कुल मिलाकर, 2025 ने साबित कर दिया कि भारत में मनोरंजन के लिए सिनेमा हॉल की ज़रूरत नहीं-ख़बरें ही काफी हैं। वर्ष 2025 के व्यंग्य मार्ट को यहीं समाप्त किया जाता है, क्योंकि नववर्ष 2026 का लाइव टेलीकास्ट शुरू होने वाला है।

जन्मदिवस विशेष

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं और केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

स्त्रियों के लिए अनुकरणीय प्रतिभा देवीसिंह पाटील

भारत देश अपनी अस्मिता व पहचान के साथ जीता है। इस देश की इस महान सभ्यता को समृद्ध बनाने में हमारे देश की महान विभूतियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। प्रतिभा देवीसिंह पाटील का नाम भी उनमें से एक है जो हमारे देश की प्रथम महिला राष्ट्रपति के रूप में प्रसिद्ध हैं। प्रतिभा देवीसिंह पाटील का जन्म महाराष्ट्र राज्य के जलगाँव जिले में 19 दिसंबर, 1934 को हुआ। श्रीमती पाटिल ने 25 जुलाई 2007 को भारत की 12वीं राष्ट्रपति के रूप में पदभार ग्रहण किया। इस प्रतिष्ठित पद पर भारतीय गणतंत्र के इतिहास में चुनी जाने वाली वह पहली महिला थीं। भारत की राष्ट्रपति चुने जाने से ठीक पहले वे 8 नवंबर 2004 से 21 जून 2007 तक राजस्थान की राज्यपाल रहीं।

आज़ तक अमेरिका जैसे बड़े लोकतांत्रिक देश में कोई भी महिला को राष्ट्रपति पद पर प्रतिष्ठित होने का सौभाग्य नहीं मिला लेकिन भारत एक ऐसा देश है जहाँ 2007 में ही, यानि भारत की आज़ादी के 60 साल पूर्ण होने के साथ श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील इस महान पद पर सुशोभित हुईं। वर्ष 2007 भारत की नारियों के गौरव वर्ष कहा जा सकता है। श्रीमती पाटील आधी आबादी को यह गौरव प्रदान कीं जिनका जीवन ही सादगी, विनम्रता, अनुशासन व शालीनता से भरा रहा है। वह भारत की जुलाई 25, 2012 तक राष्ट्रपति पद पर रहीं और इसके बाद का समय उन्होंने पुणे में रहना पसंद किया। अपने राष्टपति कार्यकाल में श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने कई महत्वपूर्ण फैसले लिया। विभिन्न देशों में वह अपनी यात्रा के दौरान भारतीय सम्मान को बढ़ाई भारतीय गणराज्य की पूरे मनोयोग से सेवा कीं।

मैं स्वयं को सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटील जी के साथ कार्य करने सुअवसर मिला। उनके सान्निध्य में राष्ट्रपति भवन में रहने का सौभाग्य जीवन की ऐतिहासिक यात्रा है और निःसंदेह इस दौरान जो भी हमें उनसे सीखने-समझने का अवसर मिला वह उदाहरणीय, अनुकरणीय एवं अप्रतिम था। सबके जीवन का अपना आदर्श होता है, श्रीमती पाटील का जीवन भी अपने देश के प्रति निष्ठा, समर्पण व ईमानदारी से परिपूर्ण रहा। प्रत्येक दिन उन्होंने किसी न किसी तरह देश के नागरिकों के भले के लिए कार्य किया। वह हर क्षण के महत्व को समझती थीं इसीलिए वह समय की सदैव पाबंद रहीं और राष्ट्रपति भवन में जो कोई भी उनसे मिलने आया, सबके हित में कार्य करती रहीं। उन्होंने स्त्रियों की भलाई के लिए कार्य किया चाहे को-ऑपरेटिव सेक्टर से जुड़ी महिलाएं हों या नशे के खिलाफ आन्दोलन कर रहीं महिलाएं। उन्हें प्रोत्साहित करने से राष्ट्रपति पाटील कभी पीछे नहीं हटीं।

29 नवंबर, 2011 को वह पश्चिम बंगाल में विश्वभारती विश्वविद्यालय में थीं। वहां कुछ महत्वपूर्ण शब्द गुरुदेव टैगोर को स्मरण करते हुए कहा था कि उन्होंने हमेशा मनुष्य को ब्रह्मांड का केंद्र माना। उनका मानना था कि यदि प्रत्येक व्यक्ति पूर्णता प्राप्त करने के लिए अथक प्रयास करे, तो संसार में महान परिवर्तन आएंगे। उनका मानना था कि जीवन में आने वाली निराशाओं और असफलताओं से हमें चिंतित नहीं होना चाहिए, बल्कि इन्हें विकास के अवसर के रूप में लेना चाहिए और अपनी सोच को सीमित करने वाली बाधाओं को तोड़ना चाहिए। प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने टैगोर के उस महान कथ्य को तो 2011 में उद्धृत किया लेकिन सच यही है कि प्रतिभा जी ने स्वयं अपने जीवन को कुछ इस तरह का बनाया और देश के सर्वोच्च पद तक हर बाधाओं को तोड़ते हुए पहुंची भी। वह मानती थीं की रचनात्मकता भी जीवन में ज़रूरी है। बिना रचनात्मक हुए कुछ भी उपलब्धियां मिल नहीं सकतीं। कुरुक्षेत्र

विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह था फरवरी 2012 में। इस अवसर पर प्रतिभा जी ने कहा था कि रचनात्मक चिंतन और विचारों का केंद्र मनुष्य ही हैं, जो मन और हृदय, भौतिक और आध्यात्मिक, सभी क्षेत्रों में अनेक परिवर्तन ला सकते हैं।

वस्तुतः मनुष्य के भीतर जिस प्रकार के अंतर्संघर्ष जीवन में होते हैं उसे वह जानती थीं। उनका मानना था कि मनुष्य अपनी संभावनाओं को यदि समझ ले तो यह देश तरक्की की राह बढ़ चलेगा। मनुष्य सभी शक्तियों से संपन्न है बस उसके भीतर का जो विश्वास है वही यदि अपना स्वरूप पा ले और वह अपने विश्वास के साथ आगे बढ़े तो हर सफलता उसके क़दमों में होगी। इस प्रकार प्रतिभा देवीसिंह पाटील जी का चिंतन बहुत ही रचनात्मक, संभावनाओं से परिपूर्ण और उत्साहयुक्त रहा है। वह मनुष्य के भीतर एक श्रेष्ठ करुणामाय, शीलयुक्त मनुष्य गढ़ने की क्षमता रखती हैं। अपने सुदीर्घ सार्वजनिक जीवन में वह निरंतर मनुष्य निर्माण के लिए सतत प्रयत्नशील रहीं। महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण के लिए उन्होंने कार्य किया। महिलाओं के उत्थान व सम्मान के लिए उन्होंने कार्य किया। महिलाओं की जनभागीदारी को प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने सुनिश्चित किया। कई सार्वजानिक महत्व के संस्थाओं का उन्होंने निर्माण किया और निःशुल्क गर्ल्स छात्रावास जैसे प्रकल्पों को उन्होंने आधारशिला रखी।

अपनी निजी ज़िन्दगी में प्रतिभा देवीसिंह पाटील पारिवारिक जिम्मेदारियों का भी निर्वाह कीं। उनका विवाह डॉ. देवीसिंह शेखावत के साथ हुआ था और वे भी अमरावती के प्रथम मेयर रहे। शिक्षाविद थे। वैज्ञानिक थे और एक श्रेष्ठ सहयोगी स्वाभाव के राजनेता भी थे। कुछ समय तक डॉ. शेखावत को महाराष्ट्र राज्य की विधान सभा के अध्यक्ष होने का भी सौभाग्य मिला। प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने अपने जीवन में अपने पिताश्री को गौरवबोध तो कराती रहीं जब वह अध्ययन कर रही थीं तब या जब उन्हें कम उम्र में विधायक बनने का सौभाग्य मिला तब लेकिन अपनी ससुराल में भी उन्होंने जितनी उपलब्धियां अर्जित कीं वह कोई कम गौरव के क्षण नहीं थे। उनकी सुपुत्री ज्योति व सुपुत्र राजेंद्र शेखावत रावसाहेब को भी अपनी माँ पर गर्व करने का सौभाग्य मिला।

भारतीय विदुषियों की गाथाएं इतिहास में जिस प्रकार सुनहरे अक्षरों में अंकित हैं जिसमें भारत शब्द आने पर अपाला, गार्गी से लेकर अहिल्याबाई होल्कर तक की चर्चा होती है। आने वाले समय में जब हमारी पीढ़ियाँ भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति का नाम लेगा तो वही आदर होगा क्योंकि प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने राष्ट्रपति पद पर सुशोभित होकर जो गौरव भारत को दिलाया है, वह बहुत ही उल्लेखनीय है। वह करुणा की प्रतिमूर्ति हैं। सच बोलना व सुनना उन्हें अच्छा लगता है। अपनी प्रशंसा उन्हें रंच मात्र भी पसंद नहीं थी। सादगी और अपनी जमीन से उन्हें हमेशा प्यार रहा। उन्हें दिल्ली ने कभी नहीं रिझाया। जब वह राष्ट्रपति पद से मुक्त हुईं तो उन्होंने पुणे में रहने में प्रसन्नता व्यक्त की। सार्वजनिक कार्यक्रमों में 2012 के बाद भी वह निरंतर हिस्सा लेती रहीं और जहाँ कहीं भी अवसर मिला वह सबके उन्नति के लिए, सबके उत्थान के लिए अपने प्रेरणादायक शब्दों से जीवन को जीवंत बनाने का संदेश देती रहीं हैं। अपने इस जन्मोत्सव पर भी वह दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, मेरी ऐसी मंगलकामनाएं हैं। उनके सुदीर्घ जीवन में स्वस्थ व प्रसन्न बने रहना व उनकी उपस्थिति हर समय भारत की महिलाओं को उत्साह से भर देती है और श्रेष्ठ उपलब्धियों को हासिल करने के लिए प्रेरित करती हैं, इसलिए भी उनके सर्वोत्तम जीवन की कामना होनी चाहिए। मुझे स्मरण आ रहा है उनके राष्ट्रपति पद पर रहते हुए 24 जुलाई, 2012 का भाषण जिसमें उन्होंने कहा था हमें यह भी याद रखना चाहिए कि राष्ट्र निर्माण का कार्य कभी समाप्त नहीं होता। पीढ़ियाँ आती हैं और जाती हैं, लेकिन राष्ट्र का जीवन निरंतर चलता रहता है। प्रत्येक पीढ़ी को अपने समय में गुणात्मक परिवर्तन लाना चाहिए। आज ज़रूरत इस बात की है कि हम यदि अपने राष्ट्र को उन्नत होना देखना चाहते हैं तो प्रतिभा जी के इन शब्दों की गंभीरता को समझें और देश के लिए कार्य करें।

काकोरी शहीद दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

काकोरी कांडः आजादी के संघर्ष का अमर अध्याय

बीसवीं सदी के प्रारंभिक दशकों में भारत का राजनीतिक परिदृश्य तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन ने देश में जन-जागरण की लहर पैदा की थी। 1920 में शुरू हुआ यह आंदोलन ब्रिटिश शासन के लिए एक गंभीर चुनौती बन गया था लेकिन फरवरी 1922 में चौरी-चौरा कांड के बाद गांधी जी द्वारा आंदोलन वापस लिए जाने से देश के एक बड़े वर्ग, विशेषकर युवा क्रांतिकारियों में गहरी निराशा फैल गई। वे मानते थे कि जब अंग्रेज दमन और हिंसा का सहारा ले रहे हैं, तब केवल अहिंसा के माध्यम से आजादी पाना कठिन है। यही वह ऐतिहासिक मोड़ था, जहां से संगठित क्रांतिकारी आंदोलन ने नई दिशा पकड़ी। निराश लेकिन दृढ़ निश्चयी युवाओं ने यह ठान लिया कि वे किसी भी कीमत पर स्वतंत्रता के लक्ष्य से पीछे नहीं हटेंगे। इसी सोच के परिणामस्वरूप 1923 में शचीन्द्रनाथ सान्याल के नेतृत्व में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचआरए) की स्थापना हुई। इस संगठन का उद्देश्य केवल ब्रिटिश शासन का विरोध करना नहीं बल्कि एक ऐसे स्वतंत्र, गणराज्यात्मक भारत की स्थापना करना था, जहां शोषण और अन्याय का कोई स्थान न हो।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल राजनीतिक आंदोलनों, प्रस्तावों और समझौतों का क्रम नहीं है बल्कि यह उन असंख्य क्रांतिकारियों की त्यागमयी गाथा भी है, जिन्होंने मातृभूमि की आजादी के लिए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया। इन बलिदानों ने गुलामी की जड़ों को भीतर से हिलाया और जनता के मन में यह विश्वास जगाया कि अंग्रेजी हुकूमत अजेय नहीं है। ऐसी ही एक ऐतिहासिक और निर्णायक घटना है काकोरी कांड, जिसने न केवल ब्रिटिश सत्ता को गहरी चुनौती दी बल्कि भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन को एक नई दिशा और ऊर्जा प्रदान की। काकोरी कांड भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का वह अध्याय है, जिसने यह सिद्ध कर दिया कि आजादी केवल याचिकाओं और प्रार्थनाओं से नहीं मिलेगी बल्कि उसके लिए साहस, संगठन और बलिदान की आवश्यकता होगी। यही कारण है कि काकोरी कांड में शामिल क्रांतिकारियों को केवल इतिहास के पात्र नहीं बल्कि क्रांति की नींव रखने वाले शूरवीर माना जाता है। उनकी शहादत की स्मृति में हर वर्ष 19 दिसम्बर को काकोरी शहीद दिवस मनाया जाता है, जो हमें स्वतंत्रता की कीमत और उसकी रक्षा की जिम्मेदारी का बोध कराता है।

बीसवीं सदी के प्रारंभिक दशकों में भारत का राजनीतिक परिदृश्य तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन ने देश में जन-जागरण की लहर पैदा की थी। 1920 में शुरू हुआ यह आंदोलन ब्रिटिश शासन के लिए एक गंभीर चुनौती बन गया था लेकिन फरवरी 1922 में चौरी-चौरा कांड के बाद गांधी जी द्वारा आंदोलन वापस लिए जाने से देश के एक बड़े वर्ग, विशेषकर युवा क्रांतिकारियों में गहरी निराशा फैल गई। वे मानते थे कि जब अंग्रेज दमन और हिंसा का सहारा ले रहे हैं, तब केवल अहिंसा के माध्यम से आजादी पाना कठिन है। यही वह ऐतिहासिक मोड़ था, जहां से संगठित क्रांतिकारी आंदोलन ने नई दिशा पकड़ी। निराश लेकिन दृढ़ निश्चयी युवाओं ने यह ठान लिया कि वे किसी भी कीमत पर स्वतंत्रता के लक्ष्य से पीछे नहीं हटेंगे। इसी सोच के परिणामस्वरूप 1923 में शचीन्द्रनाथ सान्याल के नेतृत्व में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचआरए) की स्थापना हुई। इस संगठन का उद्देश्य केवल ब्रिटिश शासन का विरोध करना नहीं बल्कि एक ऐसे स्वतंत्र, गणराज्यात्मक भारत की स्थापना करना था, जहां शोषण और अन्याय का कोई स्थान न हो।

एचआरए के प्रमुख सदस्यों में राम प्रसाद बिस्मिल, योगेशचंद्र चटर्जी, शचीन्द्रनाथ बख्शी जैसे साहसी क्रांतिकारी शामिल थे। बाद में चंद्रशेखर आजाद और भगत सिंह जैसे तेजस्वी क्रांतिकारी भी इस विचारधारा से जुड़े। संगठन का स्पष्ट मत था कि क्रांति के लिए संसाधन चाहिए और संसाधनों के लिए धन। लेकिन चंदा मांगना न केवल संगठन की गोपनीयता को खतरे में डाल सकता था बल्कि अंग्रेजी खुफिया तंत्र को भी सतर्क कर सकता था। ऐसे में निर्णय लिया गया कि ब्रिटिश सरकार के ही खजाने को निशाना बनाया जाए। इस विचार को कार्यरूप देने की जिम्मेदारी संगठन के सेनापति पं. राम प्रसाद बिस्मिल को सौंपी गई। प्रारंभिक प्रयासों में क्रांतिकारियों ने कुछ धन जुटाने की कोशिश की, लेकिन वह हथियारों और क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए पर्याप्त नहीं था। अंततः यह निर्णय लिया गया कि सीधे सरकारी खजाने पर हाथ डाला जाए। यह फैसला न केवल साहसिक था बल्कि अत्यंत जोखिम भरा भी, क्योंकि असफलता की स्थिति में इसका परिणाम मृत्यु या आजीवन कारावास हो सकता था। 8 अगस्त 1925 को बिस्मिल के घर एक गुप्त बैठक हुई, जिसमें ब्रिटिश सरकार के खजाने को लूटने की विस्तृत योजना बनाई गई। अगले ही दिन

9 अगस्त 1925 को एचआरए के दस क्रांतिकारी सहारनपुर-लखनऊ पैसेंजर ट्रेन में सवार हुए। इनमें राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, चंद्रशेखर आजाद, राजेंद्र लाहिड़ी, शचीन्द्रनाथ बख्शी, मन्मथनाथ गुप्त, मुरारी शर्मा, बनवारी लाल, केशव चक्रवर्ती और मुकुंदी लाल शामिल थे। लखनऊ के निकट काकोरी रेलवे स्टेशन के पास ट्रेन की चेन खींचकर उसे रोका गया। योजना के अनुसार, राजेंद्र लाहिड़ी ने नेतृत्व संभाला और कुछ ही क्षणों में सरकारी खजाने को कब्जे में ले लिया गया। यह कार्रवाई इतनी सुनियोजित थी कि यात्रियों को अधिक नुकसान नहीं हुआ। हालांकि दुर्भाग्यवश एक आकस्मिक गोली चलने से एक यात्री की मृत्यु हो गई, जिसे बाद में ब्रिटिश सरकार ने पूरे मामले को और अधिक संगीन बनाने के लिए प्रमुख आधार बनाया।

इस लूट में कुल 4601 रुपये प्राप्त हुए, जो उस समय एक बड़ी राशि थी। अगले ही दिन यह खबर अखबारों के माध्यम से पूरे देश और विदेश में फैल गई। लंदन के हाउस ऑफ कॉमन्स तक में इस घटना की चर्चा हुई। ब्रिटिश सरकार हिल गई और उसने इसे अपनी सत्ता के लिए खुली चुनौती माना। इसके बाद जो दमनचक्र चला, वह भारतीय इतिहास के सबसे कठोर अभियानों में से एक था। ब्रिटिश सरकार ने एचआरए के लगभग 40 क्रांतिकारियों के खिलाफ मुकदमा चलाया। लंबी सुनवाई और कठोर पूछताछ के बाद अंग्रेजी अदालत ने चार क्रांतिकारियों को फांसी की सजा सुनाई। राजेंद्रनाथ लाहिड़ी को 17 दिसम्बर 1927 को गोंडा जेल में फांसी दी गई। इसके दो दिन बाद 19 दिसम्बर 1927 को राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान और रोशन सिंह को अलग-अलग जेलों में फांसी दे दी गई। इन फांसियों ने पूरे देश को झकझोर दिया। हिंदू-मुस्लिम एकता की अद्भुत मिसाल बने बिस्मिल और अशफाक की मित्रता ने यह सिद्ध कर दिया कि स्वतंत्रता संग्राम किसी एक धर्म या समुदाय का नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र का संघर्ष था। उनकी शहादत ने असहयोग आंदोलन के बाद ठहर गई क्रांतिकारी चेतना को फिर से प्रज्वलित कर दिया।

काकोरी कांड का सबसे अनछुआ पहलू यह है कि यह केवल धन लूट की घटना नहीं थी बल्कि यह एक वैचारिक विद्रोह था, जिसका उद्देश्य अंग्रेजी शासन की नैतिक वैधता को चुनौती देना और यह संदेश देना था कि भारत अब दासता स्वीकार नहीं करेगा। इस घटना ने आगे चलकर भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं को भी गहराई से प्रभावित किया। आज, जब हम काकोरी शहीद दिवस मनाते हैं तो यह केवल अतीत को स्मरण करने का अवसर नहीं है बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए प्रेरणा लेने का दिन है। काकोरी के शूरवीरों ने हमें सिखाया कि स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं बल्कि कर्त्तव्य भी है उसकी रक्षा का, उसकी गरिमा बनाए रखने का। काकोरी कांड के शहीदों का बलिदान भारतीय इतिहास में सदैव अमर रहेगा। उनका साहस, त्याग और राष्ट्रप्रेम आने वाली पीढ़ियों को यह याद दिलाता रहेगा कि भारत की आजादी यूं ही नहीं मिली बल्कि इसके पीछे अनगिनत वीरों का लहू बहा है। भारत आज भी उनका ऋणी है और सदैव रहेगा।

जासूसी परंपरा

रागिनी श्रीवास्तव

लेखक कनाडा निवासी साहित्यकार हैं।

हैकर्स, ड्रोन और डेटा बदले जमाने के जासूस

भारत में कौटिल्य के अर्थशास्त्र में जासूसों का अत्यंत विस्तृत और व्यवस्थित वर्णन मिलता है। कौटिल्य ने राज्य की स्थिरता के लिए गुप्तचर तंत्र को 'राज्य की आँख और कान' कहा। उनके अनुसार साधु, व्यापारी, कलाकार और दूत भेष बदलकर शत्रु राज्य में जाकर आवश्यक सूचनाएँ एकत्र करते थे। चीन की सभ्यता में सुन त्ज़ू के 'आर्ट ऑफ वॉर' में भी पाँच प्रकार के जासूसों का उल्लेख मिलता है, जो युद्ध-रणनीति का महत्वपूर्ण अंग थे। इसी प्रकार रोमन साम्राज्य, मिस्र की सभ्यता और मंगोल साम्राज्य में भी जासूसी युद्ध-नीति का अनिवार्य हिस्सा रही। मध्यकाल में जासूसी व्यवस्था संगठित रूप से सामने आयी।

फिल्म 'धुरंधर' आजकल काफी चर्चा का विषय बनी हुई है। यह एक जासूसी-क्राइम थ्रिलर है इसकी कहानी एक ऐसे भारतीय एजेंट पर आधारित है, जो जासूसी के उद्देश्य से एक गुप्त मिशन पर पाकिस्तान जाता है। वहाँ वह आतंकवादी संगठनों से जुड़ी अहम जानकारियाँ जुटाता है। दुश्मन देश में जाकर जासूसी करने का,एक नया आयाम देखकर जासूसी के बदलते स्वरूप पर विचार करते हुए मुझे अपना छात्र जीवन याद आ गया जब हम लोग विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के साथ जासूसी उपन्यासों को पढ़ने के लिए अत्यंत उत्सुक रहा करते थे। विशेष रूप से ओमप्रकाश शर्मा, और वेद प्रकाश कम्बोज के जासूसी उपन्यास जिसमें उनके द्वारा रचित पात्र विजय रघुनाथ जो एक सच्चे देशभक्त और भारतीय सीक्रेट सर्विस के सदस्य थे, अपनी जानबूझकर की गई 'बेवकूफी भरी' हरकतों से दुश्मनों को भ्रमित कर अंततः उन्हें पराजित कर देते थे। उनकी यही झकझकी और चतुराई हम मित्रों के बीच विशेष मनोरंजन और चर्चा का विषय रहती थी। इन पात्रों में बुद्धिमत्ता, देशभक्ति और रहस्य सुलझाने की अद्भुत क्षमतास्पष्ट रूप से झलकती थी।

'करमचंद' भी भारतीय दूरदर्शन का एक अत्यंत लोकप्रिय जासूसी धारावाहिक और पात्र था। जो गाजर खाते खाते अपनी तीक्ष्ण बुद्धि, साहस और अनोखी कार्यशैली के द्वारा अपराधों को सुलझाते हुए अपराधियों को बेवकूफ बनाकर उन्हें पराजित करता था। करमचंद की कहानियाँ रोमांच और रहस्य से भरपूर होती थी।

पारिभाषिक रूप से जासूस वह गुप्त राष्ट्रसेवक होता है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा और सामरिक हितों की रक्षा हेतु संवेदनशील सूचनाएँ गोपनीय रूप से एकत्र करता है। अतः उसका कार्य राज्य-रक्षा के दायरे में आता है। मानव समाज के विकास के साथ-साथ सूचना का महत्व भी निरंतर बढ़ता गया है। सत्य को जानने की जिज्ञासा, और सत्ता को सुरक्षित रखने की आवश्यकता ने 'जासूस' या 'रहस्य-खोजी' की भूमिका को जन्म दिया।

भारत में कौटिल्य के अर्थशास्त्र में जासूसों का अत्यंत विस्तृत और व्यवस्थित वर्णन मिलता है। कौटिल्य ने राज्य की स्थिरता के लिए गुप्तचर तंत्र को 'राज्य की आँख और कान' कहा। उनके अनुसार साधु, व्यापारी, कलाकार और दूत भेष बदलकर शत्रु राज्य में जाकर आवश्यक सूचनाएँ एकत्र करते थे। चीन की सभ्यता में सुन त्ज़ू के 'आर्ट ऑफ वॉर' में भी पाँच प्रकार के जासूसों का उल्लेख मिलता है, जो युद्ध-रणनीति का महत्वपूर्ण अंग थे। इसी प्रकार रोमन साम्राज्य, मिस्र की सभ्यता और मंगोल साम्राज्य में भी जासूसी युद्ध-नीति का अनिवार्य हिस्सा रही। मध्यकाल में जासूसी व्यवस्था संगठित रूप से सामने आयी। मुगल दरबार में शासन की स्थिरता बनाए रखने के लिए खुफिया-ए-आम' और 'खुफिया-ए-खास' जैसे विभाग सक्रिय थे।

ब्रिटिश शासन के दौरान जासूसी का उपयोग दो प्रमुख स्तरों पर किया गया। भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की गतिविधियों पर निगरानी रखने के लिए और प्रशासनिक नियंत्रण और साम्राज्य को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए।

भारत की स्वतंत्रता के बाद देश की सुरक्षा, राजनीतिक स्थिरता और अंतरराष्ट्रीय खतरों से निपटने के लिए एक सशक्त और संगठित खुफिया तंत्र की आवश्यकता महसूस की गई। स्वतंत्रता के समय भारत के पास केवल इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) था, जो मुख्यतः आंतरिक सुरक्षा तथा राजनीतिक गतिविधियों पर निगरानी रखता था। विदेशी खतरों और अंतरराष्ट्रीय घटनाओं के लिए कोई पृथक व्यवस्था नहीं थी।

1950 और 1960 के दशकों में चीन और पाकिस्तान के साथ बढ़ते तनाव, सीमाई विवाद और वैश्विक शीत युद्ध की परिस्थितियों ने भारत को एक मजबूत विदेशी खुफिया एजेंसी की आवश्यकता का एहसास कराया। 1962 के भारत-चीन युद्ध और 1965 के भारत पाक युद्ध एवं कारगिल युद्ध के दौरान खुफिया सूचनाओं की कमी ने भारत की रणनीतिक कमजोरियों को उजागर किया।

1968 में भारत की प्रमुख बाहरी खुफिया एजेंसी रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (RAW) की स्थापना की गई। RAW का मुख्य उद्देश्य विदेशी सरकारों की नीतियों, सैन्य तैयारियों, आतंकवादी गतिविधियों और अंतरराष्ट्रीय राजनीति तथा कूटनीति से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाएँ एकत्र करना है। इसके साथ ही भारतीय सेना की मिलिट्री इंटेलिजेंस (MI) को भी आधुनिक स्वरूप दिया गया, जिसने सीमाई सुरक्षा और आतंकवाद-रोधी अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आगे चलकर भारत ने DRI, NTRO, NIA, NATGRID जैसी विशिष्ट और तकनीकी एजेंसियों का गठन किया। MAC (Multi-Agency Centre) के माध्यम से विभिन्न खुफिया एजेंसियों के बीच समन्वय को मजबूत किया गया। आज भारत का खुफिया तंत्र बहु-आयामी, संगठित और तकनीकी रूप से सक्षम बन चुका है।

भारतीय जासूसों का मुख्य कार्य देश की सुरक्षा से जुड़ी सूचनाएँ गुप्त रूप से एकत्र करना होता है। इसमें आतंकवादी गतिविधियाँ, विदेशी देशों की नीतियाँ, सैन्य गतिविधियाँ, साइबर खतरे, संगठित अपराध और जासूसी नेटवर्क से संबंधित जानकारी शामिल होती है। जासूसों का जीवन सामान्य नागरिकों जैसा नहीं होता। उन्हें अक्सर अपनी पहचान बदलनी पड़ती है और कई बार वर्षों तक विदेशों में रहकर गुप्त मिशन संचालित करने पड़ते हैं। पकड़े जाने पर वे न अपनी वास्तविक पहचान बता सकते हैं, न ही अपने देश से तत्काल सहायता की उम्मीद कर सकते हैं। कई जासूस गुमनाम रूप से शहीद हो जाते हैं, जिनके बलिदान के बारे में देश को कभी पता भी नहीं चलता। उनका जीवन अत्यधिक अनुशासन, साहस, बुद्धिमत्ता और भावनात्मक दृढ़ता की माँग करता है।

20वीं सदी, विशेष रूप से दोनों विश्व युद्धों के दौरान, जासूसी अत्यधिक तकनीकी और विज्ञान-आधारित हो गई। इस काल मेंः कोड ब्रेकिंग ,वायरलेस संचार ,स्पाई कैमरा , डबल एजेंट ,साइकोलॉजिकल वॉरफेयर जैसे उपकरण और तकनीकें विकसित हुईं। अमेरिका की सीआईए, ब्रिटेन की एमआई6, रूस की केजीबी/एफएसबी, भारत की रॉ, इज़राइल की मोसाद जैसी एजेंसियों ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति और युद्धों में निर्णायक भूमिका निभाई।

21वीं सदी में जासूसी का स्वरूप बुनियादी रूप से बदल चुका है। आज की जासूसी का सबसे महत्वपूर्ण रूप साइबर जासूसी है। इसमें हैकिंग, सर्वर ब्रेकिंग, और संवेदनशील डिजिटल सूचनाओं की चोरी शामिल है। इसके साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस भी अत्यंत प्रभावी साधन बन चुका है, जिसमें मोबाइल फोन ट्रैकिंग, ई-मेल मॉनिटरिंग, सीसीटीवी नेटवर्क और ड्रोन निगरानी के माध्यम से संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखी जाती है।

आतंकवाद-रोधी खुफिया भी आधुनिक जासूसी का प्रमुख हिस्सा है। इसमें आतंकवादी संगठनों की लोकेशन, उनके फंडिंग नेटवर्क, हथियारों की सप्लाई और संपर्क सूत्रों की पहचान की जाती है, ताकि समय रहते हमलों को रोका जा सके। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया मॉनिटरिंग के माध्यम से जनभावनाओं, ट्रेंड्स और फेक न्यूज का विश्लेषण किया जाता है, जिससे समाज को भड़काने वाली गतिविधियों पर नियंत्रण रखा जा सके।

आज का जासूस केवल एक व्यक्ति नहीं रहा, बल्कि तकनीक, एल्गोरिदम और डेटा विश्लेषण का संयुक्त रूप बन चुका है। आधुनिक जासूसी अब केवल युद्ध या राजनीति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका दायरा राष्ट्रीय सुरक्षा, साइबर स्पेस, आर्थिक हितों और वैश्विक कूटनीति तक फैल गया है यह विशेषज्ञों की पूरी टीम का संगठित प्रयास है, जिसमें डेटा साइंटिस्ट, साइबर विशेषज्ञ, भाषा विशेषज्ञ, विश्लेषक और फील्ड एजेंट शामिल होते हैं। जासूसी का स्वरूप समय के साथ बदलता रहा है, किंतु उसका मूल उद्देश्य राष्ट्र और सत्ता की सुरक्षा सदैव समान बना रहा है।

भारतीय जासूस राष्ट्र के 'अनदेखे सुरक्षा कवच' हैं। उनका जीवन अत्यंत कठिन, गुप्त और जोखिमपूर्ण होता है, वे न पुरस्कार की आकांक्षा रखते हैं, न प्रसिद्धि की। उनका एकमात्र उद्देश्य भारत की सुरक्षा होता है। इसलिए हम सभी का कर्तव्य है कि चैतन्य रहकर, इन खामोश , गुमनाम नायकों का सम्मान करे, उनकी संस्थाओं को और अधिक सशक्त बनाए तथा उनके अमूल्य योगदान और बलिदान को समझे । जासूस राष्ट्र की सुरक्षा, स्थिरता और भविष्य का अनिवार्य आधार हैं।

नितिन जी के कुशल नेतृत्व में पार्टी नवीन ऊँचाइयों को स्पर्श करेगी: सावित्री ठाकुर

नवनियुक्त भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नबीन से केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने सौजन्य भेंट कर शुभकामनाएँ दीं

धार। भारतीय जनता पार्टी केंद्रीय कार्यालय नई दिल्ली में बुधवार को मोदी सरकार में केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री धार महू लोकसभा सांसद सावित्री ठाकुर ने भारतीय जनता पार्टी के नवनियुक्त

राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नबीन सौजन्य भेंटकर उन्हें नवीन दायित्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। श्रीमती सावित्री ठाकुर ने कहा कि नितिन जी के कुशल नेतृत्व में पार्टी नवीन ऊँचाइयों को स्पर्श करेगी तथा संगठनात्मक सशक्तिकरण के माध्यम से राष्ट्रसेवा के संकल्प को और अधिक मजबूती मिलेगी। आपकी वैचारिक दृढ़ता, संगठन के प्रति समर्पण और ऊर्जा से भरपूर नेतृत्व आपकी विशिष्ट पहचान है, जो प्रत्येक कार्यकर्ता को सतत प्रेरणा प्रदान करता है।

हिंदू उत्सव समिति गुरु गोविन्दसिंह बस्ती के कार्यक्रम स्थल का भूमिपूजन हुआ

धार। हिंदू उत्सव समिति गुरु गोविन्दसिंह बस्ती के कार्यक्रम स्थल का भूमिपूजन कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम के अतिथि रतन मुँदर (सेवक) द्वारा भूमिपूजन किया गया। कार्यक्रम में संयोजक विक्की जैन, सह संयोजक - नरेश राजपुरोहित, कैलाश पिपलोदिया, कोषाध्यक्ष - राम मित्तल, दीपक बंसल व समिति के सदस्य उपस्थिति रहे। पश्चात कार्यक्रम के प्रारूप की जानकारी दी गई। जानकारी मीडिया प्रभारी किशन द्विवेदी ने दी।

बैतूल में कानून व्यवस्था हुई लचर

● चाकूबाजी, मारपीट की घटनाएं बढ़ीं, लोगों में अपराध को लेकर दहशत ● हत्या के आरोपी गुपचुप का अपहरण कर अन्नू एंड ब्रदर्स ने लहूलुहान होने तक पीटा ● मामले में गंज पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ बीएनएस की धारा 109 में प्रकरण किया दर्ज

एस. द्विवेदी, बैतूल। शहर में कानून व्यवस्था दिनोंदिन लचर होते जा रही है। बीते दो माह में बैतूल शहर में चाकूबाजी और गुंडागर्दी को लेकर लगातार मामले सामने आ रहे है, इससे आम लोगों में दहशत का माहौल है। लोगों में अपराध को लेकर अब डर लगने लगा है। शहर की सिविल सोसाइटी कानून व्यवस्था के मुद्दे पर आंदोलन करने की तैयारी में है।

केस-1

आदिवासी युवक को बेरहमी से पीटा

शहर के चुन्नीढाना क्षेत्र में बुधवार की देर शाम, एक 17 वर्षीय युवक विवेक पिता भ्रगवान मरकाम को फावड़े और पत्थरों से बेरहमी से मारपीट किये जाने का मामला सामने आया। बैतूलगंज पुलिस ने मौके पर पहुंचकर युवक को लहू-लुहान हालत में वहां से उठाकर अस्पताल में भर्ती कराया। बैतूल गंज थाना प्रभारी प्रशिक्षु डीएसपी शैफी हाशमी के अनुसार घायल विवेक उर्फ गुपचुप ने पुलिस को बताया था कि वह सागौन बाबा दरबार में पूजा कर रहा था, तभी अन्नू ठाकुर अपने 10-15 साथियों के साथ वहां पहुंचा और उसे जबरन उठाकर चुन्नीढाना ले गए और उसके साथ इस घटना को अंजाम दिया गया। डीएसपी के अनुसार विवेक और अन्नू नाम के युवक के बीच पुरानी रंजिश है। इसलिए उन्होंने इस घटना को अंजाम दिया है। घायल विवेक उर्फ गुपचुप मरकाम के खिलाफ अन्नू ठाकुर पर जानलेवा हमला करने सहित हत्या का एक मामला भी दर्ज है। विवेक ने तहसीलदार को मरणासन्न बयान दर्ज किये थे जिसमें उसने आरोपियों के नाम बताए थे।

शव लेकर कलेक्ट्रेट पहुंचे जयस कार्यकर्ता...

वहीं आदिवासी युवक की मौत से आदिवासी संगठन जयस के पदाधिकारी और बड़ी संख्या में कार्यकर्ता जिला अस्पताल पहुच गए। आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी और कड़ी कार्यवाही की मांग को लेकर जयस कार्यकर्ता शव को लेकर कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंच गए। जहां आदिवासी समुदाय की सुरक्षा को लेकर जबरदस्त प्रदर्शन भी किया गया। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए मोके पर भारी पुलिस बल तैनात किया गया। गंज पुलिस ने सात नामजद सहित अन्य आरोपियों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया है।

मारपीट के आरोपी ने प्रोफेसर पर किया था हमला

14 जून 2024 को अन्नू उर्फ अनिकेत अपने 5 अन्य साथियों के साथ बैतूल के जेएच कॉलेज पहुंचा था। वहां कॉलेज प्रोफेसर नीरज धाकड़ के साथ अनिकेत और उनके साथियों का विवाद हो गया था। इस घटना के बाद प्रोफेसर के साथ अनिकेत और उसके साथियों ने आंखों में मिर्च डाली और डंडे से मारपीट की, जिसके चलते उन्हें गंभीर चोट आई है। पूरे मामले में बैतूल प्रशासन ने अन्नू ठाकुर पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून एनएसए के तहत कार्रवाई की थीं।

केस-2

स्वदेशी मेले में हुई थी चाकूबाजी

स्वदेशी मेले में 13 दिसंबर की रात युवक पर चाकू से हमला कर उसे गंभीर रूप से घायल किया गया था। पुलिस ने मामले में त्वरित कार्रवाई कर आरोपियों को हिरासत में ले लिया है। फरियादी कृष्णा आर्य ने गंज थाने में दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि उनका पुत्र भूषण आर्य अपने दोस्तों दमन महाजन और भानू उर्फ आयुष आर्य के साथ पुलिस ग्राउंड में लगे स्वदेशी मेले में घूमने गया था। इसी दौरान बलून की दुकान के पास दीपक और कुलदीप नामक युवकों ने भूषण को अकेले में बात करने के बहाने बुलाया। आरोपी भूषण को झूले के पीछे ले गए, जहां पहले गाली-गलौज और धक्का-मुक्की की। विरोध करने पर दीपक ने उसके साथ मारपीट की, जबकि कुलदीप ने जेब से चाकू निकालकर भूषण की पीठ के बाईं ओर कमर में वार कर दिया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया था। हालांकि इस मामले में पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए एक नाबालिग सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

लाड़ली बहनों को कथित धमकी के विरोध में महिला कांग्रेस का उग्र प्रदर्शन, मंत्री विजय शाह का फूंका पुतला

बैतूल। लाडली बहना योजना को लेकर भाजपा सरकार के मंत्री विजय शाह द्वारा दी गई कथित टिप्पणी और धमकी के विरोध में गुरुवार 18 दिसंबर को बैतूल में महिला कांग्रेस ने जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदेश महिला कांग्रेस के आह्वान पर आयोजित इस प्रदर्शन में बड़ी संख्या में महिला कांग्रेस की पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल हुईं। प्रदर्शन के माध्यम से महिलाओं ने सरकार को यह स्पष्ट संदेश दिया कि महिलाओं के सम्मान और अधिकारों के साथ किसी भी तरह का समझौता स्वीकार नहीं किया जाएगा। मध्यप्रदेश महिला कांग्रेस के निर्देश पर शहर महिला कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पा पंद्राम के नेतृत्व में महिला कांग्रेस कार्यकर्ता जिला कांग्रेस

कार्यालय में एकत्रित हुईं। यहां से नारेबाजी करते हुए सभी गंज स्थित कांतिशिवा चौक पहुंचीं, जहां भाजपा सरकार के मंत्री विजय शाह का पुतला दहन कर विरोध दर्ज कराया गया। इस दौरान विजय शाह मुर्दाबाद, तानाशाही नहीं चलेगी और महिलाओं के सम्मान में कांग्रेस मैदान में जैसे नारे लगाए गए। महिला कांग्रेस ने आरोप लगाया कि मंत्री विजय शाह ने कथित तौर पर यह बयान दिया है कि जो लाडली बहनें मुख्यमंत्री का सम्मान नहीं करेंगी, उनकी पात्रता की जांच कराई जाएगी और सहायता राशि बढ़ाने पर रोक लगा दी जाएगी। महिला कांग्रेस का कहना है कि यह बयान महिलाओं को डराने और योजना का राजनीतिक दुरुपयोग करने का प्रयास है, जो लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है।प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस नेत्रियों ने स्पष्ट किया कि लाडली बहना योजना महिलाओं का संवैधानिक और सामाजिक अधिकार है, इसे किसी भी तरह से राजनीतिक दबाव या धमकी का माध्यम नहीं बनाया जा सकता। महिला नेताओं ने कहा कि इस तरह के बयान महिलाओं का अपमान हैं और सरकार की महिला विरोधी सोच को उजागर करते हैं।

भूमि पूजन के साथ हिन्दू सम्मेलन की तैयारियां शुरू

बैतूल। बैतूल के बस्ती (सदर) ने हिन्दू सम्मेलन की तैयारी गुरूवार को भूमि पूजन के साथ की। हिन्दू समिति के संयोजक सतीश बड़ोनिया ने बताया 8 जनवरी सदर संजीवनी अस्पताल के सामने मैदान में आयोजित किए जाने वाले हिन्दु सम्मलेन की तैयारियों को लेकर विधिवत भूमिपूजन किया गया। इस अवसर पर इसमें हिन्दू समिति के संयोजक सतीश बड़ोनया, सह संयोजक विष्णु सरवैया, रविन्द्र यादव, कोषाध्यक्ष रामराव महाले, मातृशक्ति संयोजिका प्रमिला सिमैय्या, गायत्री परिवार से उत्तम गायकवाड़, नगर पालिका अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर, सिद्धलता महाले, सहित सभी समाज के प्रतिनिधि मौजूद थे।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष, विधायक हेमंत खंडेलवाल के प्रयासों से बदलेगा बैतूल का खेल परिदृश्य

मुख्यमंत्री विशेष निधि से होगा निर्माण, नगरपालिका ने जारी किए टेंडर

5 करोड़ की लागत से बनेगा राष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट स्टेडियम

बैतूल। आदिवासी बाहुल्य बैतूल जिले की खेल प्रतिभाओं को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने बड़ी सौगात दी है। श्री खंडेलवाल के विशेष प्रयासों से बैतूल के खेल परिदृश्य में बदलाव की शुरुआत हो गई है। श्री खंडेलवाल के प्रयासों से जिला मुख्यालय बैतूल में मुख्यमंत्री विशेष निधि से लगभग 5 करोड़ रुपए की लागत से राष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट स्टेडियम एवं 100 रनिंग मीटर के पांच लेन वाला सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक स्वीकृत हुआ है। क्रिकेट स्टेडियम एवं एथलेटिक ट्रैक निर्माण के लिए नगर पालिका बैतूल द्वारा टेंडर भी जारी किए जा चुके हैं। इनका निर्माण होने के बाद बैतूल जिले की खेल प्रतिभाओं को जिला मुख्यालय पर ही राष्ट्रीय स्तर की क्रिकेट एवं एथलेटिक्स खेलों के प्रशिक्षण की सुविधा मिलने के साथ ही बैतूल में राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता का आयोजन भी होगा। उल्लेखनीय है कि आदिवासी बाहुल्य बैतूल जिले की खेल प्रतिभाओं को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने के लिए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल द्वारा बैतूल में राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर के स्पोर्ट्स कांप्लेक्स के लिए विस्तृत कार्य योजना बनाई है। इसके पहले चरण में राष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट स्टेडियम एवं सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक का निर्माण होगा।

एक हजार दर्शकों की क्षमता का बनेगा सर्वसुविधायुक्त स्टेडियम- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल के विशेष प्रयासों से एस्टो टर्फ खेल मैदान के बाजू में उत्कृष्ट विद्यालय बैतूल की भूमि पर लगभग साढ़े चार करोड़ रुपए की लागत से राष्ट्रीय मापदंडों के स्तर के सर्व सुविधायुक्त क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण किया जाएगा। लगभग 1000 दर्शकों की क्षमता के सर्वसुविधायुक्त क्रिकेट स्टेडियम में प्रशासनिक सह पेवेलियन भवन, बाउंड्री वॉल, फेंसिंग रिटेनिंग वॉल, कल्वर्ट, एंट्री गेट, आरसीसी ड्रेनेज, शौचालय, रेस्ट रूम,आरसीसी रोड, पार्किंग एरिया, क्रिकेट फील्ड, इलेक्ट्रिफिकेशन, स्टेडियम सीटिंग चेयर सहित अन्य निर्माण कार्य एवं व्यवस्थाएं की जाएगी।

पुलिस ग्राउंड में बनेंगे पांच सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक - बैतूल जिले के छात्र-छात्राओं द्वारा आर्मी, पुलिस, फॉरेस्ट सहित अन्य विभागों में चयन के लिए की जाने वाली शारीरिक दक्षता परीक्षा की तैयारी को सुविधाजनक बनाने के लिए प्रदेश भाजपा अध्यक्ष,बैतूल विधायक श्री खंडेलवाल की पहल पर पुलिस परेड ग्राउंड बैतूल में लगभग 40 लख रुपए की लागत से 100-100 मीटर लंबाई के 5 लेन सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक का निर्माण किया जाएगा। राष्ट्रीय गुणवत्ता मानक के इस ट्रैक पर रनिंग कर छात्र - छात्राएं शारीरिक दक्षता परीक्षा की तैयारी कर सकेंगे। साथ ही एथलेटिक्स, रनिंग के खिलाड़ियों को बैतूल में ही राष्ट्रीय स्तर की सुविधा मिलेगी।

बैतूल को खेलों के हब के रूप में करेंगे विकसित - भाजपा प्रदेश अध्यक्ष, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि आदिवासी बाहुल्य बैतूल जिले में खेल प्रतिभाओं की कमी नहीं है। जरूरत है खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए सुविधाएं एवं उचित मंच उपलब्ध कराने की। श्री खंडेलवाल के मुताबिक बैतूल जिले की खेल प्रतिभाओं को राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने के लिए बैतूल को खेलों के हब रूप में विकसित कर खिलाड़ियों को स्थानीय स्तर पर राष्ट्रीय स्तर की खेल सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएगी।

हत्या के 4 आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में किया पेश

बैतूल। भैंसदेही पुलिस ने महज 6 घंटे में अंधे कत्ल का खुलासा करते हुए 4 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 16 दिसंबर को ललसू पिता नाहलू उईके (55)निवासी ग्राम घुघरी ने अपने पुत्र राजू उईके (30) की किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा गंभीर चोट पहुँचाकर हत्या किए जाने की रिपोर्ट दर्ज कराई गई। शिकायत पर पुलिस ने धारा 103(1) बीएनएस के अंतर्गत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना प्रारंभ की गई। विवेचना के दौरान तकनीकी साक्ष्य, मुखबिर सूचना एवं सघन पूछताछ के आधार पर यह तथ्य सामने आया कि मृतक राजू उईके की पूर्व पत्नी पूनम उईके ने अपने साथियों के साथ मिलकर हत्या की साजिश रची एवं घटना को अंजाम दिलवाया। पुलिस ने इस मामले में पूनम उईके, सोहेल पिता अब्दुल सलीम, निवासी बडनेरा, जिला अमरावती (महाराष्ट्र), शेख जशीम पिता शेख नजीर, निवासी बडनेरा, जिला अमरावती (महाराष्ट्र) और शेख फेजान पिता शेख नदीम, निवासी बडनेरा, जिला

अमरावती (महाराष्ट्र) को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। मृतक का पोस्टमार्टम सीएचसी भैंसदेही में कराया गया। इस संपूर्ण कार्रवाई में निरीक्षक राजेश सातनकर, उनि. आशीष कुमरे, उनि. रामप्रकाश कीर, उनि. प्रीति पाटिल, हेड कांस्टेबल परसराम, छोटेलाल, पंजाबरात परते, संतोष, आरक्षक नारायण, मनोज, सोनू, नरेंद्र, तनवीर, महिला आरक्षक जिया, चाँदनी की सराहनीय एवं महत्वपूर्ण भूमिका रही।

सिंहस्थ 2028 के पहले धार को रेल नेटवर्क से जोड़ने की मांग, प्रधानमंत्री और रेलमंत्री के नाम ज्ञापन कलेक्टर को सौंपा

छोटा उदयपुर -धार 43 किमी रेल मार्ग पूर्ण होने से तीर्थयात्रियों, आदिवासी अंचल को होगा बड़ा लाभ

धार। इंदौर दाहोद छोटा उदयपुर धार रेल लाओं महासमिति ने गुरूवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के नाम का ज्ञापन धार कलेक्टर के प्रतिनिधि आशीष राठौर को रेल लाओं महासमिति के केन्द्रीय अध्यक्ष पवन जैन गंगवाल ने सौपा। ज्ञापन में लिखा है कि मध्यप्रदेश के आदिवासी अंचल धार-झाबुआ-अलीराजपुर तथा गुजरात के दाहोद एवं छोटा उदयपुर क्षेत्र की जीवन रेखा मानी जाने वाली यह वर्षो पुरानी महत्वपूर्ण रेल परियोजना जन-जन की भावनाओं और आकांक्षाओं का प्रतीक है। यह केन्द्र सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में से एक है, इंदौर-दाहोद रेल परियोजना दाहोद से झाबुआ तक पूर्ण होने की स्थिति में है, इंदौर से टीही तक कार्य पूर्ण हो चुका है। पीथमपुर क्षेत्र में लगभग 3 किमी लंबी सुरंग का कार्य अंतिम चरण मे है तथा पीथमपुर से धार तक रेल पटरी बिछाने का कार्य प्रगतिरत है। धार में बन रहा रेलवे ब्रिज एवं स्टेशन का निर्माण कार्य अत्यंत धीमी गति से चल रहा है। कभी वर्ष 2024, फिर 2025 और अब 2026 तक धार तक रेल संचालन की तिथियॉ बताई जा रही है, जिससे क्षेत्र की जनता में असमंजस की स्थिती बनी हुई है। इंदौर दाहोद रेल यदि केवल धार तक ही रेल लाईन सीमित रहती है तो न तो जनता को अपेक्षित लाभ मिलेगा और न ही सरकार को राजस्व की प्राप्ति होगी। जबकि इंदौर-दाहोद रेल

परियोजना की कुल लंबाई लगभग 205 किमी है, जिसमें से केवल 125 किमी कार्य ही पूर्ण होने की स्थिति मे है, 80 किमी का खंड अभी भी अधुरा है धार से झाबुआ तक निर्माण कार्य प्रारंभ नहीं हुआ है।

इंदौर-दाहोद रेल परियोजनाओं का कार्य रतलाम रेल मंडल तथा छोटा उदयपुर-धार रेल परियोजना का कार्य बडोदरा रेल मंडल द्वारा किया जा रहा है, जिसकी कुल लंबाई 157 किमी थी बाद में इसे 145 किमी कर दी गई। छोटा उदयपुर से अलीराजपुर (जोबट) होते हुए डेकाकुंड तक रेल लाइन का कार्य पूर्ण हो चुका है। कांकडवा एवं टांडा क्षेत्र में लगभग 10 किमी तक पटरी बिछाने का कार्य प्रगति पर है, 102 किमी का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है किंतु टांडा रोड से तिरला (धार) तक 43 किमी रेल मार्ग का निर्माण कार्य अब तक प्रारंभ नही हो पाया है, आगामी रेल बजट से इस रेल परियोजना के लिए संपूर्ण आवश्यक राशि बजट में दे दी जाए। बजट में पर्याप्त आवंटन कर दिया जाता है तो निश्चित रूप से जिले के लोगो के लिए यह एक बडी सौगात होगी। इंदौर-दाहोद-छोटा उदयपुर-धार रेल लाओ महासमिति ने केन्द्र सरकार से आग्रह किया है कि छोटा उदयपुर धार रेल परियोजना जो टांडा रोड से तिरला धार तक 43 किमी रेल मार्ग का निर्माण प्राथमिकता के आधार पर राष्ट्रीय रेल विकास योजना में सम्मिलित कर पुरा किया जाये ताकि सिंहस्थ में आने वाले लाखो श्रद्धालुओं को इसका सीधा लाभ मिल सकेगा। महासमिति के केन्द्रीय अध्यक्ष पवन जैन ने बताया कि यह रेल परियोजना केवल एक परिवहन साधन नही बल्कि म.प्र. और गुजरात के आदिवासी अंचल की जीवन रेखा है वर्षो से लंबित यह परियोजना सिंहस्थ 2028 के पूर्व पुरी हो जाती है तो उज्जैन इंदौर धार झाबुआ अलीराजपुर दाहोद, छोटा उदयपुर बडौदा से जैसे क्षैत्रो के बीच आवागमन बेहतर सुगम हो जाएगे। इन्होने कहा कि वर्तमान में इंदौर-दाहोद रेल परियोजना का कार्य धार तक अधिकांश पुर्ण हो चुका है केवल 80 किमी निर्माण कार्य होना शेष है जबकि छोटा उदयपुर से अलिराजपुर की और से रेल लाईन का निर्माण कार्य अंतिम चरण मे है इसके बावजूद केवल टांडा रोड से तिरला धार तक 37 किमी का खण्ड अधुरा होने के कारण पुरी परियोजना का लाभ आम जनता को नहीं मिल पा रहा है। रेल विशेषज्ञो का मानना है कि इस रेल लाईन के पूर्ण होने से केवल धार्मिक पर्यटन ही नहीं बल्कि औद्योगिक और आर्थिक गतिविधियों को भी गति मिलेगी। पीथमपुर जैसे बड़े उद्योग क्षेत्र को गुजरात और मुंबई के बंदरगाहहो से सीधा रेल संपर्क मिलेगा जिससे भारी परिहवन की लागत में भारी कमी आयेगी।

ज्ञापन देते समय प्रवीण टाक, शांतिलाल शर्मा, कमल हारोड, प्रकाश सोलंकी, इन्दरसिहं ठाकुर, महेशचंद्र शर्मा, कन्हैयालाल चौहान, जयेश राठौर, अशोक मराठा, दीपक गेहलोद, अकील गेहलोद, गौरव बना, संतोष सोलंकी आदि उपस्थित थे।

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय धार में केन्द्रीय विद्यालय संगठन का स्थापना दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया

धार। पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय धार में केन्द्रीय विद्यालय संगठन का स्थापना दिवस हर्षोल्लास एवं गरिमामय वातावरण में मनाया गया। विद्यालय प्राचार्य नीरज अस्थाना ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि मेरी मारग्रेट फ्रांसिस, विशेष न्यायाधीश, जिला धार के कर-कमलों द्वारा वोकेशनल लैब के उद्घाटन के साथ हुआ। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में प्रदीप सोनी, न्यायाधीश एवं सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, धार उपस्थित रहे। अन्य गणमान्य अतिथियों में हेमन्त जैसवार (प्रबन्धक, केनेरा बैंक), सतीश ठाकुर (मुख्य एलएडीसी अधिवक्ता), रेखा वर्मा, संगीता तोमर, विवेक गौड़, दीपकुँवर चौहान तथा विद्यालय के पूर्व छात्र-छात्राएं शामिल थे। विद्यालय के प्राचार्य नीरज अस्थाना, कार्यक्रम प्रभारी दीपा मालवीय एवं मुख्याध्यापिका दीपशिखा कुमावत ने अतिथियों का बैज लगाकर एवं स्वागत उद्बोधन के माध्यम से अभिनन्दन किया।

इस अवसर पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा आकर्षक एवं मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए, जिनमें निपुण नृत्य,

'भारत का स्वर्णिम गौरव' समूह गीत तथा शिक्षण कार्यक्रमों पर आधारित नुक्कड़ नाटक विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे। मुख्य अतिथि द्वारा केवीएस हैकाथॉन 2025 (एआई विद्यासेतु 1.0) के ग्रैंड फ़िनाले हेतु चयनित टीम के सदस्यों एवं उनके मेंटर सत्येन्द्र कुमरावत को प्रमाणपत्र एवं पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया। विद्यालय की वर्षभर की गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर आधारित एक वीडियो भी प्रदर्शित किया गया, जिसे प्रजापति कैलाश रामहित के मार्गदर्शन में छात्रों द्वारा तैयार किया गया था। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के पूर्व छात्रों ने अपने विद्यालय जीवन के अनुभव साझा किए तथा अपने भविष्य निर्माण में विद्यालय एवं शिक्षकों की भूमिका के महत्व पर प्रकाश डाला। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के उपरान्त मुख्य अतिथि मेरी मारग्रेट फ्रांसिस, विशेष अतिथि प्रदीप सोनी एवं सतीश ठाकुर ने विद्यार्थियों को आशीर्वचन एवं प्रेरक मार्गदर्शन प्रदान किया। कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ शिक्षिका अर्चना शर्मा द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन विद्यालय शिक्षिका अंजली यादव ने किया।

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने सीएम हेल्पलाईन निराकरण में लापरवाही बरतने पर सात अधिकारियों को जारी किए नोटिस

रायसेन (निप्र)। कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित बैठक सह वीडियो कॉफ्रेंस में नवम्बर माह में प्राप्त सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण की विभागवार और अधिकारीवार विस्तृत समीक्षा की गई। उन्होंने जिला अधिकारियों, एसडीएम, तहसीलदार, जनपद सीईओ सहित अन्य अधिकारियों से लंबित शिकायतों का कारण जानते निर्देशों के उपरांत भी सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण में लापरवाही बरतने पर सात अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी किए हैं। साथ ही तीन अधिकारियों को पत्र जारी कर कार्यप्रणाली में सुधार लाते हुए शिकायतों को निराकृत करने के निर्देश दिए गए हैं। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा द्वारा सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण में लापरवाही बरतने पर जल संसाधन विभाग की कार्यपालन यंत्री श्रीमती प्रतिभा सिंह, सिविल सर्जन जिला अस्पताल डॉ यशपाल वाल्यान, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण विभाग की सहायक संचालक श्रीमती संगीता जायसवाल, गैरतगंज कृषि उपज मण्डी के सचिव श्री शिवनारायण वाडिया, सीएमओ मण्डीदीप डॉ प्रशांत कुमार जैन, जिला विपणन अधिकारी श्री कल्याण सिंह ठाकुर और नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा विभाग के डीआरईओ रायसेन श्री सत्येन्द्र साहू को कारण बताओ नोटिस जारी कर तीन दिवस में समक्ष में उपस्थित होकर उत्तर प्रस्तुत करने के आदेश दिए हैं। नियत अवधि में उत्तर प्रस्तुत नहीं करने की दशा में एक पक्षीय कार्यवाही की जाएगी। इनके अतिरिक्त कलेक्टर श्री विश्वकर्मा द्वारा योजना आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के सहायक सांख्यिकी अधिकारी श्री अशोक कुमार रिछारिया, सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के सहायक नियंत्रक परीक्षा श्री विनोद शर्मा तथा सेम ग्लोबल यूनिवर्सिटी भोपाल के रजिस्ट्रार श्री ललित अवस्थी को पत्र जारी कर सीएम हेल्पलाईन शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए निराकरण में तेजी लाने के निर्देश दिए हैं।

राज्यसभा में उठा इटारसी-नर्मदापुरम ओवरब्रिज का मुद्दा

इटारसी (निप्र)। राज्यसभा में मंगलवार को सांसद माया नारोलिया ने इटारसी-नर्मदापुरम रेलवे ओवरब्रिज की जर्जर हालत का मुद्दा उठाया। उन्होंने शून्य काल में कहा कि राष्ट्रीय राजमार्ग-46 पर बना यह पुल अब 'खतरे की घंटी' बन चुका है। सांसद ने बताया कि पुल की साइड वॉल्स पर गहरी दरारें हैं, कई जगहों से कंक्रीट की परतें झड़ चुकी हैं और लोहा तक खुल चुका है। हाल ही के निरीक्षण में इसकी स्थिति 'अत्यंत असुरक्षित' पाई गई।

संक्षिप्त समाचार

आवारा कुत्तों की नसबंदी अभियान

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशन में जिले में आवारा कुत्तों की नसबंदी हेतु अभियान संचालित किया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य आवारा कुत्तों की बढ़ती संख्या पर नियंत्रण करना, आमजन की सुरक्षा सुनिश्चित करना तथा पशु कल्याण को बढ़ावा देना है। अभियान के अंतर्गत नगर निकायों एवं संबंधित विभागों के समन्वय से आवारा कुत्तों को चिन्हित कर वैज्ञानिक एवं मानवीय तरीके से उनकी नसबंदी कराई जा रही है। नसबंदी उपरांत कुत्तों का टीकाकरण कर उन्हें पुनः उनके क्षेत्र में सुरक्षित छोड़ा जा रहा है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि अभियान सतत रूप से संचालित हो, नागरिकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो तथा पशुओं के साथ मानवीय व्यवहार सुनिश्चित किया जाए। आमजन से भी अपील की गई है कि वे अभियान में सहयोग करें और आवारा कुत्तों के संबंध में आवश्यक सूचना नगर निकाय को उपलब्ध कराएं।

खनिज के अवैध उत्खनन में शामिल जेसीबी व 2 ट्रेक्टर ट्रालियां जप्त

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन के निर्देशन में जिले में खनिज के अवैध उत्खनन व परिवहन के विरूद्ध कार्यवाही जारी है। मंगलवार को अनुविभागीय अधिकारी राजस्व टिमरनी श्री संजीव कुमार नागू ने अवैध उत्खनन के विरूद्ध छापामार कार्यवाही की। उन्होने राजस्व विभाग के दल के साथ रहटगांव अजनाल नदी से जेसीबी सहित 2 ट्रेक्टर ट्रालियां जप्त की। उन्होने बताया कि दोषियों के विरूद्ध नियमानुसार कार्यवाही प्रस्तावित की जा रही है।

मदिरा के अवैध विक्रय, परिवहन व संग्रहण के विरूद्ध 8 प्रकरण दर्ज

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन के निर्देशन व जिला आबकारी अधिकारी अधिकारी श्री सुनील भोजने के मार्गदर्शन में आबकारी विभाग के दल ने मदिरा के अवैध विक्रय, परिवहन व संग्रहण के विरूद्ध कार्यवाही की। जिला आबकारी अधिकारी श्री सुनील भोजने ने बताया कि आबकारी विभाग के दल ने सहायक जिला आबकारी अधिकारी श्री ए.एस. बघेल व श्री डी.एस. चौहान के नेतृत्व में सोमवार को हरदा के टंकी मोहल्ला व पीलियाखाल, नीमसराय, चौकड़ी, पाहनपाट, धनवाड़ा बारंगा, हिवाला में दबिश देकर कुल 17 लीटर हाथ भट्टी कच्ची महुआ शराब, 5 पाव देशी मदिरा प्लेन, 15 पाव देशी मसाला तथा 740 किलोग्राम महुआ लाहन जप्त कर मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 के तहत कुल 8 प्रकरण दर्ज किये। जप्त मुद्देमाल का अनुमानित बाजार मूल्य 79350 रूपये है।

जिला जेल के 174 बंदियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया

सीहोर (निप्र)। जेल परिसर में जिला चिकित्सालय द्वारा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के दौरान जेल में बंदियों का समग्र स्वास्थ्य परीक्षण कर आवश्यक उपचार एवं परामर्श प्रदान किया गया। स्वास्थ्य शिविर में 174 बंदियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। स्वास्थ्य शिविर के माध्यम से बंदियों को समय पर जांच एवं उपचार उपलब्ध कराते हुए उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया गया। स्वास्थ्य शिविर में जिला चिकित्सालय सीहोर से विभिन्न विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम उपस्थित रही। मेडिकल विशेषज्ञ द्वारा 20, अस्थि रोग विशेषज्ञ द्वारा 37, शल्य चिकित्सक द्वारा 19, मानसिक रोग विशेषज्ञ द्वारा 17, ई.एन.टी. रोग विशेषज्ञ द्वारा 15, नेत्र रोग विशेषज्ञ द्वारा 10, दन्त रोग विशेषज्ञ द्वारा 18, क्षय रोग विशेषज्ञ द्वारा 26, स्त्री रोग विशेषज्ञ द्वारा 10 तथा एच.आई.वी. से संबंधित 2 बंदियों सहित कुल 174 बंदियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। इस अवसर पर सिविल सर्जन डॉ. यू. के. श्रीवास्तव के नेतृत्व में जिला चिकित्सालय सीहोर की टीम उपस्थित रही। साथ ही जेल अधीक्षक सुश्री प्रतिभा पटेल, उप अधीक्षक श्री अक्षय कुमार सिंहोक्तके, जेल चिकित्सक श्रीमती दिशा चौहान उपस्थित रहे।

पी.एच.सी. सिद्दीकगंज व मैना को मिला राष्ट्रीय गुणवत्ता मानक प्रमाणन

सीहोर (निप्र)। सीहोर जिले के लिए स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि सामने आई है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सिद्दीकगंज एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मैना ने राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए मानक प्रमाणन प्राप्त किया है। जारी परिणामों के अनुसार प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सिद्दीकगंज ने 84.6 प्रतिशत तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मैना ने 85.4 प्रतिशत अंक अर्जित किए हैं। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला सीहोर डॉ. सुधीर कुमार डेहरिया के मार्गदर्शन में यह सफलता प्राप्त हुई, जिनके निर्देशन में एनक्वास की मानक तैयारियां जिला गुणवत्ता प्रबंधक डॉ. हर्षा एवं श्रीमती संजुलता भार्गव द्वारा की गईं। एनएचएसआरसी, नई दिल्ली की टीम के सदस्य डॉ. जतिन भट्ट एवं श्री बृजमोहन भट्ट द्वारा दिनांक 10 एवं 11 सितंबर 2025 को पी.एच.सी. सिद्दीकगंज तथा 12 एवं 13 सितंबर 2025 को पी.एच.सी. मैना का दो दिवसीय मूल्यांकन किया गया, जिसमें दोनों ही स्वास्थ्य संस्थानों को निर्धारित गुणवत्ता मापदण्डों के अनुरूप पाया गया।

सभी कार्य गुणवत्ता पूर्ण हो और मटेरियल क्वालिटी अच्छी हो का विशेष ध्यान रखें : कलेक्टर

समय सीमा में निर्माण कार्य पूरा नहीं करने वाले वेंडर पर पेनल्टी लगाएं

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता की अध्यक्षता में आज जिले की सभी नगर पालिकाओं व नगर परिषद में अमृत 2.0 योजना तहत क्रियान्वित कार्यों के सुव्यवस्थित और गुणवत्तापूर्ण कार्यों के क्रियान्वयन के लिए डीएलआरएमसी की बैठक की गई। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने बैठक में कहा कि अमृत 2.0 योजना अंतर्गत जिले के सभी नगरीय निकाय क्षेत्रों में संपादित किये जा रहे जलप्रदाय कार्य एवं वाटर बॉडी कार्य, सौंदर्यीकरण और पार्क निर्माण सहित अन्य निर्माण कार्यों के क्रियान्वयन के लिए तैयार की गई डिजाइन की डीपीआर का परीक्षण जरूर करें, संशोधन या त्रुटि है तो परिषद की बैठक आयोजित करने के उपरांत ही अवगत कराएं। सभी कार्य गुणवत्ता पूर्ण हो और मटेरियल क्वालिटी अच्छी हो का विशेष ध्यान रखें। उन्होंने सभी सीएमओ को निर्देशित किया कि इन सभी कार्यों की दिन प्रतिदिन मॉनिटरिंग की जाए और तैयार प्लान सभी परिषदों को भी दें। प्लान के हिसाब से ही सभी कार्य किए जाएं यदि किसी भी कार्य में विलंबता हो रही है तो संबंधित वेंडर के खिलाफ पेनाल्टी लगाने की कार्रवाई भी करें। कलेक्टर श्री गुप्ता ने जलकर वसूली कार्यों के संबंध में भी निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा है कि जिन भी उपभोक्ताओं को कनेक्शन देने की कार्रवाई की जाना है वह सड़क निर्माण कार्य के पहले वार्ड वार नागरिकों को सूचित कर किया जाए, ताकि सड़क निर्माण कार्य के पहले ही कनेक्शन का कार्य पूर्ण कर लिया जाए। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने बैठक में बासौदा सीएमओ के अनुपस्थित रहने पर जिला विकास शहरी अभिकरण को निर्देश दिए हैं कि सीएमओ को एससीएन जारी किया जाए और इसके लिए भोपाल प्रस्ताव भेजे जाने की कार्यवाही भी करें।

नगरीय क्षेत्र के इन विकास कार्यों की हुई समीक्षा

कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने बैठक में विदिशा नगर पालिका अंतर्गत अमृत 2.0 योजना अंतर्गत चार निर्माण कार्यों वाटर सप्लाई और वाटर बॉडी कार्य, नीमताल का जीर्णोद्धार, वाटर बॉडी कार्य, चोरघाट नाला निर्माण कार्य और सीवरेज नेटवर्क के संबंध में चर्चा कर इन सभी चारों कार्यों को समय सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं। इसके अलावा बासौदा नगर पालिका में पारासरी नदी का सौंदर्यीकरण, लक्ष्मीबाई पार्क क्लब पार्क का विकास कार्य, जलप्रदाय कार्य, सिरोंज नगर पालिका क्षेत्र में वाटर सप्लाई, वाटर बॉडी और पार्क निर्माण, कुरवाई नगर पालिका में वाटर बॉडी, रिजूवेशन, ग्रीन स्पेस डेवलपमेंट और जलप्रदाय, सिरोंज नगर पालिका क्षेत्र में वाटर सप्लाई, वाटर बॉडी और पार्क निर्माण, लटेरी नगर परिषद में जलप्रदाय, वाटर बॉडी, तालाब कार्य, पार्क निर्माण और शमशाबाद नगर परिषद में वाटर सप्लाई तालाब निर्माण और पार्क निर्माण कार्यों की समीक्षा की गई है। इस दौरान बैठक में उपस्थित सभी नगर पालिकाओं और नगर परिषद अध्यक्ष व उनके प्रतिनिधियों के सुझाव भी लिए गए हैं।

पीएम आवास योजना के कार्यों की भी समीक्षा

इस बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना प्रथम चरण और द्वितीय चरण तहत संपादित कार्यों की भी समीक्षा की गई है। इस दौरान प्रधानमंत्री आवास योजना 2.0 तहत क्रियान्वित कार्यों की समीक्षा के दौरान निर्देश दिए गए की पात्र हितग्राहियों को योजना का लाभ मिले, इसके लिए शासन की गाइडलाइन अनुसार योजना का क्रियान्वयन किया जाए। बैठक में अवगत कराया गया कि पीएम आवास योजना 2.0 तहत जिले की सभी नगर पालिकाओं व नगर परिषदों में कुल 10862 आवेदन प्राप्त हुए थे। जिनमें से 9386 का सर्वे उपरांत 2836 का पोर्टल अप्रूवल हुआ है। 2147 आवेदनों में जियोटेक करने की कार्यवाही संपादित की गई है। इसके अलावा पोर्टल पर रिजेक्ट आवेदनों की संख्या 512 है। इन सभी आवेदनों में से कुल 1635 आवेदन अनुमोदित हुए हैं। बैठक में अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती प्रीति राकेश शर्मा, गंजबासौदा नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती शशि अनिल यादव, सिरोंज नगर पालिका अध्यक्ष श्री मनमोहन साहू, कुरवाई नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती आयशा हसरुद्दीन खां, लटेरी नगर परिषद अध्यक्ष श्रीमती शैलेश भंडारी, शमशाबाद नगर परिषद अध्यक्ष श्रीमती भारती प्रदीप महेश्वरी सहित नगर पालिका सीएमओ मौजूद रहे।

विद्यार्थियों ने डॉ भीमराव अंबेडकर शासकीय महाविद्यालय का किया भ्रमण

बैतूल (निप्र)। कॉलेज चलो अभियान के अंतर्गत सांदीपनि उत्कृष्ट हायर सेकेंडरी स्कूल आमला के विद्यार्थियों ने मंगलवार को भीमराव अंबेडकर शासकीय महाविद्यालय आमला भ्रमण कर महाविद्यालय के समस्त विभागों, प्रयोगशाला एवं उपलब्ध संसाधनों से संबंधित जानकारी प्राप्त की। प्राचार्य प्रो.गुलाबराव डोंगरे ने महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक, ग्रंथालय अध्यक्ष, क्रीड़ा अधिकारी एवं कर्मचारियों का परिचय करवाते हुए कहा कि महाविद्यालयीन शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी नागरिक बनाने का है, जो राष्ट्र निर्माण में सहभागी हो। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए छात्र - छात्राओं का मार्गदर्शन किया। प्रो मुकेश इवने ने नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पाठ्यक्रम योजना पर प्रकाश डालते हुए छात्राओं को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया। प्रो.जगदीश उईके ने प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपना लक्ष्य निर्धारित करने एवं उन्हें प्राप्त करने के हरसंभव प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। ग्रंथालय अध्यक्ष श्री सतीष बागडे ने महाविद्यालय के ग्रन्थालय में उपलब्ध सुविधा एवं ई लाइब्रेरी की जानकारी प्रदान दी। क्रीड़ाधिकारी श्री दीपक हाथिया ने महाविद्यालय के क्रीड़ा से संबंधित जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन डॉ राजेंद्र गिरि गोस्वामी ने किया। इस अवसर पर सांदीपनि उत्कृष्ट हायर सेकेंडरी स्कूल आमला के वरिष्ठ शिक्षक श्री सतीष कुमार साहू, श्री बलीराम साहू, श्रीमती रंजीता बिहारे, श्री राजकुमार घोड़माडे, श्रीमती प्रियंका मोहबे, डॉ पंचम सिंह कवड़े, प्रो राजा अतुलकर, प्रो निधि द्विवेदी, डॉ उमेश डोंगरे, डॉ संजय भटकर, डॉ ज्योति दातीर, प्रो सारंग लाड़विकर, डॉ कल्पना बारस्कर, प्रो आशीष सोनी, प्रो अनीता मानकर, श्रीमती अंजीरा दावडे, श्रीमती राशि साहू,श्रीमती यश्वी कहार, श्रीमती मीनाक्षी भोपते, श्री जुबैर कुरैशी, श्री भूपेंद्र चौकिकर, श्री संजीत भारती, श्री हजारी लाल श्री महेंद्र सिंगड़े सहित सांदीपनि उत्कृष्ट हायर सेकेंडरी स्कूल आमला की 12वीं कक्षा के छात्र- छात्राएं उपस्थित रहे।

प्राकृतिक खेती को जन-आंदोलन का रूप देने में कृषि सखियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है: जिला पंचायत सीईओ

सीहोर (निप्र)। जिले में कृषि क्षेत्र को सशक्त बनाने एवं प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आर.ए.के. कृषि महाविद्यालय, सीहोर में कृषि सखी प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। पाँच दिवसीय यह प्रशिक्षण कार्यक्रम किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग एवं आर.ए.के. कृषि महाविद्यालय के संयुक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती सर्जना यादव, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत, सीहोर द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कृषि सखियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्राकृतिक खेती को जन-आंदोलन का रूप देने में कृषि सखियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कृषि सखियों से आह्वान किया कि वे ग्राम स्तर पर किसानों को प्राकृतिक एवं जैविक खेती के लाभों से अवगत कराएं तथा रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करें। साथ ही उन्होंने किसानों को अपने प्राकृतिक उत्पादों का स्थानीय बाजारों एवं जैविक हाटों के माध्यम से विपणन करने हेतु प्रेरित करने पर भी जोर दिया, जिससे उनकी आय में वृद्धि हो सके। महाविद्यालय के डीन डॉ. एम. यासीन ने प्रशिक्षणार्थी कृषि सखियों को प्राकृतिक खेती की वैज्ञानिक पद्धतियों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती भूमि की उर्वरता बनाए रखने के साथ-साथ जल संरक्षण, पर्यावरण संतुलन एवं मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने कृषि सखियों से प्रशिक्षण के दौरान सक्रिय सहभागिता एवं जिज्ञासाओं को खुलकर रखने का आग्रह किया। कार्यक्रम के दौरान श्री ए.के. उपाध्याय, उपसंचालक कृषि, सीहोर ने जैविक खेती से होने वाले लाभों, जैविक प्रमाणीकरण की प्रक्रिया एवं इसके माध्यम से बाजार में बेहतर मूल्य प्राप्त करने की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने रासायनिक उर्वरक यूरिया पर निर्भरता कम करने हेतु जैविक खादों एवं जैव उर्वरकों के उपयोग की जानकारी देते हुए राइजोबियम, एजोटोबैक्टर एवं पी.एस.बी. (फॉस्फेट सॉल्यूबिलाइजिंग बैक्टीरिया) के महत्व को समझाया। कार्यक्रम में डॉ. जी.एस. गाठिये, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं विभाग प्रमुख, शस्य विज्ञान ने मृदा स्वास्थ्य के महत्व पर जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जैविक कार्बन की मात्रा बढ़ने से मृदा संरचना सुदृढ़ होती है, जल धारण क्षमता में वृद्धि होती है तथा लाभदायक सूक्ष्म जीवों की सक्रियता बढ़ती है, जिससे सतत फसल उत्पादन संभव होता है। कार्यक्रम में डॉ. एस.पी. दत्ता, भूतपूर्व निदेशक, भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान द्वारा प्राकृतिक खेती की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती की अवधारणा पारंपरिक कृषि पद्धतियों से जुड़ी हुई है और वर्तमान समय में इन्हें पुनः अपनाने की नितांत आवश्यकता है।

सांसद ने लोकसभा में मांगी फोरलेन सड़क:बोले- नर्मदापुरम-टिमरनी और करेली रूट पर बढ़ रहे हादसे

बीमा विधेयक पर भी रखी बात

नर्मदापुरम (निप्र)। होशंगाबाद-नरसिंहपुर सांसद दर्शन सिंह चौधरी ने लोकसभा में एक बार फिर क्षेत्र का बड़ा मुद्दा उठाया है। सांसद ने नरसिंहपुर, गाडरवारा से नर्मदापुरम और नर्मदापुरम से टिमरनी तक हाईवे को फोरलेन करने की मांग की है। उन्होंने सदन में बताया कि वर्तमान में यह सड़क टू-लेन है, जिससे आए दिन हादसे हो रहे हैं।

सांसद ने कहा कि मेरे लोकसभा क्षेत्र में टिमरनी-नर्मदापुरम-पिपरिया-करेली मार्ग पर यातायात का दबाव काफी बढ़ गया है। सड़क संकरी होने के कारण दुर्घटनाएं बढ़ गई हैं। जन-सुविधा को ध्यान में रखते हुए नर्मदापुरम से गाडरवारा, करेली और नर्मदापुरम से टिमरनी मार्ग पर फोरलेन सड़क जल्द स्वीकृत की जाए।

बीमा बिल पर बोले- यह नारा नहीं, नीति है: मंगलवार को लोकसभा में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 'सबका बीमा सबकी सुरक्षा' (बीमा कानूनों में संशोधन) विधेयक-2025 पेश किया।

इस पर चर्चा करते हुए सांसद ने 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' श्लोक से अपनी बात शुरू की। उन्होंने कहा, 'यह विधेयक केवल एक नारा नहीं, बल्कि नीति है। आजादी के 75 साल बाद भी देश में एक ऐसा वर्ग है, जिसके पास बीमा नहीं है। वह बीमारी से डरता है और दुर्घटना में टूट जाता है।' उन्होंने पीएम मोदी के नेतृत्व के लिए आभार भी जताया।

सिवनी मालवा में कार अनियंत्रित होकर नहर में गिरी :झकलाय रोड पर बड़ा हादसा टला, चालक सुरक्षित

सिवनी मालवा (निप्र)। सिवनी मालवा के झकलाय रोड पर मंगलवार शाम एक बड़ा हादसा टल गया। शिवपुर की ओर जा रही एक कार मोड़ पर अनियंत्रित होकर सड़क किनारे नहर में जा गिरी। गनीमत रही कि इस दुर्घटना में कोई जनहानि नहीं हुई और कार में सवार युवक सुरक्षित बाहर निकल आया। प्रत्यक्षदर्शी गोलू पंचारिया के अनुसार, कार सिवनी मालवा से शिवपुर की ओर जा रही थी। झकलाय रोड पर नहर के मोड़ पर चालक का वाहन से नियंत्रण हट गया, जिससे कार सीधे नहर में जा गिरी। कार के नहर में गिरने से तेज आवाज हुई, जिसके बाद आसपास के लोग तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे। हादसे के समय कार आंशिक रूप से नहर में डूब गई थी। कार का अगला हिस्सा पानी में था, जबकि पिछला हिस्सा ऊपर दिखाई दे रहा था। स्थानीय लोगों ने बताया कि चालक ने सूझबूझ का परिचय देते हुए खुद ही कार का दरवाजा खोलकर बाहर निकलने में कामयाबी हासिल की। इसके बाद लोगों ने उसे सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। हादसे की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में राहगीर और स्थानीय लोग मौके पर जमा हो गए। बाद में कार को नहर से बाहर निकालने का कार्य शुरू किया गया। स्थानीय नागरिकों ने बताया कि झकलाय रोड पर नहर के पास सुरक्षा इंतजाम अपर्याप्त हैं। कई स्थानों पर रेलिंग या सुरक्षा दीवार न होने के कारण अक्सर हादसों की आशंका बनी रहती है। लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि नहर के किनारे सड़क पर उचित सुरक्षा उपाय किए जाएं ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

मुख्यमंत्री डॉ.यादव के बैतूल प्रस्तावित आगमन को लेकर स्वास्थ्य विभाग की बैठक आयोजित

पुलिस ग्राउंड बैतूल में लगेगा विशाल स्वास्थ्य शिविर, अलग-अलग विधा के 12 चिकित्सा विशेषज्ञ देंगे अपनी सेवाएं

बैतूल (निप्र)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय सभाकक्ष में सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक, समस्त जिला नोडल अधिकारी, कार्यक्रम अधिकारी कार्यालय में पदस्थ अधिकारी, कर्मचारियों की बैठक ली गई। बैठक में सीएमएचओ डॉ मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि 23 दिसम्बर 2025 को मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव का जिले में आगमन होगा। कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशों के परिपालन में पुलिस ग्राउंड बैतूल में विशाल स्वास्थ्य शिविर लगाया जाएगा, जिसमें अलग-अलग विधा के 12 चिकित्सा विशेषज्ञ अपनी सेवाएं देंगे। सीएमएचओ डॉ हुरमाड़े ने सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक को निर्देश दिए कि मुख्यमंत्री के आगमन के दिन जिला चिकित्सालय में अतिरिक्त चिकित्सा सेवाएं , ओटी की व्यवस्था, ट्रॉमा सेंटर में व्यवस्था, आईसीयू की व्यवस्था, पर्याप्त स्टाफ की व्यवस्था, आक्सीजन की उपलब्धता, दो रिजर्व प्रायवेट रूम की व्यवस्था एवं ब्लड की उपलब्धता रखना सुनिश्चित करें। आकस्मिक चिकित्सा व्यवस्था के लिए पांच एम्बुलेंस में मेडिकल स्पेशलिस्ट की ड्यूटी मय आवश्यक दवाईयों एवं उपकरणों सहित लगाए। कार्यालयीन कर्मचारियों को निर्देश दिए कि स्थापना शाखा, टीएल शाखा, पेंशन शाखा, जांच, शिकायत शाखाओं में पेंडिंग सभी शिकायतों का निराकरण कर ई-ऑफिस के माध्यम से कलेक्टर महोदय को जानकारी 16 दिसंबर 2025 की शाम तक अनिवार्य रूप से भेजना सुनिश्चित करें। उन्होंने सिकल सेल नोडल अधिकारी, एनसीडी नोडल अधिकारी, आयुष्मान नोडल अधिकारी एवं समस्त नोडल अधिकारियों को निर्देश दिए कि अपने-अपने कार्यक्रमों की प्रगति की जानकारी अनिवार्य रूप से प्रस्तुत करें। साथ ही उन्होंने नोडल अधिकारियों को अपने कार्यक्रम अंतर्गत नवीन नवाचार करने एवं प्रदर्शनी स्वास्थ्य शिविर स्थल में लगाने के निर्देश दिये। जिला आयुष चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिए कि शिविर स्थल पर आयुर्वेदिक चिकित्सा काउंटर लगाकर कर सेवाएं दें। क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत जांच एवं फुड बास्केट वितरण, सिकल सेल स्क्रीनिंग एवं एनसीडी कार्यक्रम के अंतर्गत सेवा देने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य शिविर में अलग-अलग मेडिसिन विशेषज्ञों, स्त्री रोग विशेषज्ञ, दंत रोग चिकित्सक, नाक-कान गला रोग चिकित्सक, सामान्य मरीज, कैंसर रोग चिकित्सक, मानसिक रोग चिकित्सक, अस्थि रोग चिकित्सक एवं सामान्य मरीज के लिए पृथक काउंटर बनाए जाएंगे, जहां पर पर्याप्त स्टाफ की व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने जिला स्टोर प्रभारी को निर्देश दिए कि बीपी उपकरण, ग्लोको मीटर, हीमोग्लोबिन मीटर, शुगर स्ट्रिप्स और अन्य आवश्यक उपकरणों एवं पर्याप्त मात्रा में आवश्यक दवाईयों की उपलब्धता सुनिश्चित करें, उपलब्ध न होने पर मांग पत्र भेज कर मंगाएं। उन्होंने जिला 108 मैनेजर को निर्देश दिए कि दो एएलएस, तीन बीएलएस एम्बुलेंस लगाना सुनिश्चित करें।

सीएम ने मोबाईल फॉरेंसिक वैन को झंडी दिखाकर किया रवाना

मोबाईल फॉरेसिंक वैन से अपराध अनुसंधान तकनीकी होगी सुदृढ़: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश में अपराध अनुसंधान, साक्ष्य संकलन एवं वैज्ञानिक विवेचना की क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए तैयार की गई मोबाइल फॉरेंसिक वैनों को पुलिस मुख्यालय भोपाल से

- **तकनीकी क्षमता संवर्धन के लिए 36 करोड़ रुपए से अधिक की खरीदी गई फॉरेंसिक वैन**
- **डीजी-आईजी कांफ्रेंस में सीएम बोले-नक्सलवाद फिर से अंकुरित न हो ऐसी गतिविधियां संचालित करें**

झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने कहा कि मोबाईल फॉरेसिंक वैन मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में सीन ऑफ क्राइम के इनवेस्टीगेशन में अत्याधिक कारगर साबित होंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में पुलिस विभाग द्वारा की गई यह पहल फॉरेंसिक-आधारित, त्वरित और सटीक विवेचना को बढ़ावा देगी, जिससे अपराधों के शीघ्र खुलासे, दोषसिद्धि दर में वृद्धि और नागरिकों में सुरक्षा का भरोसा और सुदृढ़ होगा।

मध्यप्रदेश पुलिस को कुल 57 मोबाईल फॉरेंसिक वैन उपलब्ध कराई जा रही हैं। इनकी लागत 36 करोड़ 94 लाख 17 हजार 969 रुपए है। राशि केंद्र सरकार द्वारा प्रदाय की गई है। इनमें से 14 मोबाईल फॉरेंसिक वैन 16 दिसंबर 2025 को प्राप्त हुई है, जिन्हें रवाना किया गया है। शेष मोबाईल फॉरेसिंक वैन भी शीघ्र ही जिलों को उपलब्ध कराई जाएंगी।

मोबाईल फॉरेंसिक वैन अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित हैं, जिनमें स्टीरियो माइक्रोस्कोप, वेइंग बैलेंस, डीएसएलआर कैमरा, मिनी फ्रिज, एलईडी टीवी स्क्रीन, थर्मल प्रिंटर, बॉडी-वॉर्न कैमरा सहित आवश्यक उपकरण शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, वैनों में जांच किट, अपराध स्थल सुरक्षा किट, फिंगर प्रिंट, रक्त व बाल पहचान, हाई-इंटेंसिटी फॉरेंसिक लाइट सोर्स, पैर व टायर निशान, आगजनी, साक्ष्य पैकिंग, बुलेट होल, गनशॉट अवशेष, नशीले पदार्थ, विस्फोटक पहचान तथा डीएनए कलेक्शन एवं चेन ऑफ कस्टडी से संबंधित किट भी उपलब्ध हैं।

विधानसभा में सीएम मोहन यादव के 5 बड़े ऐलान

किसानों को खाद की होम डिलीवरी हर जिले में मेडिकल कॉलेज

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने राज्य विधानसभा में कई बड़ी घोषणाएं की हैं। यह घोषणा उन्होंने बुधवार को देर रात तक चले विधानसभा के विशेष एक दिवसीय सत्र में की। यह सत्र एमपी असेंबली के पहले सत्र की 70वीं वर्षगांठ मनाने के लिए आयोजित किया गया था और यह बुधवार को सुबह 11 बजे से रात 11.20 बजे तक चला। कुल 12 घंटे चले इस सत्र में कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए।

सरकार किसानों के लिए खाद की होम डिलीवरी की व्यवस्था शुरू करने की योजना बना रही है। मुख्यमंत्री यादव ने बताया कि खाद की मांग का पता लगाने के लिए सैटेलाइट-आधारित सर्वे किया जाएगा। इसके आधार पर किसानों के घर तक खाद पहुंचाई जाएगी। उन्होंने यह भी बताया कि राज्य के सभी 55 जिलों में मेडिकल कॉलेज खोले जाएंगे। हर डिवीजन लेवल पर एक चिड़ियाघर और पशु बचाव केंद्र भी स्थापित किए जाएंगे। इसके अलावा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान मिलकर एक चीता कॉरिडोर विकसित करेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार हर विधानसभा क्षेत्र में एक हेलीपैड बनाने पर काम कर रही है।

राज्य का बजट बढ़ाने का ऐलान- उन्होंने यह भी बताया कि एमपी का राज्य बजट 2028 तक मौजूदा 4.21 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 7.28 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो जाएगा। नक्सलवाद के मुद्दे पर बात करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि 11 दिसंबर से मध्य प्रदेश नक्सलवाद मुक्त हो गया है। विधानसभा का यह विशेष सत्र कुल 12 घंटे तक चला ।

कूनो में फिर गूंजेगी चीतों की आवाज

बोत्सवाना से आ रहे हैं 8 नए मेहमान, सर्वे के लिए आई टीम ने दी हरी झंडी

श्योपुर (नप्र)। बोत्सवाना से चीतों को भारत लाने की तैयारी जोरों पर है। इसके लिए बोत्सवाना से तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने मध्य प्रदेश के कूनो नेशनल पार्क का दौरा किया। यह प्रतिनिधिमंडल प्रोजेक्ट चीता के अगले चरण की तैयारियों का जायजा लेने आया था। इस दल में पशु चिकित्सक, सुरक्षा अधिकारी और जीवविज्ञानी शामिल थे। वे कूनो में जानवरों के रहने की जगह, पशु चिकित्सा सुविधाओं और सुरक्षा व्यवस्थाओं को देख रहे थे।

आठ चीतों को लाने की तैयारी

यह प्रतिनिधिमंडल बोत्सवाना के वन्यजीव और राष्ट्रीय उद्यान विभाग का हिस्सा है। वे भारत में चीतों को लाने की योजना पर कामकर रहे हैं। अधिकारियों के अनुसार, जनवरी के पहले या दूसरे हफ्ते में बोत्सवाना से आठ चीतों को कूनो लाया जा सकता है। इनमें दो वयस्क मादा चीते और उनके छह शावक होंगे।

पहले रखा जाएगा आइसोलेट

कूनो पहुंचने के बाद, इन चीतों को नियमों के अनुसार कुछ समय के लिए अलग रखा जाएगा। इसके बाद उन्हें धीरे-धीरे पार्क में छोड़ा जाएगा। चीतों को कब तक अलग रखा जाएगा और कब छोड़ा जाएगा, यह राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के दिशानिर्देशों और पशु चिकित्सा जांच के बाद तय होगा।

चीतों की आबादी बढ़ाने के प्रयास

कूनो नेशनल पार्क भारत में चीतों को फिर से बसाने के कार्यक्रम का मुख्य केंद्र है। इससे पहले यहां नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से भी चीते लाए जा चुके हैं। अब बोत्सवाना से चीतों को लाना इस परियोजना की एक लंबी योजना का हिस्सा है, ताकि जंगली इलाकों में चीतों की आबादी बढ़ाई जा सके।

युवती 9 दिन लिव-इन में रही, पत्नी-बच्चे लौटे तो खुला राज, रेप का केस दर्ज

जिस प्रेमी के लिए घर छोड़ा, वो शादीशुदा निकला

खंडवा (नप्र)। खंडवा में शादी का झांसा देकर एक युवती से दुष्कर्म का मामला सामने आया है। युवती ने जिस प्रेमी के लिए अपना घर छोड़ दिया, वह शादीशुदा निकला।

मामले का खुलासा तब हुआ, जब युवती अपने प्रेमी के साथ उसी के घर में लिव-इन रिलेशनशिप में रहने लगी। इसी दौरान मायके गई प्रेमी की पत्नी वापस लौट आई। वह अपने साथ एक बच्चे को भी लाई, जो प्रेमी का ही था।

प्रेमी के घर में उसकी पत्नी और बच्चे को देखकर युवती ने विरोध जताया। इस पर प्रेमी ने कबूल किया कि उसने प्रेम जाल में फंसाने के लिए झूठ बोला था कि वह अविवाहित है।

युवती ने जब कहा कि वह एक शादीशुदा शख्स के साथ शादी नहीं कर सकती, तो प्रेमी ने कहा- मुझे तुमसे कोई परेशानी नहीं है, लेकिन मैं दूसरी शादी के लिए अपनी पहली पत्नी और बच्चे को नहीं छोड़ सकता।

बस में बैठाकर वापस भेजा, घर आकर बताई आपबीती- इस बात को लेकर युवती और उसके प्रेमी के बीच काफी कहासुनी हुई। बाद में प्रेमी ने उसे खंडवा जाने वाली बस में बैठा दिया। युवती अपने घर लौटी और परिजनों को पूरी आपबीती सुनाई। इसके बाद थाने में शिकायत दर्ज कराई गई।

मामला थाना छैगांवमाखन क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली देशगांव चौकी के एक आदिवासी बहुल गांव का है। आदिवासी समाज की 28 वर्षीय युवती ने केस दर्ज कराया है।

पुलिस के मुताबिक, पीड़िता 12वीं तक पढ़ी-लिखी है और एक संपन्न परिवार से आती है। वह बुरहानपुर जिले के खकनार निवासी लवलेश पिता सुनील महाजन के झांसे में आ गई थी। लवलेश ने उसे भरोसा दिलाया था कि वह उसी से शादी करेगा और इसी झांसे में रखकर शारीरिक संबंध बनाता रहा।

आरोपी बैंक में एजेंट, 3 साल पहले की थी लव मैरिज- पीड़िता ने बताया कि आरोपी लवलेश महाजन ने खुद को एक प्राइवेट बैंक में नौकरी करना बताया था। वह बैंक में एजेंट का काम करता है। लवलेश शादीशुदा था, इस बात से युवती बिल्कुल अनजान थी। बाद में पता चला कि उसने एक आदिवासी युवती से ही लव मैरिज की है, जो उसकी दूर की रिश्तेदार है। लवलेश की शादी को तीन साल हो चुके हैं और उसका एक बेटा भी है।

ननिहाल में हुई थी दोस्ती- युवती ने बताया कि खंडवा जिले के पिपलोद थाना क्षेत्र के एक गांव में उसका ननिहाल है। करीब 7-8 महीने पहले वहां मामा के घर शादी का एक कार्यक्रम था, जहां लवलेश से उसकी मुलाकात हुई थी। लवलेश ओबीसी समाज से आता है, इसलिए युवती को यह महसूस नहीं हुआ कि वह उस कार्यक्रम में बतौर रिश्तेदार शामिल हुआ था। बातचीत के दौरान दोनों ने नंबर एक्सचेंज किए और बातें होने लगीं। दोनों में प्यार हुआ और बात शादी तक पहुंच गई।

9 दिन साथ रही, पत्नी के आने पर लौटी- युवती ने बताया कि घटना 7 दिसंबर की है। घर से भागने की प्लानिंग पहले से थी। शादी लवलेश से होनी थी, इसलिए वह लगातार संपर्क में थी। उस रात 10:30 बजे लवलेश उसके गांव आया। वह घर से निकली और बाइक पर बैठकर उसके साथ बुरहानपुर चली गई।

वहां वह 17 दिसंबर की दोपहर 12 बजे तक रही। जब उसकी पत्नी और बच्चा मायके से वापस आए, तब राज खुला कि वह शादीशुदा है। 9 दिन साथ रहने के बाद वह सीधे अपने घर आ गई और उसी दिन थाने जाकर एफआईआर कराई।

दिल्ली से एमपी आने वाली ट्रेनें कोहरे के चलते लेट

रीवा-सागर में विजिबिलिटी 1-2 किमी; इंदौर और राजगढ़ में पारा 5 डिग्री से नीचे

भोपाल (नप्र)। दिल्ली से मध्यप्रदेश आने वाली ट्रेनें कोहरे की वजह से 30 मिनट से 8 घंटे तक लेट चल रही हैं। गुरुवार को पंजाब मेल, शताब्दी, झेलम, सचखंड, मालवा, छत्तीसगढ़, कोल्हापुर एसएफ, मंगला लक्षद्वीप समेत कई ट्रेनें अपने तय समय से देरी से चल रही हैं। ये सभी ट्रेनें भोपाल आती हैं। इसके अलावा इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन स्टेशनों पर आने वाली गाड़ियां भी डिले हैं।

दूसरी ओर गुरुवार सुबह भोपाल, ग्वालियर-उज्जैन समेत 12 जिलों में कोहरा छाया रहा। रीवा और सागर में विजिबिलिटी 1 से 2 किलोमीटर दर्ज की गई। भोपाल, गुना, ग्वालियर, इंदौर,

राजगढ़, रतलाम, उज्जैन खजुराहो, मंडला में विजिबिलिटी 2 से 4 किमी तक रही। उत्तरी हिस्से के अन्य जिलों में भी कोहरे का असर देखा गया। मौसम विभाग के अनुसार, रात में कई शहरों में पारे में गिरावट का दौर जारी रहा। इंदौर प्रदेश में सबसे ठंडा रहा। 5 बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 5.4 डिग्री, इंदौर में 4.5 डिग्री, ग्वालियर में 9.3 डिग्री, उज्जैन में 7.3 डिग्री और जबलपुर में पारा 9.2 डिग्री रहा।

शाजापुर में 50 मीटर बाद कुछ नहीं दिखा, भोपाल-ग्वालियर में भी कोहरा- भोपाल, ग्वालियर समेत 22 जिलों में कोहरा छाया रहा। कोहरे की वजह से ट्रेनें-फ्लाइट भी डिले हुईं। भोपाल, ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा, मऊगंज, मैहर, सीधी, सिंगरौली, शहडोल, उमरिया, कटनी, जबलपुर, दमोह, सागर और विदिशा में घना कोहरा छाया रहा।

ग्वालियर, नर्मदापुरम, उज्जैन, मंडला, रीवा, सतना में 1 से 2 किलोमीटर तक विजिबिलिटी रही। वहीं, भोपाल, जबलपुर, खजुराहो, नौगांव, मलाजखंड, दतिया, गुना, इंदौर, रतलाम में 2 किमी के बाद कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। कोहरा छाने के दौरान वाहनों को सावधानी से चलाने की समझाइश भी दी गई। शाजापुर में इतना कोहरा था कि 50 मीटर के बाद कुछ भी नहीं दिख रहा था।

मलाइका अरोड़ा की मौजूदगी ने बढ़ाई शो की रौनक, बिजनेस एक्सीलेंस अवॉर्ड से भी कई हस्तियां सम्मानित

फैशन शो में रैंप पर बिखरा ग्लैमर

भोपाल (नप्र)। शहर के एक निजी होटल में आयोजित फैशन शो शहरवासियों के लिए यादगार बन गया। रैंप पर फैशन डिजाइनरों की रचनात्मक प्रस्तुति, मॉडलों के आकर्षक अंदाज और अभिनेत्री मलाइका अरोड़ा की मौजूदगी ने कार्यक्रम को खास बना दिया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में फैशन, व्यवसाय और रचनात्मक क्षेत्र से जुड़े लोग मौजूद रहे।

शो के दौरान डिजाइनर प्रवीण श्रीवास्तव, नेहा श्रीवास्तव और जसलीन पिंकी के परिधानों को दर्शकों से खूब सराहना मिली। पहले चरण में मॉडलों ने ड्रेप्ड कट परिधान, अंगरखा कुर्ते, क्रॉप टॉप के साथ स्कर्ट, फ्लेयर्ड गाउन और इवनिंग बॉल गाउन पहनकर इंडो-वेस्टर्न कलेक्शन की शानदार झलक पेश की। रैंप पर रंग, डिजाइन और कट्स का संतुलन दर्शकों को खूब भाया।

पारंपरिक परिधानों का प्रदर्शन- दूसरे चरण में पारंपरिक परिधानों का प्रदर्शन किया गया, जिसमें हैंडवर्क लहंगे और शेरवानी कलेक्शन शामिल रहे। कढ़ाई और बारीक कारीगरी वाले इन परिधानों ने रैंप पर पारंपरिक शान को जीवंत कर दिया। इसी कार्यक्रम के दौरान बिजनेस एक्सीलेंस अवॉर्ड 2025 का आयोजन भी किया गया, जिसमें विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यवसायियों, पेशेवरों और रचनात्मक क्षेत्र से जुड़े लोगों को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में शहर में कैफे अमांते को उत्कृष्ट कार्यशैली, नवाचार और उच्च गुणवत्ता की सेवाओं के लिए बिजनेस एक्सीलेंस अवॉर्ड 2025 से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में अभिनेत्री मलाइका अरोड़ा ने अपनी पुस्तक 'इट्स ईजी टू बी हेल्दी' को लेकर भी बातचीत की। उन्होंने बताया कि लोग अक्सर उनसे उनकी फिटनेस को लेकर सवाल करते हैं। इसी से उन्हें यह समझ आया कि फिट रहना कोई जादू नहीं, बल्कि अनुशासन और निरंतर मेहनत का नतीजा है। यही सोच उनकी किताब की प्रेरणा बनी।

राजधानी में कल से दौड़ेगी मेट्रो

केंद्रीय मंत्री खट्टर उद्घाटन करेंगे, 21 से सभी सफर कर सकेंगे, चार स्टेशन तक किराया 30 रुपए

भोपाल (नप्र)। भोपाल में मेट्रो ट्रेन का उद्घाटन 20 दिसंबर की शाम को होगा। मिंटो हॉल में आयोजित उद्घाटन समारोह में केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, सीएम मोहन यादव समेत जानी-मानी हस्तियां शामिल होंगी। केंद्रीय मंत्री खट्टर और सीएम यादव सुभाष नगर स्टेशन से मेट्रो में बैठेंगे और एम्स तक जाएंगे। यहां प्रेस कॉन्फ्रेंस होगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का रिकॉर्डेड वीडियो मैसेज जारी किया जाएगा।

21 दिसंबर से आम लोग मेट्रो में सफर कर सकेंगे। इसका संचालन सुबह 9 बजे से शाम 7 बजे तक होगा। रोज 17 ट्रिप चलेंगी। शुरुआती चरण में मेट्रो एम्स स्टेशन से सुभाष नगर स्टेशन तक जाएगी। न्यूनतम किराया 20 रुपए और अधिकतम किराया 70 रुपए तय किया गया है।

मेट्रो प्रबंधन ने साफ किया है कि फ्री किराए वाला इंदौर मॉडल, भोपाल में लागू नहीं किया जाएगा। यात्रियों को किसी भी तरह की मुफ्त यात्रा या किराए में छूट नहीं मिलेगी।

6.22 किमी की दूरी तय करेगी मेट्रो

भोपाल मेट्रो ऑरेंज लाइन के पहले चरण में सुभाष नगर से एम्स तक 6.22 किलोमीटर की दूरी तय करेगी। दूसरा चरण सुभाष नगर से करोंद तक प्रस्तावित है, जिसका निर्माण कार्य अगले दो से तीन साल में पूरा होने की संभावना है।

प्रायोरिटी कॉरिडोर के बाद यह होगा

भोपाल में सुभाष नगर से एम्स तक प्रायोरिटी कॉरिडोर है। इसमें कुल 8 स्टेशन बने हैं। सुभाष नगर मेट्रो स्टेशन के बाहर सड़क निर्माण किया गया। ऐसा ही डीबी मॉल, रानी कमलापति, एमपी नगर, केंद्रीय स्कूल, डीआरएम तिराहा, अलकापुरी और एम्स में भी बाकी बचे कामों पर फोकस रहा। यहां पर कमर्शियल रन पूरा होने के बाद पूरा फोकस ऑरेंज लाइन के दूसरे फेज के हिस्से सुभाष नगर से करोंद तक रहेगा। वहीं, ब्लू लाइन के लिए भदभदा से रत्नागिरी के बीच का काम भी तेजी से निपटाया जाएगा।

पिक एंड ड्रॉप की व्यवस्था ही रहेगी

मेट्रो स्टेशनों पर सिर्फ पिक एंड ड्रॉप की व्यवस्था ही रहेगी। यात्री किसी गाड़ी से उतर और चढ़ सकेगा, लेकिन अपने वाहन यहां खड़े नहीं कर सकेगा। सूत्रों के अनुसार, मेट्रो कॉर्पोरेशन स्टेशन के नीचे आउटलेट्स बनाएगा। ऐसे में स्टेशन के नीचे पार्किंग की व्यवस्था नहीं मिलेगी। इस मुद्दे पर मेट्रो अफसरों का कहना है कि पार्किंग के लिए व्यवस्था कर रहे हैं ताकि यात्रियों को परेशानी का सामना न करना पड़े।

चार स्टेशन के लिए किराया 30 रुपए होगा

भोपाल मेट्रो में पहले दो स्टेशनों तक सफर करने पर 20 रुपए देने होंगे। तीन से चार स्टेशनों के लिए किराया 30 रुपए, पांच से आठ स्टेशनों तक 40 रुपए लगेगा। पूरा कॉरिडोर चालू होने पर अधिकतम किराया 70 रुपए होगा।

30 से 80 किमी प्रति घंटा रहेगी मेट्रो की स्पीड

भोपाल के सुभाष नगर से एम्स तक मेट्रो कोच को ट्रैक पर दौड़ाकर ट्रायल रन किया जा रहा है। न्यूनतम स्पीड 30 और अधिकतम 80 किमी प्रतिघंटा रखी जा रही है। बीच-बीच में 100 से 120 किमी की रफ्तार से भी मेट्रो दौड़ाई जा रही है। भोपाल में एम्स, अलकापुरी, डीआरएम ऑफिस स्टेशन पर बचे काम किए जा रहे हैं।

ट्रेन की तर्ज पर मेट्रो में भी टिकट लेनी पड़ेगी

फिलहाल भोपाल मेट्रो में टिकट व्यवस्था पूरी तरह मैन्युअल रहेगी। यात्रियों को ट्रेन की तरह काउंटर से टिकट लेकर सफर करना होगा। ऑनलाइन या ऑटोमैटिक टिकटिंग सिस्टम अभी लागू नहीं किया जा रहा है। इंदौर मेट्रो में भी वर्तमान में यही व्यवस्था लागू है।